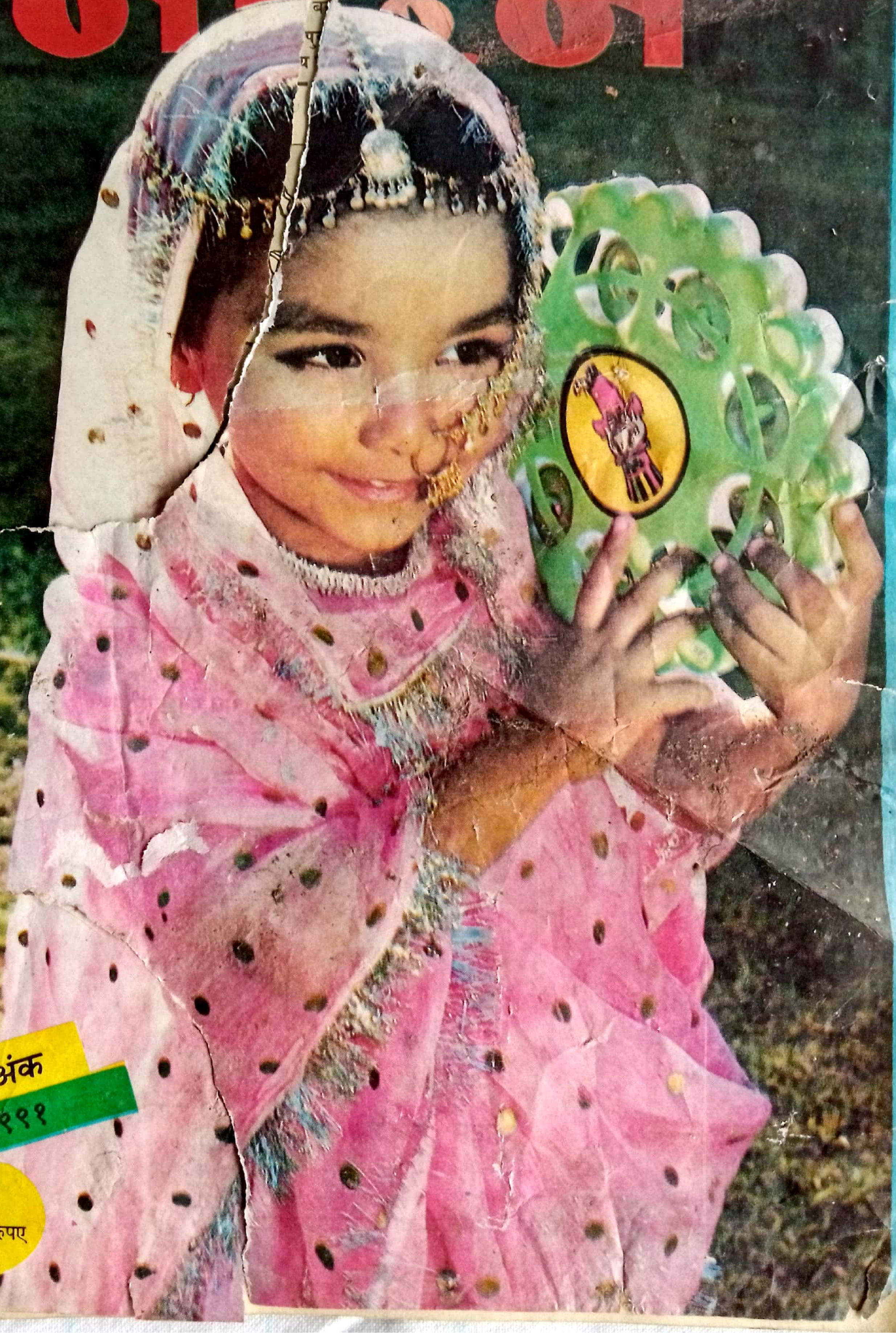
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

सैर-सपाटा अंक

जून १९९१

४ रुपए

डायमण्ड कॉमिक्स पेश करते हैं

"कार्टून शीर्षक प्रतियोगिता नं. 3"

नीचे बने कार्टून के लिए शीर्षक लिखिए और जीतिए आकर्षक पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार	: रु. 500/- (1)	तृतीय पुरस्कार	: रु. 100/- (1)
द्वितीय पुरस्कार	: रु. 250/- (1)	सान्तवना पुरस्कार	: रु. 30/- (50)

शीर्षक के लिए जगह



परिणाम के लिए सितम्बर, 1991 का अंक देखें।

नाम ____________________

पता ____________________

____________________ पिन कोड ____________

- अधिक से अधिक 10 शब्दों में दी गई जगह में शीर्षक लिखिए और अपना नाम व पता लिखकर डायमंड कामिक्स प्रा. लि., नई दिल्ली को भेजें।
- प्रवेश पत्र की अन्तिम तिथि 15 जून, 1991 है।
- प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार की राशि नकद में व सान्तवना पुरस्कार में डायमंड कामिक्स दी जायेगी।
- सम्पादक का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

नये डायमंड कामिक्स



नये डायमंड मिनी कामिक्स

राजन इकबाल और लुटेरा जलमानव

चिम्पू और हीरा चोर

मामा भांजा और लालची नाई

मोटू छोटू और इन्टरनेशनल भिखारी

डायमंड वीडियो फिल्म

डायमण्ड कामिक्स के जाने माने मशहूर पात्र पिंकी, बिल्लू, लम्बू मोटू, मोटू छोटू आदि को टी.वी. पर देखिए, 90 मिनट की वीडियो कैसेट में, जिसमें 22 मिनट की चार अलग-अलग फीचर फिल्म हैं।

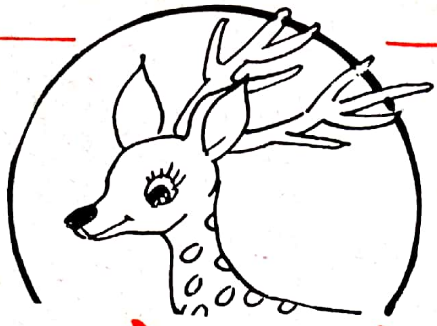


प्रत्येक 125/- रु.

25/- रु. एडवांस भेजें व 100/- रु. की वी.पी. छुड़ाकर घर बैठे वीडियो कैसेट प्राप्त करें और डाक व्यय के 15/- रु. बचाएं।

डायमण्ड इन्द्र वीडियो
257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006 फोन : 3266317

डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002



आओ बात करें

एक राजा थे अचलसेन । एक बार शिकार खेलने गए, तो दिन ढल गया, पर कुछ हाथ न आया । राजा थक गए, तो तम्बू में आराम करने लगे । तभी उनके लश्कर के दो आदमी एक मृग छौना लेकर हाजिर हुए ।

छौना आगे आया और राजा के तलवे चाटने लगा । राजा अचलसेन ने देखा कि उसकी आंखों में आंसू हैं । उन्होंने आदेश दिया —''इसे नरम-नरम दूब दी जाए । अगले दिन सवेरे राजधानी जाते समय इसे साथ ले जाया जाए ।''

मृग छौने को राजमहल में ही रखा गया । उसकी खूब खातिर होती । अच्छा से अच्छा खाने को दिया जाता । वह राजमहल में मनमाने ढंग से घूमता । हां, एक काम वह हमेशा किया करता—सवेरे ही राजा के शयन कक्ष में पहुंच जाता । सोते हुए राजा के पांवों पर से धीरे-से चादर खींचने लगता । फिर राजा के पांवों को चाटने लगता ।

अचलसेन जाग जाते । वह छौने पर हाथ फिराते । दासियां उसके लिए खीर, हलवा या ऐसी ही कोई चीज लेकर आतीं ।

समय बीतता गया । छौना बड़ा हो गया । बड़े-बड़े सींग निकल आए । पूरा हिरन बन गया । लेकिन राजा को वह अब भी जगाया करता । पर उसका स्वभाव उग्र होता गया । उसके सींग कई बार झंझट खड़ा कर देते । उसने कई कीमती कांच के बर्तनों को गिरा दिया । वे खील-खील होकर बिखर गए । पर राजा के प्रिय हिरन को कोई कुछ कहे, तो कैसे !

एक दिन वह हिरन रसोईघर में घुस गया । उसने कुछ खाया, कुछ खिंडाया । रसोइए को फिर से भोजन पकाना पड़ा । राजा को भोजन परोसने में देर हो गई । वह नाराज हुए, तो हिरन की करतूत उनके सामने बयान की गई ।

राजा ने तुरंत आदेश दिया कि इस उद्दंड हिरन को जंगल में छोड़ दिया जाए । पर उन्होंने उदारता भी बरती । उसके गले में एक हार पहना दिया । आदेश दिया कि इसे राजसी हिरन माना जाए । कोई भी मारे नहीं । हिरन जंगल में घूमता-फिरता । पर उसकी आदतें तो राजसी ठाट-बाट से बिगड़ी हुई थीं । वह अन्य हिरनों को तंग किया करता । अन्य पशुओं के छोटे-छोटे बच्चों के प्रति क्रूरता दिखाता । जंगल के हिरन ही नहीं, दूसरे जीव-जंतु भी उससे बहुत खीज उठे । एक दिन कुछ हिरनों ने मिलकर उसे घेर लिया । उसे ठेलते हुए ले चले और दलदल में धकेल दिया । इस बीच राजा का हार भी टूटकर बिखर गया ।

हिरन बहुत हाथ-पैर मारता रहा, पर बाहर न निकल सका । संयोग की बात, उस दिन अचलसेन उधर से गुजरे । रोते-मिमियाते हिरन की आवाज उन्होंने सुनी । जैसे-तैसे उन्होंने उसे बाहर निकलवाया । सेवकों ने कहा कि यह तो राजमहल वाला हिरन ही है । राजा बोले—''पर इसका हार कहां है ?''

हिरन की आंखों में आज फिर आंसू थे । धीरे-धीरे वह आगे आया और राजा के पांव चाटने लगा । खोजबीन करने पर राजा को सब पता चल गया । उन्होंने कहा कि वह इसे फिर से राजमहल ले जाएंगे । इस बार इसे खुले घूमने की छूट न देंगे, बल्कि राजसी उद्यान के बाड़े में रखेंगे ।

इस अंक में सैर-सपाटे पर कुछ सामग्री विशेष रूप से दी गई है । 'नंदन पाठक प्रतियोगिता' में उत्साह बेजोड़ रहा । अगले अंक में उसका परिणाम छपेगा । उससे अगले अंक यानी अगस्त अंक में सोलह पृष्ठ अधिक होंगे, जिनमें पुरस्कृत रचनाएं छपेंगी ।

—तुम्हारे भइया

नंदन

जून '९१

वर्ष: २७ अंक : ८

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुख पृष्ठ : भगवान दास रूपानी
एलबम: अनिल सक्सेना

सम्पादक
जयप्रकाश भारती



सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
मुख्य उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
वरिष्ठ उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा
उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार
चित्रकार : प्रशांत सेन

कहां गए पिता

—रामपाली भाटी

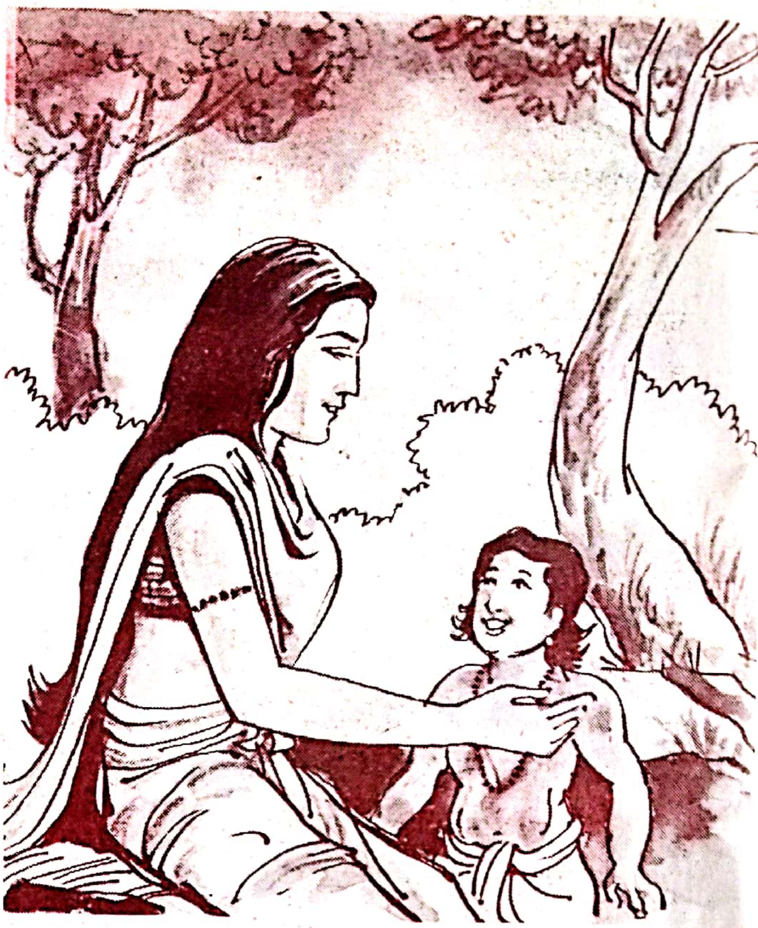
बचपन से ही टेढ़े-मेढ़े आठ अंगों के शरीर वाला बालक अष्टावक्र, अपने नाना उद्दालक मुनि के पास रहकर वेद पढ़ा करता था। वह पढ़ने में बहुत तेज था। दस वर्ष का होते-होते उसने शास्त्रों का अध्ययन कर लिया। छोटी आयु में ही वह तर्क शास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र का पंडित बन गया। उद्दालक मुनि का पुत्र श्वेतकेतु भी अष्टावक्र की ही आयु का था। दोनों मामा-भानजे,अष्टावक्र और श्वेतकेतु, साथ-साथ पढ़ते थे।

एक दिन अष्टावक्र ने अपनी माता सुजाता से पूछा—"मां, मुझे बताओ, मेरे पिता जी कहां हैं? मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।"

बेटे की बात सुनकर सुजाता की आंखों में आंसू भर आए। वह बोली —"बेटा, तेरे पिता कहोड़ मुनि थे। तुम्हारे जन्म से कुछ ही पहले वह राजा जनक की राजसभा में विद्वानों से शास्त्रार्थ करने गए थे। वहां बंदी नामक एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित हो गए। बस,बंदी ने उन्हें समुद्र में डुबो दिया।"

मां से यह समाचार सुनकर,अष्टावक्र सोच में पड़ गया। तर्क शास्त्र का विद्वान तो वह था ही। उसने उसी समय राजा जनक की राजसभा में जाने का निश्चय कर लिया। अपने पिता को शास्त्रार्थ में हराकर समुद्र में डुबो देने वाले विद्वान बंदी से बदला लेने के लिए वह व्याकुल हो उठा था।

अगले ही दिन अपनी मां और नाना से आज्ञा लेकर, अष्टावक्र अपने मामा श्वेतकेतु के साथ राजा जनक की राजधानी मिथिला जा पहुंचा। राजसभा के द्वार पर बालकों को खड़ा देखकर, द्वारपाल ने उन्हें समझाया —"बालको। यह महाराजा जनक की राजसभा है। यहां के प्रधान विद्वान बंदी की आज्ञा से राजसभा में केवल वे ही प्रवेश कर सकते हैं, जो शास्त्रों के विद्वान हों। और बंदी से वाद-विवाद कर सकें। बालकों को राजसभा में नहीं जाने दिया



जाता।"

अष्टावक्र ने द्वारपाल से कहा—"हम भी शास्त्रों के विद्वान हैं। जब पंडितों के लिए यह द्वार खुला है, तो हमें ही क्यों रोका जा रहा है?"

द्वारपाल ने फिर उन्हें समझाया— "बच्चो! बालक अपने बड़े-बूढ़ों से ही ज्ञान प्राप्त करते हैं। समय के अनुसार ही विद्वान होते हैं। तुम तो केवल दस वर्ष के बालक हो। इतने थोड़े समय में शास्त्रों का ज्ञान किसी को भी नहीं हो सकता। अब तुम यहां से दूर जाकर खेलो।"

अष्टावक्र ने फिर भी हठ नहीं छोड़ा। अब द्वारपाल ने उन्हें डराते हुए कहा—"क्यों हठ कर रहे हो? अंदर जाने पर तुम्हें बंदी से शास्त्रार्थ करना पड़ेगा। पराजित होने पर वह तुम्हें तुरंत ही समुद्र में डुबोकर मार डालेंगे। तुम यहां से तुरंत भाग जाओ।"

अब अष्टावक्र ने ऊंचे स्वर में महाराजा जनक तथा राजसभा के विद्वानों की प्रशंसा आरम्भ कर दी। अष्टावक्र की मीठी,शुद्ध वाणी सुनकर, राजा जनक का



मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने उन दोनों को अपने पास बुलाकर पूछा—"तुम क्या इच्छा लेकर यहां आए हो? तुम जो कुछ भी चाहते हो, मुझसे मांग लो।"

अष्टावक्र ने राजसभा के प्रमुख विद्वान बंदी से शास्त्रार्थ करने की अपनी इच्छा बताई। बंदी को तुरंत ही वहां बुलवाया गया। अष्टावक्र,जो आठ अंगों से टेढ़ा-मेढ़ा होने के कारण कुरूप दिखाई देता था, विद्वानों से भरी सभा में महापंडित बंदी के साथ शास्त्रार्थ करने लगा। कई दिनों तक यह शास्त्रार्थ चलता रहा। अंत में अष्टावक्र शास्त्रों के ऐसे गूढ़ प्रश्न पूछने लगा कि बंदी को चुप रह जाना पड़ा। महापंडित बंदी के चुप होते ही सारी सभा आश्चर्य से पुकार उठी—"बंदी एक बालक से शास्त्रार्थ में पराजित हो गए।"

तभी अष्टावक्र की वाणी गूंजी—"महाराजा जनक! मैंने सुना है कि आपकी सभा में शास्त्रार्थ में पराजित हो जाने वालों को,समुद्र में डुबो दिया जाता है। फिर बंदी अभी तक यहां सकुशल कैसे बैठे हैं?"

अष्टावक्र की बात सुनकर,राजा जनक के प्रहरी बंदी को पकड़ने आगे बढ़े, तो बंदी ने अष्टावक्र के चरणों में प्रणाम करके घोषणा की—"मैं जल के स्वामी वरुणदेव का पुत्र हूं। मेरे पिता के यहां बारह वर्षों में पूरा होने वाला यज्ञ हो रहा था। वरुणदेव की आज्ञा से मैंने वाद-विवाद द्वारा जांच परख कर, अच्छे-अच्छे विद्वानों को समुद्र में डुबोने के बहाने उसी यज्ञ में भेजा था। अब वह यज्ञ समाप्त हो गया है। वे सभी विद्वान अभी वहां से लौटते ही होंगे। मुझे कल ही इसकी सूचना मिल चुकी है।"

अष्टावक्र ने बंदी की बात पर कोई ध्यान न दे, जोर से कहा—"इस अभिमानी और व्यर्थ की बातें बनाने वाले को तुरंत ही समुद्र में डुबो दिया जाए। यदि यह वरुणदेव का ही पुत्र है, तो फिर इसी समय अपने पिता के पास क्यों नहीं चला जाता?"

अब राजा जनक की आज्ञा से प्रहरी बंदी को पकड़कर समुद्र के समीप ले गए। तभी बंदी द्वारा समुद्र में डुबोए गए विद्वान समुद्र में से निकलने लगे। उनमें अष्टावक्र के पिता कहोड़ मुनि भी थे। कहोड़ मुनि ने तुरंत ही आठ अंगों से टेढ़े-मेढ़े अपने पुत्र को पहचान लिया। उन्होंने उसे गोद में उठाकर कहा—"यह बंदी ठीक ही कह रहा है बेटा! हम लोग वरुण देव का ही यज्ञ करा रहे थे। वहां हमें बहुत-सा धन भी दक्षिणा में मिला है। तुमने राजसभा में शास्त्रार्थ द्वारा बंदी को परास्त कर, सिद्ध कर दिया कि सच्ची लगन और कठिन परिश्रम से एक बालक भी बड़े-बड़े विद्वानों को हरा सकता है। तुम मेरे सुयोग्य पुत्र हो। मुझे तुम पर गर्व है।"

तभी बंदी ने अष्टावक्र और कहोड़ मुनि व राजा जनक से आज्ञा लेकर,समुद्र में छलांग लगा दी। कहोड़ मुनि ने राजा जनक को आशीर्वाद देकर कहा—"महाराज! बंदी को परास्त करने का जो काम मैं न कर सका, वह मेरे पुत्र ने कर दिखाया।"

वरुणदेव से दक्षिणा में मिला बहुत-सा धन, रत्न तथा राजा जनक से भी कई बहुमूल्य उपहार प्राप्त करके, पिता-पुत्र घर की ओर चल पड़े। अष्टावक्र अपनी टेढ़ी-मेढ़ी टांगों द्वारा बहुत धीरे-धीरे चल पा रहा था। यह देखकर कहोड़ मुनि को बहुत दया आई। उन्होंने अष्टावक्र को सामने बहती समंगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। पिता की आज्ञा से अष्टावक्र समंगा में स्नान करके नदी से बाहर निकला, तो उसके सभी अंगों का टेढ़ापन मिट चुका था। उसका भद्दा रूप भी अब बहुत सुंदर हो गया था। घर आने पर सुजाता ने आश्चर्य से देखा—उसके पति, साथ-साथ उनका विद्वान पुत्र अष्टावक्र, अपने मामा श्वेतकेतु के साथ उछलता-कूदता चला आ रहा था। अपने पुत्र का यह रूप देखकर, मां निहाल हो गई। कभी उसकी दृष्टि पति की ओर उठती थी, तो कभी वह अपने पुत्र अष्टावक्र के सिर पर हाथ फेरने लगती थी।

रात में हवेली

—शेखर

देवसिंह जमींदार के पास नौकरी करता था। जमींदार का कारोबार कई गांवों में फैला था। देवसिंह अकसर ही घोड़े पर इधर से उधर आया-जाया करता इसी तरह समय बीत रहा था। एक बार की बात, आकाश में बादल घिरे थे। रह-रहकर बिजली कौंध जाती। बारिश होने लगी।

तभी सामने टीले पर उसने रोशनी देखी। देवसिंह कुछ आश्चर्य से उस तरफ बढ़ा। टीले पर उसे एक हवेली दिखाई दी। रोशनी हवेली की खिड़कियों से आ रही थी। देवसिंह मन ही मन कहने लगा—'ताज्जुब है, मैंने इस टीले पर हवेली कभी नहीं देखी। मैं तो यहां से सैकड़ों बार आया-गया हूं।'

देवसिंह घोड़े को टीले पर चढ़ा ले चला। अब हवेली की ओर से कुछ आवाजें भी सुनाई दे रही थीं। तभी न जाने कहां से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया।

देवसिंह ने घोड़े की लगाम खींच ली। फिर बोला—"क्या बात है ?" उसने देखा सामने एक बूढ़ा खड़ा है।

बूढ़े ने लगाम पकड़ ली। बोला—"तुम ऊपर नहीं जा सकते। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।"

तेज बारिश में यह सिरफिरा बूढ़ा कहां से आ गया, यह बात देवसिंह की समझ में नहीं आई। उसने बहुत कोशिश की, पर घोड़ा आगे न बढ़ सका। आखिर वह घोड़े से उतरकर, बूढ़े से झगड़ने लगा। जैसे ही लगाम छूटी, घोड़ा तेजी से हवेली की तरफ दौड़ पड़ा और गायब हो गया।

बूढ़े ने देवसिंह की कलाई थाम ली और टीले से नीचे खींच लाया। उसकी पकड़ जैसे लोहे का शिकंजा थी। बूढ़ा उसे घसीटता हुआ, एक झोंपड़ी में ले गया। दरवाजा बंद करके बोला—"मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूंगा।"

"मैं देखता हूं, तुम मुझे कैसे रोकते हो।"—कहकर देवसिंह बाहर की तरफ भागा। पर बूढ़े ने उसे जमीन पर गिरा दिया। फिर रस्सी से हाथ-पैर बांध दिए और कोठरी का दरवाजा बंद करके, बाहर चला गया। अपने बंधन खोलने की कोशिश करते-करते देवसिंह को न जाने कब नींद आ गई !

अचानक देवसिंह की नींद टूट गई। वह चौंककर उठ बैठा। उसके हाथ-पैर खुले हुए थे। झोंपड़ी में धूप फैली हुई थी। वही रात वाला बूढ़ा एक तरफ बैठा, हंस रहा था। यह देखकर, देवसिंह का पारा गरम हो उठा। उसके कुछ बोलने से पहले ही बूढ़ा उसे बाहर ले गया।

थोड़ी दूर पर वही टीला धूप से चमक रहा था, पर इस समय उसके ऊपर कोई इमारत नहीं दिखाई दे रही थी।

"यह क्या !"— देवसिंह ने आश्चर्य से कहा।

बूढ़ा बोला—"बेटा, इसीलिए रात को मैंने तुम्हें नहीं जाने दिया। वर्ष में एक रात इस टीले के अंदर से यह रहस्यमय हवेली बाहर आती है। आवाजें सुनाई देती हैं। मैंने बहुत लोगों को उसमें जाते देखा है, जो कभी बाहर नहीं आए। दिन निकलते ही हवेली जमीन के अंदर समा जाती है। मैं हर रात इसीलिए यहां खड़ा रहता हूं कि कोई हवेली में न चला जाए।"

देवसिंह ने कहा—"बाबा, वह रहस्यमय हवेली किसकी है, और क्यों बाहर आती है ?"

उसकी बात सुनकर बूढ़ा हंस पड़ा। उसने कहा—"अगर यह जानता, तो हवेली को ही नष्ट न कर देता। अब तुम अपने गांव चले जाओ। और हां, आगे से सावधान रहना।"

देवसिंह ने बूढ़े को धन्यवाद दिया। फिर पूछने लगा—"बाबा, अब आप क्या करेंगे ?"

—"वही, जो अब तक करता आया हूं, जब तक जीवित हूं, किसी को उस रहस्यमय हवेली में नहीं जाने दूंगा।"

देवसिंह पैदल ही गांव की तरफ लौट चला। वह रह-रहकर टीले की तरफ देख लेता, जहां अब कुछ भी नहीं था। ●



नंदन एलबम : ८९

ताजमहल

बार बार आते सैलानी



आंगन गीला

—अंशुकुमार गुप्ता

मिनूखा एक गरीब लड़का था। जब वह एक साल का था, तभी उसकी मां चल बसी थी। मिनूखा का पिता जमींदार के यहां नौकरी करता था। किसी तरह दोनों की गुजर-बसर हो रही थी। पर एक दिन अचानक उसके पिता भी नहीं रहे। उस समय मिनूखा की उम्र मुश्किल से दस वर्ष रही होगी। मिनूखा के आगे पूरी जिंदगी पड़ी थी। दस साल की खेलने-खाने की छोटी-सी उम्र में ही वह अनाथ हो गया था। पेट भरने का साधन अब उसे स्वयं खोजना था। मिनूखा नौकरी की तलाश में निकल पड़ा। जगह-जगह भटका, पर कोई उसे काम देने को तैयार ही नहीं हुआ। एक तो वह देखने में मासूम-सा बच्चा लगता था, दूसरे उसे कुछ खास काम आता-जाता भी नहीं था।

काफी भटकने के बाद आखिरकार उसे एक जगह नौकरी मिल ही गई। यहां उसे घर में झाड़ू-पोंछे के अतिरिक्त, बर्तन मांजने से लेकर सौदा लाने तक का सारा काम संभालना पड़ता था।

मिनूखा का मालिक तेल का व्यापारी था।देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी उसका तेल जाता था। उसके घर के एक बड़े भाग में तेल के पीपे ही पीपे भरे थे। सारा घर गंदगी का ढेर-सा नजर आता था। पर मेहनती मिनूखा ने हिम्मत नहीं हारी। वह जी-जान से सफाई में जुट गया।

तेल से चिपके फर्श पर वह घंटों पोंछा मारता, फिर भी गंदगी कम नजर नहीं आती थी। मिनूखा कई

दिन तक यों ही लगा रहा। उसका मालिक उसकी जी तोड़ मेहनत से बहुत खुश होता था। बार-बार उसे शाबाशी देकर उत्साह बढ़ाता।

परिणाम स्वरूप, कुछ ही दिनों में घर की हालत सुधर गई। अब घर में जगह-जगह तेल नहीं फैला था। घर पहले की अपेक्षा बहुत अधिक अच्छा दिखता था। मालिक मिनूखा से बहुत खुश था। एक माह बाद उसने उसे पहली तनख्वाह दी, तो कुछ सिक्के बतौर इनाम फालतू भी दे दिए।

मिनूखा को अपने मालिक का प्यार पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। अब उसे अपने मां-बाप की कमी नहीं अखरती थी। वह अपने मालिक की जी जान से सेवा करता था। ऐसा कई महीने तक चलता रहा। अब मिनूखा के पास ज्यादा काम नहीं रहता था। दिन भर का काम फटाफट निपटाकर, वह छत पर जाकर बैठ जाता था। खाली समय बिताना यद्यपि उसके लिए एक समस्या थी।

एक बार वह छत पर बैठा था। अचानक उसे नीचे कुछ आहट सुनाई दी। उसने नीचे देखा, तो हैरान रह गया। नीचे दुकान का नौकर पुनसू तेल का एक पीपा खोल चुका था। वह अपने साथ एक डिब्बा लाया था और पीपे से उसी डिब्बे में तेल उंड़ेल रहा था। मिनूखा भागा हुआ नीचे पहुंचा और जोर से बोला—"क्या कर रहे हो तुम ? यह मालिक का तेल है। इसे लेकर कहां जा रहे हो ?"

पुनसू, मिनूखा के अचानक आ धमकने से बुरी तरह घबरा गया। सकपकाते हुए बोला—"मैं...मैं...मालिक ने मंगाया है चार किलो तेल।"

मिनूखा ने पूछा—"चार किलो ? पर दुकान में तो सुबह ही पचास पीपे तेल गया था। तुम जरूर चोरी करने आए हो।" अब तो पुनसू घबरा गया। वह समझौता करने की गरज से बोला—"बस मिनूखा, इस बार माफ कर दो। बदले में ये दस सिक्के ले लो। मालिक से मत कहना। मेरे मां-बाप नहीं हैं। मालिक ने नौकरी से निकाल दिया, तो भूखों मर जाऊंगा।"

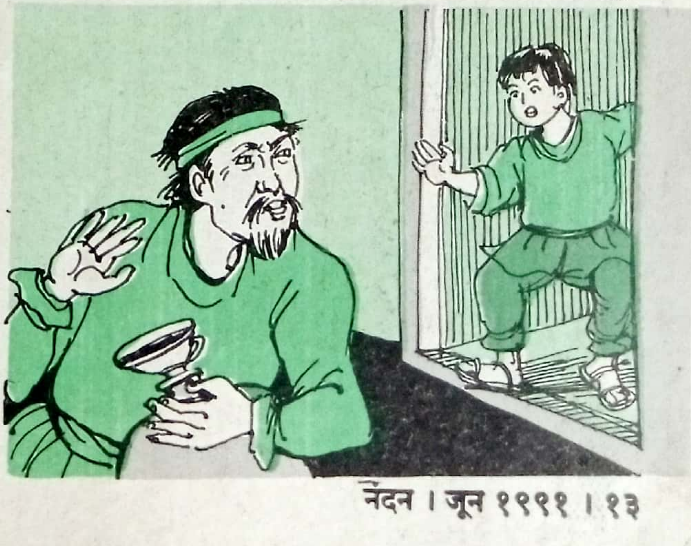
मिनूखा को उस पर तरस आ गया। उसने पुनसू को छोड़ दिया। पर पुनसू चालबाज नौकर था। उसे मिनूखा अपनी राह में रोड़ा नजर आ रहा था। उसने मिनूखा को नौकरी से निकलवाने की ठान ली। वह मालिक से जाकर उलटा-सीधा कहने लगा। उसने मालिक के कान भरे—'मिनूखा दिन भर खाली बैठता है। झाड़ू-पोंछा गंदी तरह से करता है। बर्तन मांजते वक्त उनमें किरकिराहट छोड़ देता है।"

मालिक को पुनसू की बातों पर विश्वास नहीं आता था। लेकिन पुनसू भी कम नहीं था। वह कोई न कोई मौका देखकर, रोज ही मिनूखा की बुराई करता।

धीरे-धीरे मालिक को पुनसू की बातों में दम नजर आने लगा। एक दिन वह अचानक घर पहुंचा, तो उसने वास्तव में मिनूखा को छत पर खाली बैठे देखा। मिनूखा ने लाख दलील दी कि वह काम निपटाकर बैठा है, पर मालिक ने उसे जोरदार डांट लगा ही दी।

अब मिनूखा के बुरे दिन शुरू हो गए थे। एक दिन दुर्भाग्यवश दाल में जरा-सी किरकिराहट आ गई, तो मालिक ने आसमान सिर पर उठा लिया। अब तो बात-बात पर मिनूखा की शामत आने लगी। मालिक उसे तनख्वाह देते हुए सताने लगा।

एक बार तो मालिक ने अति कर दी। महीने के अंतिम दिन उसने मिनूखा को बुलाया और बोला—"देखो मिनूखा, मैं दूसरे शहर जा रहा हूं। शाम तक हर हालत में लौट आऊंगा। तब तक तुम्हें



पूरे आंगन की सफाई करनी है। मैं तुम्हारी इस महीने की तनख्वाह आने के बाद ही दूंगा, पर तनख्वाह मिलेगी या नहीं, यह तुम्हारे आज के काम पर निर्भर है।"

मिनूखा चौंका और बोला—"आज का काम? मालिक, मैंने तो पूरे महीने काम किया है, फिर भला तनख्वाह क्यों नहीं मिलेगी?"

मालिक हंस कर बोला—"अरे भई, मैं कब कहता हूं कि तनख्वाह नहीं मिलेगी। मैं तो सिर्फ इतना कह रहा हूं कि मेरी एक शर्त मानने के बाद ही तुम्हें तनख्वाह मिल सकेगी।" मिनूखा चकित हो गया। उसने कहा—"कैसी शर्त? कौन-सी शर्त? अच्छा मालिक, आप बताइए तो सही।"

मालिक बोला—"मैं जब आऊंगा, तो मुझे मेरा आंगन गीला-गीला लगना चाहिए। पर शर्त यह है कि पानी की एक बूंद भी नजर न आए।"

इतना कहकर मालिक चला गया। मिनूखा के आंसू फूट पड़े। वह लगातार सोच-विचार करता रहा। मालिक के व्यवहार से वह तंग आ चुका था। कई घंटे बाद आखिरकार, उसे एक उपाय सूझ ही गया। वह खुशी से उठा और आधे घंटे में ही अपनी योजनानुसार कार्य करके छत पर जा बैठा। शाम को उसका मालिक लौटा, तो आंगन देखते ही गुस्से से पागल हो गया। उसने देखा कि पूरे आंगन में तेल ही तेल बह रहा था। खाली पीपे एक ओर दीवार के सहारे लगे थे। उसने गुस्से से मिनूखा को आवाज दी, तो मिनूखा छत से ही बोला—"मालिक, मैंने आपकी शर्त पूरी कर दी है। मैंने पानी की एक बूंद तक का प्रयोग नहीं किया है और आपका आंगन गीला है।"

अब तो मालिक गुस्से से कांपने लगा। मिनूखा हंसता हुआ बोला—"मैं जानता था, आप ऐसा ही करेंगे। इसीलिए मैंने दो पीपे तेल बेचकर अपनी तनख्वाह वसूल की है। अब मैं नौकरी छोड़कर जा रहा हूं।" कहकर मिनसू चल दिया। मालिक देखता रह गया। •

सात हजार पिंजरे

—ग्रिम बंधु

बहुत पुरानी बात है। घने जंगल में एक बहुत बड़ी हवेली थी। यह हवेली बहुत ही घुमावदार और विचित्र थी। इतनी पुरानी थी कि लगता था, अभी गिरी और नष्ट हो जाएगी। पर ऐसा नहीं था। चाहे जितनी आंधी आए, तूफान आए, वह वहीं की वहीं, वैसी की वैसी रहती थी।

यह हवेली एक काली, दुबली-पतली बूढ़ी जादूगरनी की थी। वह दिन में नीली-हरी आंखों वाली बिल्ली बनकर आसपास के जंगलों-खेतों में घूमती थी। रात में उल्लू बनकर शिकार पकड़ती थी। फिर आधी रात को हवेली में लौटने पर अपने असली रूप में आ जाती।

उसकी हवेली के चारों ओर लगभग सौ-सौ गज तक उसके जादू का प्रभाव था। कहीं हरे-भरे फल-फूलों से लदे सुंदर-सुंदर पेड़ थे और कहीं नदी का निर्मल पानी। कहीं झरने, तो कहीं सुंदर पहाड़ी और मैदान। सभी इतने लुभावने कि यदि कोई भूले-भटके वहां आ जाए, तो मोहित हुए बिना न रहे।

बस, जो भी उस सीमा के भीतर पांव रखता कि जीवन से हाथ धोना पड़ता। लड़कियां पक्षी बनकर पेड़ों पर बैठ जातीं और युवक वहीं के वहीं पत्थर की मूर्ति बन जाते। हिल-डुल तक नहीं सकते थे।

उस हवेली से कुछ दूर उत्तर दिशा में एक छोटी-सी बस्ती थी। वहीं एक खूबसूरत लड़की रहती थी, जिसका नाम था जोरिंडा। उसका विवाह जोरिंगेल नामक सुंदर किंतु गरीब गड़रिए से तय हुआ था।

एक दिन दोनों घूमने निकले। घूमते-घूमते उन्हें पता ही न चला कि सांझ होने को आ गई। तभी जोरिंगेल ने जोरिंडा से कहा—"कहीं हम उस जादूगरनी की हवेली के समीप तो नहीं आ गए? चलो-चलो, उलटे पांव भाग चलो।"

पर जोरिंडा पर तो अब बगीचे का नशा छा चुका

था। जोरिंगेल उसकी बांह पकड़कर खींचने लगा। उसे लगा, उसे चक्कर-सा आ गया है। उधर जोरिंडा भी एकदम घबराने-सी लगी। उसे लगा, कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है। फिर देखते ही देखते वह एक सुंदर-सी बुलबुल बनकर पेड़ पर बैठ गई और लगी रोने। अपनी सुंदर, मीठी, दर्द भरी आवाज में जोरिंगेल को अपना गीत सुनाने लगी।

जोरिंगेल ने देखा, जोरिंडा उसके पीछे नहीं है। वह घबरा गया। इधर-देख, उधर-देख। वह परेशान। आखिर कहां खोजे? तभी उसने ऊपर पेड़ पर बैठी बुलबुल को दर्द भरी आवाज में गाते सुना। उसके चारों तरफ उल्लू घूम रहा था। यह उल्लू वही जादूगरनी थी, जोरिंगेल को यह समझते देर न लगी। भागकर उसने बुलबुल को पकड़ना चाहा कि उसने पाया, वह हिल-डुल भी नहीं सकता। वह पत्थर की मूर्ति-सा बन गया था।

अब आधी रात हुई। घोर गर्जना। फिर हवेली से आवाजें गूंजने लगीं। वहां से घंटियों की आवाजें भी आने लगीं। ये घंटियां पिंजरों के साथ बंधी थीं। प्रत्येक पिंजरे में एक-एक पक्षी था। पक्षी एक-एक सुंदर लड़की थी। ऐसे सात हजार पिंजरों में, सात हजार लड़कियां कैद थीं।

हवेली में बहुत-से अहाते थे। अहातों के परे बहुत-से कमरे। कमरों के परे बहुत-सी कोठरियां थीं। हवेली के बाहर के दरवाजे ही इतने बड़े और मजबूत थे कि उन्हें खोलकर कोई भीतर प्रवेश नहीं कर पाता था। यदि कोई किसी तरह भीतर पहुंच भी गया, तो जादूगरनी से बचकर बाहर नहीं आ सकता था।

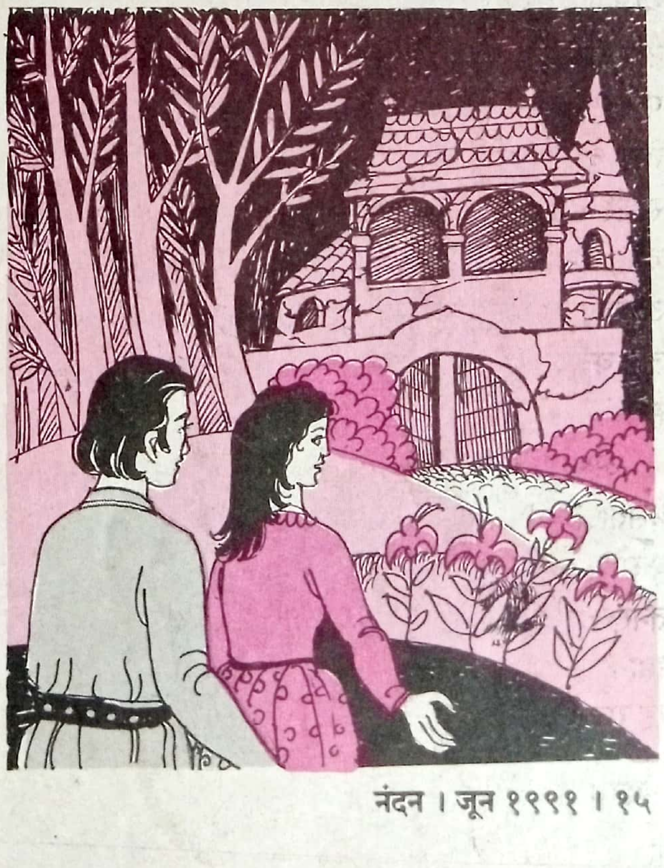
हवेली के बाहर जितनी पत्थर की मूर्तियां दिखाई देती थीं, वे सभी युवकों की थीं। बच्चे-बूढ़े तो भला वहां तक जाने की सोच भी कैसे सकते थे! वहां तक पहुंचने से पहले बहुत-सी कंटीली झाड़ियों को भी पार करना पड़ता था।

अब वह उल्लू बनी जादूगरनी अपने बुढ़िया के असली वेश में आई। उसने आते ही किसी मंत्र आदि का उच्चारण किया और जोरिंगेल के देखते ही देखते बुलबुल बनी जोरिंडा को दोनों हाथों से उठा, भीतर ले गई। जाते-जाते जोरिंगेल की ओर देख, क्रूर हंसी हंसने लगी। जोरिंगेल को गुस्सा तो इतना आया कि वह उसे उसी क्षण मार डालता! पर क्या करता बेचारा, पत्थर बन गया था। हिल तक न सकता था। बुलबुल बनी जोरिंडा दर्द भरे गीत गाती जा रही थी। धीरे-धीरे उसकी आवाज भी जोरिंगेल तक पहुंचनी बंद हो गई। जैसे ही जोरिंडा जादूगरनी के साथ भीतर गई, हवेली खटाक से बंद हो गई।

दूसरे दिन, जादूगरनी सुबह ही सुबह टहलने निकली। उसके हाथ में जादुई छड़ी तो थी ही। उसे न जाने जोरिंगेल पर क्या दया आई कि उसने उसे छड़ी से छुआ। चमत्कार! जोरिंगेल फिर पहले की तरह चलने-फिरने लगा, बोलने लगा।

"बूढ़ी मां, तुम बहुत अच्छी हो। मेरी जोरिंडा जो बुलबुल बन गई है, उसे भी मुक्त कर दो। वह मेरी मंगेतर है। मैं उसके बिना जी नहीं सकता।"—जोरिंगेल जादूगरनी से अनुनय-विनय करने लगा।

"चल भाग यहां से। नहीं तो फिर से तुझे पहले जैसा बना दूंगी।"—कहते-कहते जादूगरनी जोर से



हंसी और न जाने कहां गायब हो गई।

जोरिंगेल अब फिर से भेड़-बकरियां चराने लगा। उन्हें चराते-चराते वह दुःख के गीत गाता और रोता। रोते-रोते वह हवेली के पास पहुंच जाता। उसे लगता, शायद कहीं न कहीं से उसे जोरिंडा की आवाज सुनाई पड़ेगी ही। पर वह तो हवेली के भीतर न जाने किस पिंजरे में कैद थी।

ऐसे ही कितने दिन, महीने, वर्ष बीत गए। जोरिंगेल बीमार रहने लगा। उसकी दाढ़ी बढ़ गई। उसे अपने कपड़े-लत्तों का भी कोई ध्यान न था। एक दिन वह खूब थककर सोया कि उसे एक स्वप्न दिखाई पड़ा। उसने देखा, एक बहुत ही सुंदर, लाल-लाल पंखुड़ियों वाला कोई फूल है। उन पंखुड़ियों को उसने हाथ से खोला ही था कि बीच में से मोती-सा झिलमिलाता-चमकता प्रकाश पुंज दिखाई दिया। तभी कहीं से आवाज आई— 'इस फूल को तुम उठा लो। इसे हवेली तक ले जाओ। वहां जिस-जिस वस्तु से इसका स्पर्श करोगे, वह जादूगरनी के जादू के प्रभाव से मुक्त हो जाएगी।'

वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। आंखें मलने लगा। पर स्वप्न का दृश्य उसकी आंखों के सामने से हटता ही न था। उसने अपनी भेड़-बकरियां, अपने साथी के हवाले कीं और लगा भागने। 'मेरी जोरिंडा अब मुझे मिल सकती है।'—इस आशा ने उसमें शक्ति भर दी।

उसने आसपास एक-एक झाड़, एक-एक पौधे को देखा। पर कहीं भी वैसा फूल न दिखाई दिया। फिर वह और दूर गया। और दूर गया। बहुत दूर एक निर्जन पहाड़ी तक पहुंच गया। थककर सुस्ताने लगा। तभी उसकी दृष्टि सामने चट्टान की आड़ में उगे एक लाल फूल पर गई। वह सब थकान भूल गया। पास जाकर देखा। एक-एक पंखुड़ी खोली। अरे वाह! ठीक वैसा ही मोती जैसा प्रकाश बीच में से झिलमिलाने लगा। फूल तोड़कर हाथ में लेते ही उसकी सारी थकान दूर हो गई। उसमें स्फूर्ति आ गई।

अब वह फूल को बड़े यत्न से हाथ में लेकर हवेली तक पहुंचा। किवाड़ तक चला गया। आज वह पत्थर की मूर्ति नहीं बना था। उसे फूल की शक्ति पर विश्वास हो गया। फूल छुआते ही किवाड़ अपने-आप खुल गए। ऐसे ही वह एक के बाद एक किवाड़ खोलता चला गया। वह तो सबसे पहले अपनी बुलबुल बनी जोरिंडा को असली रूप में लाना चाहता था।

इतने में जादूगरनी भयंकर आवाज करती, गालियां बकती वहां आ पहुंची। पर जोरिंगेल के हाथ में फूल होने से वह इसको छू तक न सकी, बल्कि दो गज की दूरी पर खड़ी रह गई। पास तक न आ सकी।

अब जोरिंगेल भागता-भागता पिंजरों के पास पहुंचा। वहां लगभग सौ पिंजरों में बुलबुल कैद थीं। किसी में मैना, किसी में चिड़िया, ऐसे भिन्न पिंजरों में, भिन्न-भिन्न पक्षी थे। जोरिंगेल ने सबसे पहले बुलबुल वाले पिंजरों को फूल से छुआ। जोरिंडा और बाकी निन्यानवे लड़कियां हंसती-नाचती उसके सामने खड़ी हो गईं। वह जोरिंडा को लेकर भागने लगा। तभी उसके मन में न जाने क्या आया—उसने सभी पिंजरों को फूल छुआया। देखते ही देखते सात हजार पक्षी, सात हजार सुंदर लड़कियां बन गईं। पिंजरे गायब हो गए। पुरानी हवेली भव्य महल बन गया। जादूगरनी जान बचाकर न जाने कहां भाग गई। उस महल के बाहर बुत बने युवकों को भी फूल की शक्ति से जोरिंगेल ने नया जीवन दिया। चारों ओर से हर्ष-उल्लास के स्वर कानों में पड़ने लगे।

अब जोरिंगेल और जोरिंडा की शादी बड़ी ही धूमधाम के साथ, उसी महल में हुई। नए-नए जरीदार कपड़े, महंगे-महंगे रत्नजड़ित आभूषण न जाने कहां से आ गए। दरबार सज गया। बूढ़े राजा-रानी भी जीवित हो गए। उन्होंने दोनों को अपने पास ही रख लिया। जादूगरनी के प्रभाव से राजा-रानी, दरबारी और नौकर-चाकर सभी मुक्त हो गए।

प्रस्तुत : प्रवीण कपूर





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला :**बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट।**

कहानी लिखो : ९१

सामने बने चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए। उसे १० जून, १९९१ तक सम्पादक **'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१,** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। उसे प्रकाशित भी किया जाएगा। परिणाम—अगस्त '९१



चित्र-पहेली : ९१

'आई बरात' विषय पर चित्र बनाकर १० जून '९१ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें।** चुना गया चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा। परिणाम—सितम्बर '९१



ला कमल

अजर बेजान के एक कस्बे में एक खान रहता था। उसकी पत्नी का नाम था अस्त्रा। एक बार अस्त्रा बीमार हो गई। खान ने पत्नी का अच्छे से अच्छा इलाज कराया। दूर-दूर से हकीम बुलाए गए, लेकिन अस्त्रा का रोग बढ़ता ही गया।

उन्हीं दिनों खान ने एक पहुंचे हुए फकीर के बारे में सुना। वह फरियाद लेकर फकीर के पास गया। अपना दुःख कहा। फकीर ने खान की बात ध्यान से सुनी। फिर कहा— "पूरब में एक देश है— भारत। वहां खूबसूरत फूल होता है। उसे कहते हैं कमल। उसी फूल की खुशबू से तुम्हारी बीवी का रोग दूर हो सकेगा।"

खान तुरंत हिंदुस्तान के सफर पर निकल पड़ा। रास्ता कठिन था। बीच-बीच में मौसम भी खराब हो जाता। पर खान ने हिम्मत न हारी। मुसीबतों से जूझता हुआ, वह जैसे-तैसे पहुंच ही गया।

यहां उसने सरोवरों में खिले कमल देखे, तो मुग्ध हो गया। उसने किसी तरह कमल के बीज प्राप्त कर लिए और घर के लिए लौट चला। उसने रास्ते में जरा भी आराम नहीं किया। मन में एक ही बात थी— 'जैसे भी हो, जल्दी से जल्दी घर पहुंच जाऊं।'

लेकिन घर पहुंचकर जो कुछ सुना, तो सिर पकड़कर बैठ गया। अस्त्रा की मृत्यु हो चुकी थी। पत्नी को याद करके खान खूब रोया, फिर कमल के बीज झील में फेंक दिए। गरमी का मौसम आया, तो झील में असंख्य कमल खिल उठे।

यह पुरानी बात है, पर सुंदर कमल के फूल आज भी खिलते हैं अस्त्रा खान और उसके आसपास की झीलों में।

एक थी गूजरी

ग्वालियर के राजा थे मानसिंह। स्वयं भी शूरवीर थे। शूरवीरों की इज्जत भी करते थे।

एक दिन वह शिकार खेलने गए। काफी दूर निकल गए। लौटे तो दोपहर ढल चुकी थी। रास्ते में पड़ा राई गांव। चरवाहे पशुओं को चराकर वापस आ रहे थे। गांव के स्त्री-पुरुष, खेतों पर काम करके घर लौट रहे थे।

अचानक वहां भगदड़ मच गई। स्त्री-पुरुष, पशु जिधर मुंह उठा, भाग खड़े हुए। मानसिंह रुक गए। कुछ ही देर बाद उन्हें इस अफरातफरी का कारण पता चल गया। दो खूंख्वार सांड़ ताकत से एक-दूसरे से भिड़े थे। दोनों लहूलुहान थे। फिर भी उनकी आंखों से अंगारे बरस रहे थे। पीछे हटकर खुरों से जमीन खोदते। फिर एक-दूसरे से टकराते, तो दिल दहल जाता था।

मानसिंह ने अपने साथ के सैनिकों की ओर देखा। वह उनसे सांड़ों को गांव से दूर खदेड़ने की बात कहने ही वाले थे कि रुक गए। गठे शरीर वाली एक सुंदर युवती सिर पर मटके रखे, निडर हो, उन सांड़ों की ओर बढ़ रही थी। मानसिंह दम साधे उसकी ओर देखने लगे।

वह युवती सांड़ों से कुछ दूर जाकर रुकी। सिर से मटके उतार, एक ओर रखे। फिर बिजली की तेजी के साथ आगे बढ़कर उसने एक-एक हाथ से दोनों बिगड़ैल सांड़ों के सींग पकड़े। उन्हें पीछे धकेला और अलग-अलग दिशाओं में छोड़ दिया। दोनों सांड़ इसके लिए जैसे तैयार नहीं थे। वे वहां से दौड़ते दूर चले गए। युवती ने दोनों हाथ झाड़े। मटके उठाकर सिर पर रखे। ऐसे चली गई, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

राजा मानसिंह चकित हो, महल में लौटे। उस रात वह एक पल भी न सो सके। बार-बार उस युवती का चेहरा और उसकी निर्भयता उनकी आंखों के सामने तैर जाती।

अगले दिन उन्होंने उस युवती का पता-ठिकाना मालूम कराया। वह राई गांव की गूजरी थी। दही-छाछ बेचा करती थी। राजा मानसिंह ने उससे विवाह कर ग्वालियर की रानी बना दिया। उसके रहने के लिए एक भव्य महल बनवाया। नाम रखा गूजरी महल।

आज भी ग्वालियर के किले में खड़ा है—'गूजरी महल'।

नाग की मणि

महादेव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं, पर शिव-पार्वती को घूमने का शौक कम नहीं। एक बार घूमते-घूमते वे दोनों दूर निकल गए। वहां चारों ओर पानी ही पानी।

महादेव ने अपने त्रिशूल से पहाड़ में छेद कर दिया। पानी तेजी से बह चला। वहां सुंदर घाटी पानी के बाहर निकल आई। नौ देवताओं और सात देवियों ने बहुत-से ऊंचे-नीचे पहाड़ वहां बना डाले।

शिव प्रसन्न थे, पार्वती भी खुश थीं। उन्होंने नृत्य शुरू कर दिया। सारे देवता भी वह अनोखा नृत्य देखने को एकत्र हो गए। सात दिन और सात रात्रि नृत्य चलता रहा। नागराज अनंत ने अपने मस्तक की मणि से उस सारे क्षेत्र को प्रकाशित किए रखा।

नृत्य खत्म हुआ। महादेव जाने लगे तो वहां अनंत नाग को राजसिंहासन पर बैठा गए। पर वह कब तक राज्य करता। बाद में वह भी पाताल लोक लौट गया।

नागराज की मणि से आलोकित प्रदेश ही मणिपुर है। आज भी यहां के निवासी शिव-पार्वती का वह नृत्य कहां भूले हैं!

बीज कहां

कौरव-पांडवों के पूर्वज थे महाराजा कुरु। एक बार उनके राज्य के बड़े हिस्से में वर्षा नहीं हुई। धरती सूख गई। फसल की बोआई नहीं हो सकी। वैसे भी वहां झाड़-झंखाड़ अधिक थे, खेती की भूमि कम थी। महाराजा कुरु प्रजा को बहुत प्यार करते थे। उन्हें इसका पता चला, तो सोच में पड़ गए।

कुरु ने तय किया कि वह स्वयं वहां जाएंगे। सोने के चमचमाते रथ में वह सवार हुए। राजधानी से दूर जा पहुंचे उस क्षेत्र में। उन्होंने राजसी वस्त्र त्याग दिए। किसान जैसे कपड़े पहन लिए।

कुरु ने अपने कर्मचारियों से कहा कि वे धरती से झाड़-झंखाड़ साफ करने में जुट जाएं। महाराजा ने तय किया कि वह स्वयं हल जोतेंगे।

देवताओं को पता चला कि प्रतापी राजा कुरु खेती के काम में जुटे हैं। देवराज इंद्र वहां आए। उन्हें पता चला कि महाराजा कुरु धर्म की खेती शुरू कर रहे हैं।

इंद्र ने पूछा— "महाराज, धर्म का बीज कहां है, आप उसकी खेती कैसे करेंगे?"

कुरु बोले— "बीज मेरे पास है। हम पसीने से धरती को सींच देंगे। श्रम का बीज उसमें बोएंगे।"

इंद्र ने उन्हें वरदान दिया कि तुम्हारी यह भूमि पवित्र हो जाए। इसमें खूब पैदावार हो।

बस, उसी भूखंड को कुरु के नाम पर कुरुक्षेत्र कहा गया।

—रचना कुमार



दासी से रानी

—डा. महाराज कृष्ण जैन

चीन के हान प्रांत की बात है। किसी दरिद्र किसान के घर एक सुंदर कन्या ने जन्म लिया। उसका नाम चिंग ली रखा गया। एक महान संन्यासी ने चिंग ली का मस्तक देकर भविष्यवाणी की—'यह कन्या परम रूपवती ही नहीं, बुद्धिमती भी होगी। एक विशाल देश की पटरानी बनेगी।'

चिंग ली के पिता लाओ क्वान ने कहा—"हम लोगों को भरपेट रोटी तो नसीब होती नहीं। फिर मेरी बेटी राजमहल तक पहुंचने का सपना कैसे देख सकती है?"

साधु ने कहा—"लाओ क्वान, चिंग ली के भाग्य में जो है, वह उसे अवश्य मिलेगा। वह पटरानी ही नहीं बनेगी, अपने देश का शासन भी चलाएगी।"

साधु की बात आहिस्ता-आहिस्ता सब भूल गए। चिंग ली धीरे-धीरे सयानी होने लगी। उसका रूप दिनों-दिन निखरने लगा। गांव में उसे शिक्षा तो मिली नहीं, फिर भी वह सिलाई-कढ़ाई, गाने-बजाने,



चित्रकला आदि में निपुण हो गई। उसके माता-पिता उसके विवाह की चिंता करने लगे।

एक दिन गांव में चीन के सम्राट ताओ तेंग पू की ओर से घोषणा की गई—युवराज झांग फू विवाह योग्य हो गए हैं। अतः राज्य के हर प्रांत की सबसे सुंदर कन्या को राजभवन में भेज दिया जाए। जो सबसे अधिक रूपवती व गुणवती होगी, उससे युवराज का विवाह होगा। शेष महल में दासियां बनकर सुखपूर्वक रहेंगी।

बहुत से लोग अपनी बेटियों को महल में भेजना चाहते थे। उस जमाने में रानी की दासी बनना भी बहुत बड़ी बात मानी जाती थी।

चीन के सभी बारह प्रांतों से एक-एक कन्या राजभवन में पहुंच गई। उनमें चिंग ली भी थी। सम्राट ने युवराज के लिए कन्या का अंतिम चुनाव अपने पुरोहित काओ काई पर छोड़ रखा था। पुरोहित काओ काई था तो बहुत बड़ा पंडित और विद्वान। सम्राट को उस पर पूरा विश्वास भी था। किंतु वह बहुत लालची था। सोचने लगा—'मैं उस लड़की को रानी बनवाऊंगा, जो मुझे सबसे अधिक रिश्वत देगी।'

सभी लड़कियों में चिंग ली सबसे अधिक गुणवती व श्रेष्ठ सुंदरी थी। पुरोहित ने सब की परीक्षा ली। उसमें भी चिंग ली प्रथम आई। किंतु लालची काओ काई ने एक और लड़की को, जिसने उसे भारी रिश्वत दी थी, रानी बनाने की सिफारिश कर दी।

एक भव्य समारोह में उस लड़की का विवाह युवराज झांग फू से हो गया। चिंग ली तथा अन्य लड़कियां दासी बनकर महल में रहने लगीं। चिंग ली के पिता लाओ क्वान को यह समाचार मिला, तो उसने सोचा—'संन्यासी का वचन झूठा निकला।'

चीन की पश्चिमी सीमा पर मंगोल सम्राट बांग जो का विशाल साम्राज्य था। मंगोल असभ्य और निर्दयी लोग थे। कला-कौशल, विद्याओं, शास्त्रों और धर्म का उन्हें कोई ज्ञान न था। वह केवल लड़ना जानते थे। अपने घोड़ों की टापों से वे खेत, गांव और शहर रौंद डालते थे। घरों में आग लगा देते और



धन-संपत्ति लूटकर ले जाते। समय-समय पर वे चीन पर भी आक्रमण करते रहते थे।

इस बार फिर उनकी सेनाएं चीन की ओर बढ़ीं, तो सम्राट ताओ तेंग पू ने अपने देश को बरबादी से बचाने के लिए मंगोल सम्राट को संधि का संदेश भेजा।

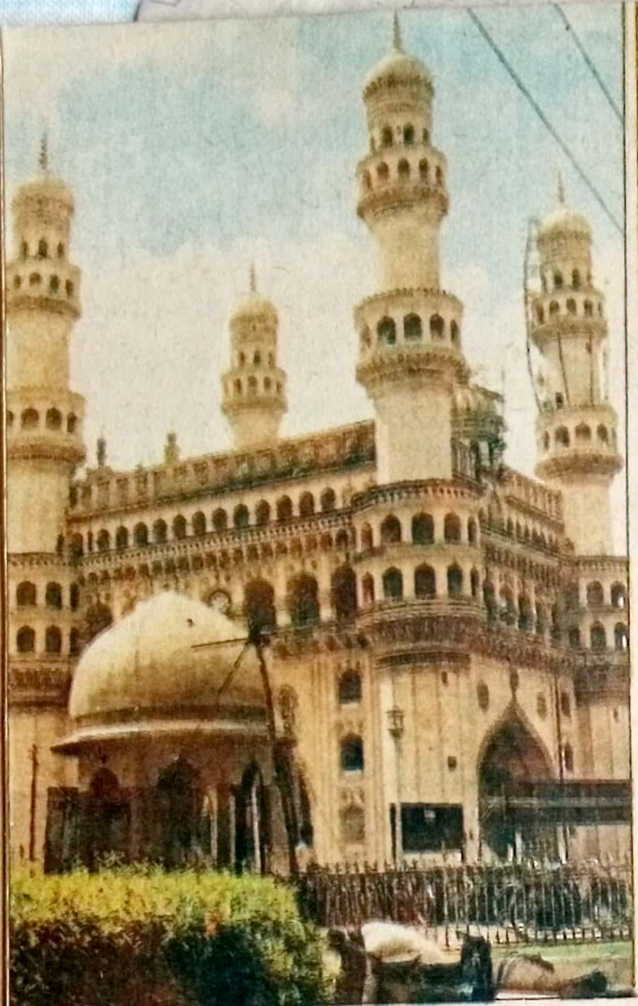
मंगोल सम्राट बांग जो ने शर्त रखी—चीन का सम्राट हमें एक हजार मन सोना, दस हजार मन चांदी और बीस हजार घोड़े भेजे। दस हजार दास-दासियां दे। इसके अलावा अपनी राजकुमारी को हमसे ब्याह दे।

ताओ तेंग पू और सब शर्तें तो मानने को तैयार था, किंतु वह अपनी पुत्री का विवाह मंगोल सम्राट से नहीं करना चाहता था। उसे पता था कि मंगोल कितने असभ्य और गंवार हैं। उसकी सुकुमारी कन्या उनके बीच कैसे जीएगी? उसने एक चाल खेली। अपनी बेटी की बजाय दासी बनी चिंग ली को राजकुमारी बताकर बांग जो से उसका विवाह कर दिया।

विवाह के समय सजी- धजी चिंग ली मंडप में आई, तो झांग फू उसे देखकर चकित रह गया। चिंग ली की तुलना में उसकी रानी तो पासंग भी नहीं थी। वह बड़ा दुःखी हुआ। जांच करने पर उसे पता चल गया कि पुरोहित ने उससे छल किया है। किंतु अब क्या हो सकता था! झांग फू ने अपनी रानी को तो क्षमा कर दिया, किंतु पुरोहित को फांसी दे दी गई।

मंगोल सम्राट बांग जो चिंग ली जैसी सुंदर और सुयोग्य पत्नी पाकर प्रसन्न था। चिंग ली भी राजरानी बनकर बहुत सुखी थी। किंतु एक दिन बांग जो को भी पता चल गया कि चीन सम्राट ताओ तेंग पू ने उससे धोखा किया है। चिंग ली राजकन्या नहीं, बल्कि दासी है। वह क्रुद्ध हो उठा। उसने ताओ तेंग पू को सबक सिखाने का फैसला कर लिया। मंगोल सेनाएं पुनः चीन पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगीं।

यह देख चिंग ली ने अपनी बुद्धिमानी से मंगोल सम्राट को समझा बुझाकर युद्ध से रोक लिया। उसने सम्राट को प्रेरणा दी कि वह प्रजा की भलाई के कामों में अपनी शक्ति लगाए। फलतः सम्राट प्रजा के कल्याण में जुट गया। उसने सड़कें बनवाईं, पेड़ लगवाए, सिंचाई की व्यवस्था की, शिक्षा के लिए पाठशालाएं खोलीं, सुंदर महल और किले बनवाए। विद्वानों से पुस्तकें लिखवाईं। इस प्रकार चिंग ली की प्रेरणा से मंगोल सम्राट का यश दूर-दूर तक फैल गया। इतना ही नहीं सम्राट के हाथों चिंग ली स्वयं शासन चलाने लगी। संन्यासी की भविष्यवाणी अब सच हो गई थी। ●



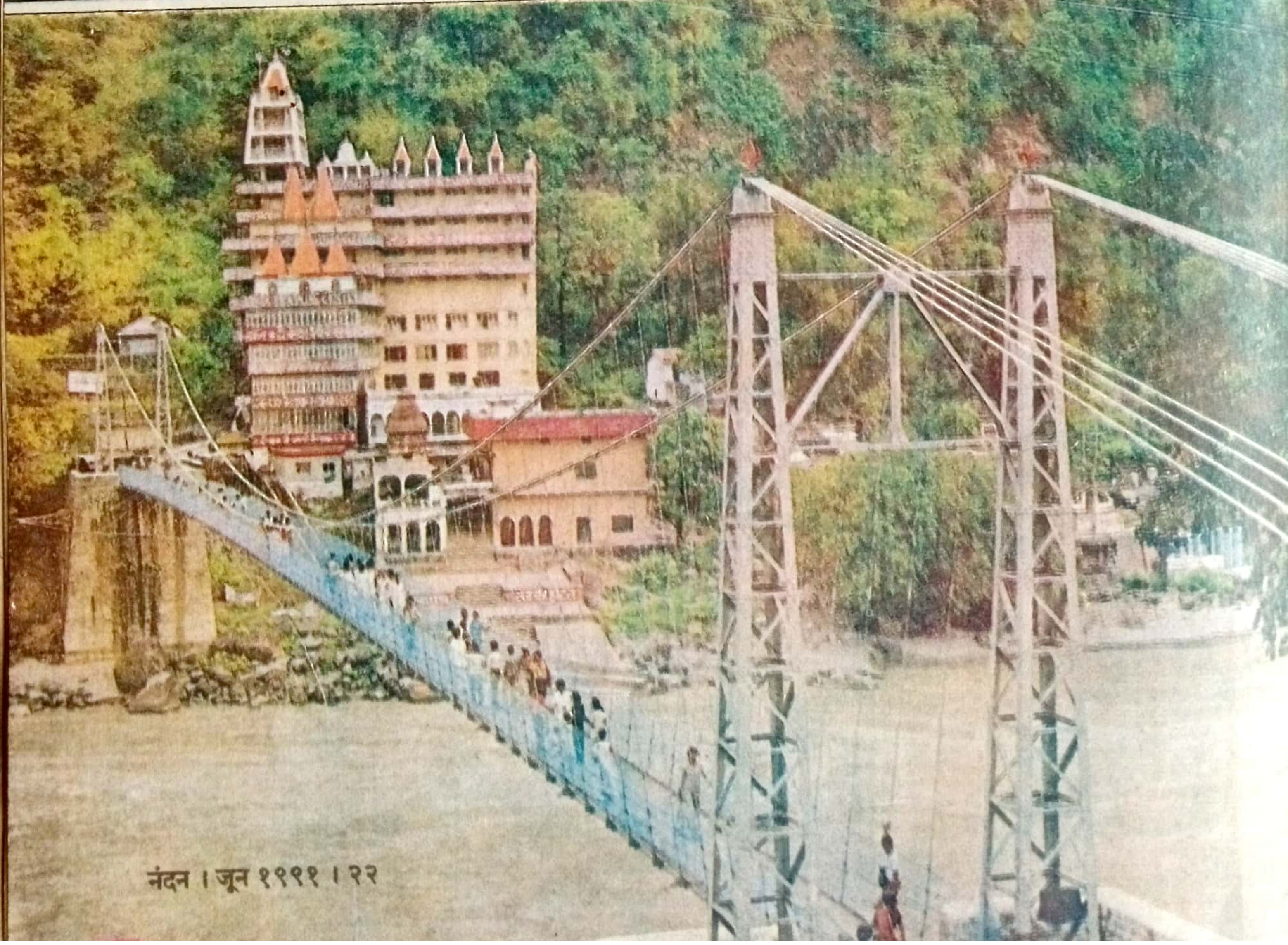
सुनो कहानी ऐ सैलानी

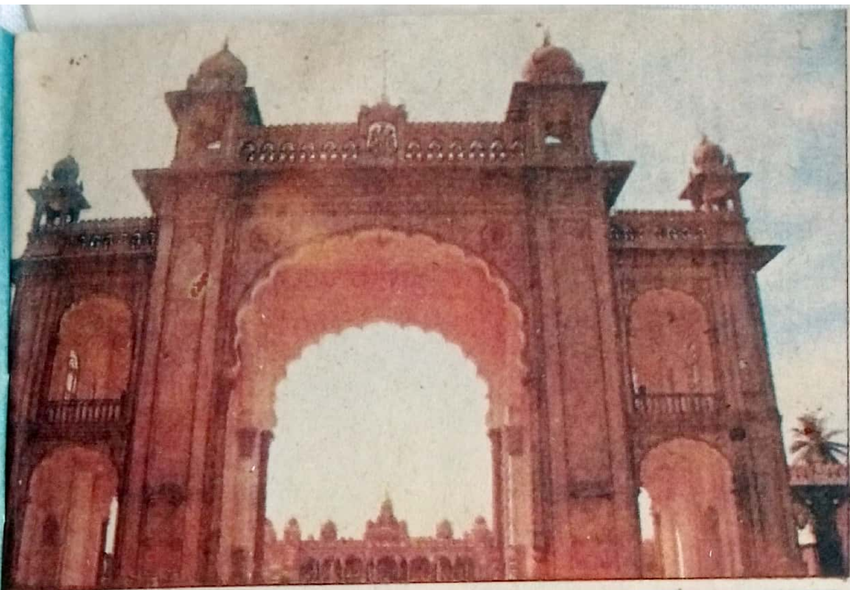


चार मीनार, हैदराबाद :
हिलाओ तो हिलने लगें

कीर्ति स्तम्भ, चित्तौड़गढ़ :
राजपूतों की वीर-गाथा

लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश :
गंगा पर झूलता पुल



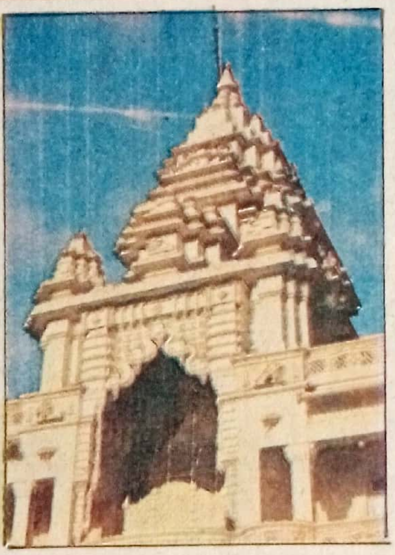


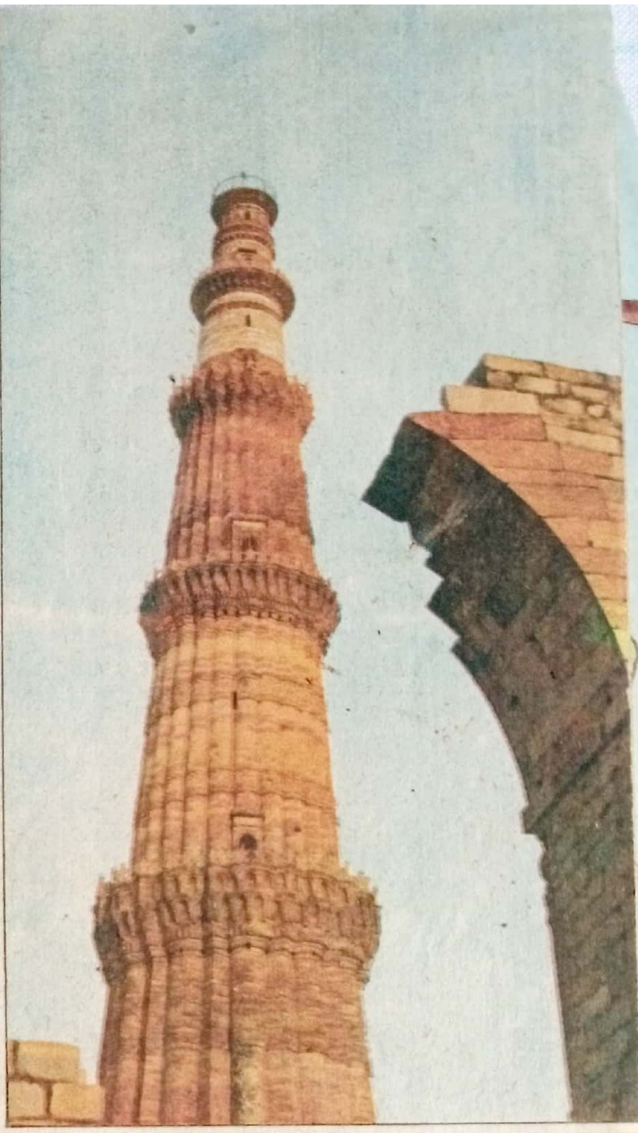
राज महल, मैसूर : धरोहर अतीत की ↑

गांधीधाम, गुजरात :
बापू की याद दिलाए बार-बार →

चित्र : रामकृष्ण शर्मा, शमशेर अ.खान, राजेन्द्रकुमार वधवा, श्यामसुंदर जोशी, शशि शर्मा, राजीव सहाय, रिशी, देवव्रत बनर्जी

कोवलम समुद्र तट, केरल :
↓ शांत, सुंदर और अनोखा

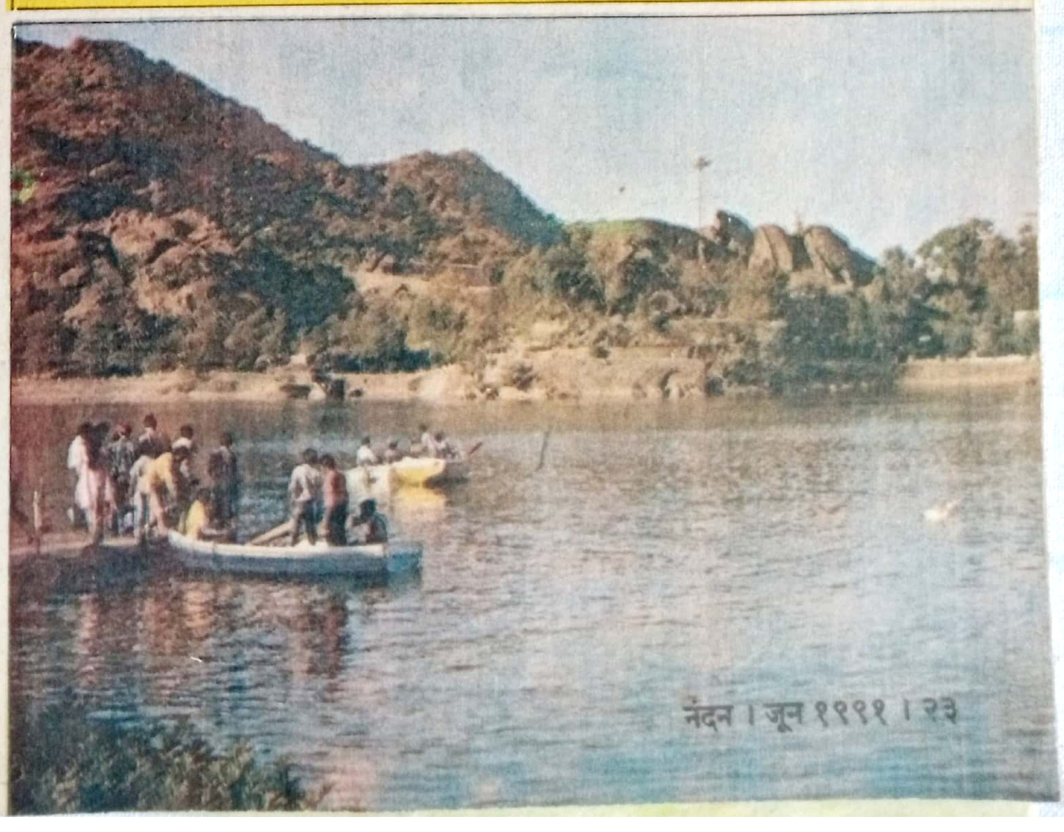


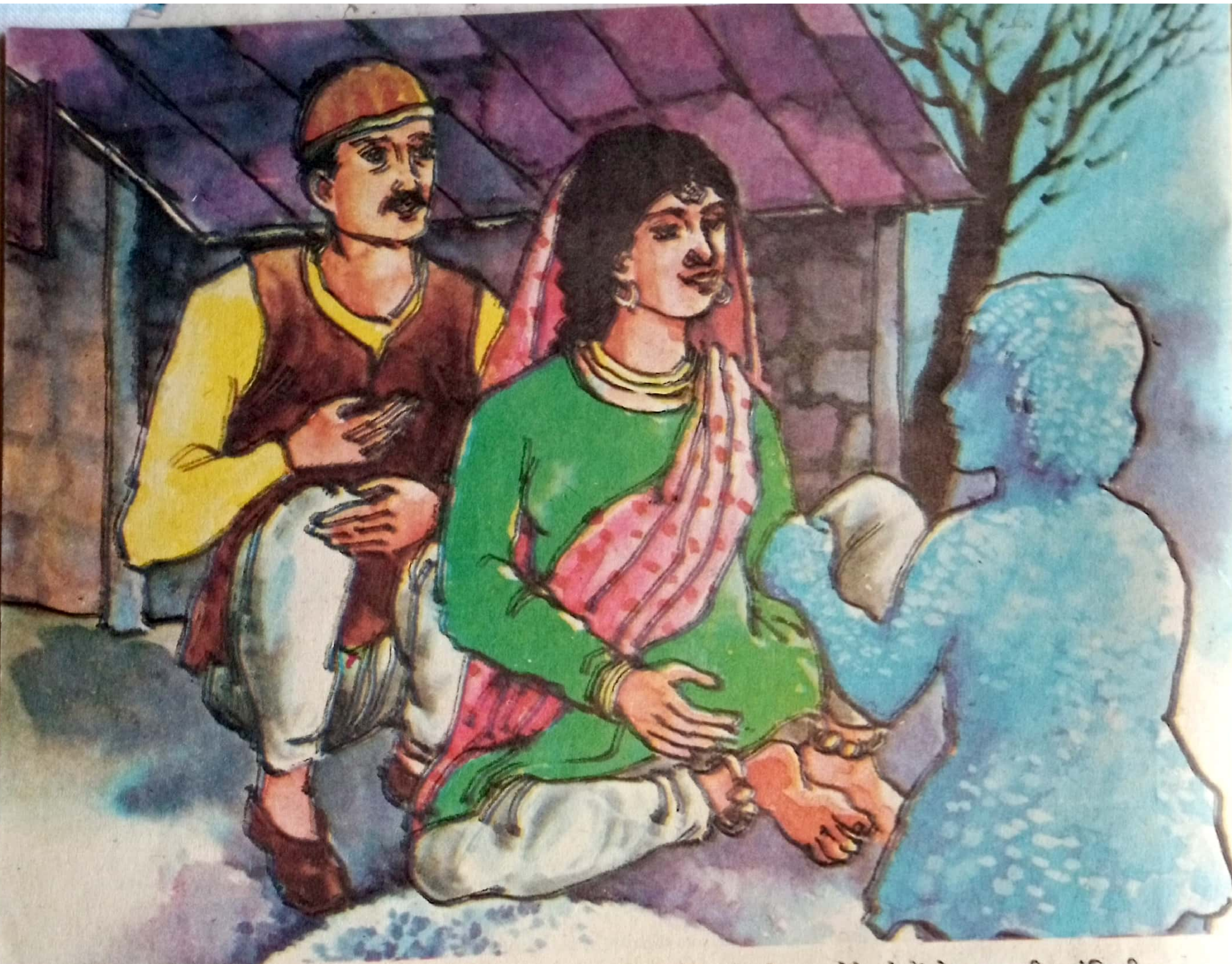


कुतुब मीनार, दिल्ली : कहती है कल का इतिहास ↑

नक्की झील, माउंट आबू : पुराणों में लिखी कहानी ↓







बर्फ की गुड़िया

—जयप्रकाश भारती

किसी गांव में एक किसान रहता था। उसका नाम बंसी था। पत्नी का नाम रूपा था। वह बहुत नेक स्त्री थी। बंसी भी भला और मेहनती था।

बंसी का गांव पहाड़ी घाटी में बसा था। घाटी बहुत उपजाऊ थी। सदा फूलों से ढंकी रहती। इसीलिए उस गांव का नाम फूलगढ़ी था। वहां की जलवायु सुहानी थी। वहां के निवासी बड़े सुख से रहते थे।

बंसी के पास थोड़ी-सी जमीन थी। जमीन सीढ़ीनुमा खेतों में बंटी हुई थी। बंसी मेहनत से घबराता नहीं था। रूपा भी उसके काम में पूरी तरह हाथ बंटाती थी। उन्होंने खेतों के पास ही दुमंजिली झोंपड़ी बना ली थी। नीचे की मंजिल में पशु बांधते थे। ऊपरी मंजिल में स्वयं रहते थे।

बंसी और रूपा को सब सुख थे, किंतु एक बात से वे उदास रहते थे। उनके कोई संतान न थी। कभी-कभी अपने भाग्य पर वे आंसू बहाया करते थे।

सरदी का मौसम आया। बरफ गिरने लगी। गांव के बच्चे बरफ में खेलने लगे। रूपा अपनी झोंपड़ी के आंगन में बैठी थी। उसने बंसी को बुलाकर कहा—"देखो तो, सामने बरफ पर बच्चे कितने खुश होकर खेल रहे हैं। यदि भगवान ने हमें भी एक बच्चा दिया होता, तो कितना अच्छा होता! वह भी इनके साथ खेलता।"

बंसी ने कहा—"जो भाग्य में नहीं है, उसके लिए रोने से क्या लाभ? हमें इन बच्चों को देखकर ही खुश

हो लेना चाहिए। आखिर ये सब बच्चे ही तो हैं।''

किंतु रूपा को बंसी की इस बात से संतोष न हुआ। वह चाहती थी उसका भी एक बच्चा हो। फिर चाहे वह गुड़िया जितना ही छोटा क्यों न हो।

तभी बंसी ने उससे कहा —''हमारा बच्चा नहीं है तो क्या हुआ! हम अपना मन एक गुड़िया से ही बहला लेंगे।''

एकाएक रूपा बोली—''मेरे मन में एक बात आई है। हम बरफ की एक गुड़िया बनाएं। उसी से अपना मन बहला लें।''

बंसी को उसकी बात बहुत पसंद आई—''बहुत अच्छी बात कही तुमने। वह भी तो हमारी बनाई हुई ही होगी। हम ही उसके माता-पिता होंगे। हम उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करेंगे।''

झोंपड़ी का दरवाजा बंदकर दोनों बरफ पर जा पहुंचे। गुड़िया बनाने में जुट गए। काफी देर बाद एक सुंदर-सी गुड़िया तैयार हुई। रूपा ने उसके होंठ और गालों को संवारा। फिर वह गुड़िया की नाक जरा और लम्बी करने लगी। किंतु तभी उसे गुड़िया की नाक से धीमी-धीमी सांस निकलती मालूम पड़ी। लगा जैसे गुड़िया के होंठ धीरे-धीरे हिल रहे हों। रूपा ने अपने पति को झकझोरते हुए कहा—''देखो, देखो, हमारी गुड़िया सांस ले रही है। हे भगवान, इसके तो होंठ भी हिलते दिखाई दे रहे हैं!''

आश्चर्य में डूबे बंसी ने देखा कि रूपा की बात सच थी। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। आंखें फटी की फटी रह गईं। वह पत्नी के पास सरक आया। उन्होंने देखा कि गुड़िया के चेहरे पर स्वर्गिक मुसकान बिखरी हुई है।

दोनों भाग कर दूर जा खड़े हुए। डर के मारे वे चीखने ही वाले थे कि गुड़िया मुसकराती हुई उठी। अपने नन्हे-नन्हे पैरों से चलती हुई उनके पास पहुंची। उसने अपने नरम-नरम हाथ उनके गले में डाल दिए। वह बड़े लाड़ से रूपा की गोदी में आ बैठी।

अब रूपा और बंसी का भय जाता रहा। उनकी आंखों से खुशी के आंसू बह निकले। उन्होंने बारी-बारी से गुड़िया का प्यारा मुख चूमा। फिर वे उसे गोद में उठाकर झोंपड़ी में ले आए।

रूपा और बंसी को मुंहमांगी मुराद मिल गई थी। उन्होंने अपनी नन्ही बच्ची का नाम गुड़िया ही रखा। वे हर समय गुड़िया को अपने पास रखते। हर समय उसके साथ खेलते रहते। गुड़िया को लेकर कई बार तो दोनों में झगड़ा भी होने लगता। कभी-कभी वे गुड़िया से पूछते कि वह किसकी बेटी है? गुड़िया इसके उत्तर में कभी रूपा से जा लिपटती, तो कभी बंसी की गोद में जा बैठती।

इस तरह गुड़िया धीरे-धीरे बढ़ने लगी। अब वह घर से बाहर आने-जाने लगी। गांव के दूसरे बच्चों के साथ खेला करती। रूपा और बंसी झोंपड़ी के आंगन में बैठे उसके खेल देखा करते।

गुड़िया को गांव के सभी बच्चे प्यार करते थे। हर समय हंसती ही रहती थी। उसे आंख-मिचौनी का खेल बहुत प्यारा लगता था। बरफ में वह इस तरह छिप जाती कि उसे पहचान पाना कठिन होता। गुड़िया को फूलों से भी बड़ा प्रेम था। वह अपने साथियों के साथ जंगल में चली जाती।

गुड़िया के माता-पिता उसे गांव से दूर जाने को मना किया करते। जब वह लौटने में देर लगा देती, तो उन्हें बड़ी चिंता हो जाती।



कभी-कभी वे छिपकर गुड़िया के पीछे जाते । जहां सब बच्चे खेलते होते, वहीं पास की झाड़ियों में जा छिपते । गुड़िया का खेलकूद देखते रहते, फिर सामने आकर उसका मुंह चूम लेते ।

गुड़िया की एक बात बड़ी अजीब थी । सरदी के मौसम में वह सदा खेलती और खुश रहती । लेकिन गरमी का मौसम आता तो उसकी तबीयत खराब होने लगती । उसका स्वास्थ्य गिरने लगता । चेहरा पीला पड़ जाता, होंठों का गुलाबीपन कम हो जाता । वसंत में बरफ समाप्त होने लगती है । चारों ओर फूल खिल उठते हैं । किंतु गुड़िया को यह भी अच्छा न लगता । वह झोंपड़ी के अंदर पड़ी रहती ।

उसकी यह दशा देखकर माता-पिता घबरा जाते । वे उसे हर तरह से प्रसन्न रखने की कोशिश करते, किंतु गुड़िया पर कोई असर न होता । वह वैसी ही उदास बनी रहती । सरदी आने पर वह ठीक हो जाती । उसकी खोई हुई शक्ति लौट आती । गालों पर सुरखी दौड़ जाती, फिर से प्रसन्न रहने लगती ।

गुड़िया की उदासी का कारण रूपा और बंसी की समझ में आ गया । वे जान गए कि गुड़िया का कोमल शरीर गरमी सहन नहीं कर पाता । उन्होंने तय किया कि वे गांव छोड़कर पहाड़ पर और ऊपर चले जाएंगे जहां सदा ठंड रहती है ।



रूपा और बंसी को गांव छोड़ने में कष्ट हो रहा था । उनकी जमीन और झोंपड़ी हाथ से जा रही थी । किंतु अपनी गुड़िया का दुःख दूर करने के लिए वे हर कष्ट उठाने को तैयार थे ।

गांव के बच्चों ने सुना, तो वे गुड़िया को मनाने लगे । बच्चे सोच रहे थे कि गुड़िया उनसे नाराज होकर जा रही है । गुड़िया को भी अपने साथियों के बिछुड़ने का बड़ा दुःख था, लेकिन...

आखिर रूपा और बंसी गुड़िया के साथ गांव छोड़कर चल दिए । गांव वाले उन्हें विदाई देने आए । बच्चे गुड़िया को घेरे हुए थे । सारे गांव ने रोते-रोते उन्हें विदा दी ।

शाम को वे नए गांव राजगढ़ी पहुंचे । यह गांव काफी ऊंचाई पर था । वहां से उन्होंने फूलगढ़ी को देखा तो जैसे कुछ होने लगा । राजगढ़ी में हमेशा ठंड रहती थी । साल में सात-आठ महीने तो वहां बरफ ही बरफ जमी रहती थी ।

बंसी ने सबसे पहले एक झोंपड़ी तैयार की—वैसी ही जैसी फूलगढ़ी में थी । खेती की जमीन का भी प्रबंध हो गया । गुड़िया जल्दी ही वहां के बच्चों में घुलमिल गई ।

राजगढ़ी के ऊपर चीड़ का घना जंगल था । वहां बहुत से जंगली जानवर रहा करते थे । कभी-कभी कोई भूखा-प्यासा जानवर गांव की ओर भी निकल आता । एक दिन गुड़िया अपने साथियों के साथ आंख-मिचौनी खेल रही थी, तभी एक रीछ आता दिखाई दिया । बच्चे डरकर भागने लगे । गुड़िया ने रोककर कहा—"डरो मत । हो सकता है, बेचारा भूखा-प्यासा हो ।"

रीछ सचमुच पानी की तलाश में था । उसने बच्चों से पूछा—"प्यारे बच्चो, यहां पानी कहां मिलेगा ?"

बच्चे डर रहे थे, पर गुड़िया हिम्मत करके आगे आई । उसने रीछ से कहा—"हम तुम्हें पानी तो बता देंगे, पर हमारी एक शर्त है । मानोगे क्या ?"

"क्या शर्त है ?"— रीछ ने पूछा ।

—"सब बच्चों को नाच दिखाना होगा ।"

बाल-साहित्य की श्रेष्ठ कृतियां : हिंदी

बर्फ की गुड़िया— चौबीस वर्ष पहले यह उपन्यास 'राजा भैया' के कई अंकों में लगातार प्रकाशित हुआ था। उसके बाद पुस्तक के रूप में छपा। इसके अनेक संस्करण हो चुके हैं। यहां इसी प्रसिद्ध उपन्यास की संक्षिप्त कथा दी जा रही है।

गुड़िया की बात सुनकर रीछ बहुत खुश हुआ। बोला—"नाच देखना है तो घुंघरू ले आओ।"

बच्चों को रीछ से बात करके मजा आ रहा था। अब डर नहीं था। कुछ बच्चे गांव में जाकर गुड़ ले आए। कुछ पानी लाए। सात किलो गुड़ और पांच बाल्टी पानी पीकर रीछ ने संतोष की सांस ली। तब तक बच्चे ढोल और घुंघरू ले आए थे।

रीछ बोला—"तुम मेरे पैरों में घुंघरू बांध दो।"

गुड़िया ने पूछा—"जब मैं तुम्हारे पैरों में घुंघरू बांधूंगी, तो मुझे काटोगे तो नहीं ?"

रीछ ने कहा—"भला मित्र को भी कोई काटता है ? मैं तो बस अपने दुश्मनों को काटता हूं।" बच्चों के कहने पर रीछ अपने दुश्मन की कहानी सुनाने लगा। —"तब मैं नाहर पासी का रीछ था। वह मुझे गांव-गांव नचाकर रोजी कमाता था। लेकिन वह मुझे परेशान नहीं करता था। एक बार गांव में पानी नहीं बरसा। कुओं और तालाबों का पानी सूखने लगा।

शाम का समय था, मैं खूंटे से बंधा हांफ रहा था। घर में एक बूंद पानी न था। गांव के तीन कुएं सूख गए थे, चौथा जमींदार दुर्जन सिंह का था। वहां लोग पानी भर रहे थे, पर मेरा मालिक वहां नहीं जा रहा था। क्योंकि वह हरिजन था। उसे मालूम था कि जमींदार उसे अपने कुएं से पानी नहीं लेने देगा।

मालिक का पांच साल का लड़का प्यास से बेचैन हो उठा, तो वह कुएं पर जा पहुंचा। उसे पानी के बदले गालियां मिलीं। इस पर मैंने कहा—"मेरी रस्सी खोल दो और कुएं पर चलो।"

नाहर मेरे साथ जाकर कुएं से पानी भरने लगा मैं पास ही खड़ा था। एक आदमी उसे मारने झपटा, तो मैंने उसे उठाकर पटक दिया। शोर सुनकर ठाकुर दो नौकरों के साथ आया, तो मैंने उन्हें भी नहीं छोड़ा। घायल होकर सब भाग गए।

उसी रात हमने गांव छोड़ दिया और एक शहर में चले गए। वहां नाहर ने कहा— 'अब मैं तुम्हारा खेल नहीं दिखा सकूंगा। मुझे छिपकर रहना होगा। तुम जंगल में चले जाओ।' बस, तब से मैं जंगल में रहता हूं। जब मैं उन्हें छोड़कर आया था, तो मालिक का नन्हा बेटा कल्लू बहुत रोया था।"

यह घटना सुनाने के बाद रीछ ने खूब बढ़िया नाच दिखाया। बच्चे हंसने लगे। गुड़िया खुद भी ताली बजा-बजाकर नाचने लगी।

शाम हो चली थी। नाच खत्म हुआ, तो बच्चे गांव की तरफ लौटने लगे। रीछ को गुड़िया बहुत पसंद आई थी। वह सोचने लगा—'यदि गुड़िया मेरे साथ रहने लगे, तो कितना अच्छा हो !' यह सोचकर बच्चों के पीछे-पीछे चल दिया। गुड़िया अपने घर के दरवाजे पर पहुंची तो उसने रीछ को देखा। बोली—"आ जाओ। यह मेरा घर है।"

रीछ ने मौका देखकर बंसी से अपने मन की बात कही। बोला— "आप गुड़िया को मेरे साथ भेज दीजिए। मैं इसे बहुत आराम से रखूंगा।"

बंसी ने साफ मना कर दिया। कहा—"यह हमारी अकेली संतान है। इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकेंगे।" यह सुनकर, रीछ वहां से उठकर चला गया। वह उदास था।

बसंत के अवसर पर राजगढ़ी में एक बड़ा उत्सव मनाया जाता था। इस बार भी खूब तैयारियां की गईं। शाम के समय मैदान में आग जलाकर बच्चे उसके चारों ओर नाचने लगे। उन्होंने गुड़िया को भी साथ ले लिया था। आंच तेज थी। गुड़िया से वहां खड़ा नहीं हुआ जा रहा था।

राजगढ़ी के रिवाज के मुताबिक सब बच्चे छलांग लगाकर अलाव को पार करते थे। एक दूसरे से गले मिलते थे। सब बच्चों ने आग को पार कर लिया। गुड़िया जैसे ही आग के पास पहुंची, उसके गले से चीख निकली। वह गायब हो गई।

उसकी सहेलियां परेशान होकर ढूंढ़ने लगीं। पर

गुड़िया कहीं न मिली। यह समाचार बंसी और रूपा को मिला तो वे जोर-जोर से रोने लगे। रात भर जंगल में इधर-उधर ढूंढ़ते रहे, पर वह कहीं न मिली।

कुछ दिन बाद, एक रात रूपा को सपना आया। उसमें गुड़िया दिखाई दी। गुड़िया ने बताया—'मां, जब मैं आग के ऊपर से छलांग लगाने वाली थी, तो न जाने कहां से सात लड़कियां आ गईं। वे मेरे हाथ थामकर मुझे एक नए लोक में ले गईं। वह परी लोक है। अब मैं परियों के साथ रहती हूं। तुम से सपने में ही मिल सकूंगी।"

इसके बाद रूपा की नींद टूट गई। वह जोर-जोर से रोने लगी। बंसी भी उठ बैठा। उसने सपना सुना तो वह भी रो पड़ा। दोनों के दिन दुःख से बीतने लगे। वे गुड़िया को भुला नहीं पा रहे थे।

एक दिन रूपा आंगन में बैठी हुई थी। उसकी नजर सामने बर्फ से ढके पर्वत शिखर की ओर थी। अचानक उसने देखा, एक लड़की नंदा देवी की चोटी से उतर रही है। नीचे उतरकर वह दौड़ती हुई रूपा की ओर बढ़ी। रूपा को अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा था—सामने से गुड़िया चली आ रही थी! रूपा ने घबराई आवाज में बंसी को पुकारा —"देखोजी, हमारी गुड़िया आ रही है!"

बंसी ने देखा तो उछल पड़ा। चहककर बोला—"अरे हां, अपनी गुड़िया ही तो है। चलो, उसे ले आएं।" दोनों गुड़िया की तरफ दौड़े। गुड़िया भी उन्हें देखकर दौड़ने लगी। फिर आकर दोनों से लिपट गई। उसे चिपटा कर बंसी और रूपा देर तक रोते रहे। कहते रहे—"अब हम तुझे कभी नहीं जाने देंगे। कहीं नहीं जाने देंगे।"

"हां, मां, कहीं नहीं जाऊंगी मैं। परियों ने मुझे सदा के लिए तुम्हारे पास रहने भेज दिया है। सच।" —गुड़िया ने हंसकर कहा। बंसी और रूपा झूम उठे। वे हंस रहे थे, उसे गोदी में उठाकर नाच रहे थे। उनके होंठ हंस रहे थे और आंखें बरस रही थीं। ये आंसू खुशी के थे।

●

तीन से चार

—डा. रामचन्द्र तिवारी

महर्षि पराशर ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के ज्ञाता थे। महान विद्वान थे। इन तीन वेदों को ही ज्ञान का आधार मानते थे। उनके जीवन का उद्देश्य था— दो धर्म स्थानों की स्थापना-एक बद्रिकाश्रम में और दूसरा कुरुक्षेत्र में।

बद्रिकाश्रम में धर्मस्थान की स्थापना के बाद पराशर कुरुक्षेत्र की ओर चले। उनके साथ उनका पुत्र कृष्ण द्वैपायन और उसका एक मित्र भी था। रास्ता भयानक जंगलों से होकर था। दुर्भाग्यवश रास्ते में इन तीनों पर भेड़ियों ने हमला कर दिया। ऋषि पराशर को मार डाला। कृष्ण द्वैपायन और उसके मित्र को बुरी तरह घायल कर दिया। दोनों बेहोश हो गए।

संयोग से अथर्वन ऋषि अपने शिष्यों सहित उधर से गुजर रहे थे। वह इन दोनों को अपने आश्रम में ले गए। मंत्र-शक्ति और वन की जड़ी-बूटियों से उनका इलाज आरम्भ कर दिया। अपनी पुत्री से दोनों की देखभाल के लिए कहा।

ऋषि अथर्वन औषधियों, तंत्र-मंत्रों तथा अन्य विद्याओं के बहुत बड़े विद्वान थे। मंत्र तथा औषधि-चिकित्सा से कृष्ण द्वैपायन और उसके मित्र को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हुआ। ऋषि पुत्री की सेवा से भी उनकी हालत तेजी से सुधरने लगी।

अथर्वन ऋषि मंत्र उच्चारण करके चिकित्सा करते थे, कृष्ण द्वैपायन सुनते रहते थे। कई बार सुनने के कारण वे मंत्र उस को याद हो गए थे।

कृष्ण द्वैपायन को स्वस्थ देख, एक दिन अथर्वन ने उनका परिचय पूछा। जानना चाहा कि वह और उसका साथी किस प्रकार घायल हुए। कृष्ण द्वैपायन ने सहज भाव से बता दिया कि वह ऋषि पराशर के पुत्र हैं। दूसरा व्यक्ति उनका मित्र और ऋषि पराशर का शिष्य है। वे बद्रिकाश्रम में धर्मस्थान की स्थापना करके, कुरुक्षेत्र के लिए जा रहे थे कि रास्ते में भेड़ियों ने हमला कर दिया। इससे पिता जी की मृत्यु हो गई और

वे दोनों घायल हो गए।

सुनकर ऋषि अथर्वन चिंता में पड़ गए। ज्ञान के क्षेत्र में ऋषि पराशर और ऋषि अथर्वन एक दूसरे के विरोधी थे। ऋषि पराशर उनके औषधि ज्ञान, तंत्र-मंत्र तथा अन्य विद्याओं को निम्न श्रेणी का मानते थे।

अपनी कुटिया में आकर उन्होंने अपनी पुत्री को बुलाकर कहा—"अनजाने में अब तक हम शत्रु पराशर के पुत्र का ही पोषण करते रहे हैं। यह ठीक नहीं हुआ। कुछ करना पड़ेगा।"

ऋषि कन्या कृष्ण द्वैपायन की प्रतिभा से प्रभावित थी। जब उसे पता चला कि कृष्ण द्वैपायन ऋषि पराशर का पुत्र है, तब तो कृष्ण द्वैपायन के प्रति उसकी श्रद्धा और भी बढ़ गई। किंतु अपने पिता के अंतिम वाक्य से वह चिंतित हो उठी। उसे पता था कि ऐसी स्थितियों में उसके पिता कुछ भी कर सकते हैं। इसलिए वह कृष्ण द्वैपायन की देख-रेख के साथ-साथ अपने पिता की गतिविधियों पर भी नजर रखने लगी।

एक रात वह अपनी कुटिया में सोने जा रही थी। तो उसने देखा उसके पिता अपनी कुटिया से निकलकर उस कुटिया में गए हैं, जहां कृष्ण द्वैपायन और उसका मित्र सो रहे थे। उसने दूर से ही देखा कि उसके पिता ने सोते हुए कृष्ण द्वैपायन की शैया के पायों के नीचे कुछ कुश जैसी वस्तु रखी और पूरा चक्कर काटा।

उसको काटो तो खून नहीं। यह तो ऋषि ने मारण प्रयोग किया था, जिस से कृष्ण का बचना असम्भव था। यह सब कर, ऋषि अपनी कुटिया में गए, तो वह भागकर कृष्ण द्वैपायन की शैया के पास आई। कुशांओं को निकाल फेंका। कृष्ण को जगाया और हाथ में एक झोला देते हुए कहा —"इसे लेकर फौरन यहां से भाग जाओ, अन्यथा मेरे पिता तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे। इस झोले में एक जोड़ी वस्त्र और वह दवा है जो तुम्हें पिलाई जाती है। वह पर्याप्त मात्रा में रखी है। इसे लेते रहना। यह जीवन दायिनी है।"

कृष्ण द्वैपायन ऋषि कन्या की बात समझ ही नहीं पाया। जिस ऋषि ने उसके प्राण बचाए, वही उसे जीवित क्यों नहीं छोड़ेंगे? वह कुछ पूछना चाहता था किंतु ऋषि कन्या ने उसे शीघ्र वहां से चले जाने के लिए कहा—"जीवित रहे तो बाद में सब समझा दूंगी। इस समय तुम मंत्र की सीमा से शीघ्र बाहर चले जाओ।"

कृष्ण द्वैपायन के पास जाने के सिवा और कोई चारा नहीं था। तेज-तेज चलता कृष्ण द्वैपायन भूखा प्यासा, फटेहाल हस्तिनापुर पहुंचा। वहां पता चला कि राजा शांतनु बीमार हैं। इसीलिए राजमहल में दीन-हीन लोगों को भोजन कराया जाता है। भूखे-प्यासे वह भी भोजन पाने वालों की पंक्ति में बैठ गए।

युवराज भीष्म व्यवस्था देखने उधर से निकले तो कृष्ण द्वैपायन ने खड़े हो कर उनसे कहा— "यदि अनुमति हो तो महाराज की चिकित्सा का अवसर मुझे भी दिया जाए।" दीन-हीन युवक कृष्ण द्वैपायन का अनुरोध सुनकर भीष्म अविश्वास की हंसी हंसे और बोले— "राज्य भर के श्रेष्ठ वैद्य महाराज की चिकित्सा करके थक गए। तुम दीन-हीन युवक क्या चिकित्सा करोगे!"





कृष्ण द्वैपायन हताश हो, वहां से चल दिए किंतु भूख की विवशता ! पंक्ति के अंत में फिर जाकर बैठ गए ।

परिणाम यह हुआ कि कृष्ण द्वैपायन की बारी आने तक भोजन समाप्त हो गया । कृष्ण द्वैपायन भूखे ही राजद्वार की ओर चल दिए ।

अचानक महारानी सत्यवती की दृष्टि कृष्ण द्वैपायन पर पड़ी । निराश और थके-थके कदमों से जाते कृष्ण को देख, वह पहचान गईं कि वह ऋषि पराशर का पुत्र है ।

सत्यवती ने बुलवाकर पूछा— "भोजन मिला ? कृष्ण द्वैपायन ने इंकार में सिर हिला दिया । महारानी उन्हें महल में ले गईं । स्नान कराके वस्त्र दिए, फिर भोजन करायां ।

कृष्ण द्वैपायन ने महारानी से अनुरोध किया कि वह उसे महाराजा की चिकित्सा का अवसर प्रदान करें । महारानी सहर्ष तैयार हो गईं । उन्होंने युवराज भीष्म को बुलाकर कहा कि जब सभी वैद्य महाराज को स्वस्थ करने में हार चुके हैं, तो इस युवक को भी क्यों न अवसर दिया जाए ? भीष्म महारानी के इस तर्क पर चुप रहे और कृष्ण द्वैपायन को महाराज के पास ले गए ।

कृष्ण द्वैपायन ने महाराज का निरीक्षण किया । अथर्वन ऋषि से सीखे मंत्र तथा उनकी कन्या द्वारा दी हुई औषधि से चिकित्सा शुरू की । धीरे-धीरे महाराज स्वस्थ होने लगे । पंद्रह दिन में ही उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हो गया ।

कृष्ण द्वैपायन की इस सफलता से राज्य भर में उनकी प्रसिद्धि फैल गई । उनका सम्मान होने लगा । महाराज ने राजसभा में सम्मानित पद देकर उन्हें वहीं रख लिया ।

कुछ समय के बाद कृष्ण द्वैपायन नें महाराजा शांतनु से राजसूय यज्ञ कराया । उसके मुख्य होता के रूप में ऋषि अथर्वन को बुलवाया । ऋषि अथर्वन यह देखकर मन में लज्जित हुए कि जिस पराशर-पुत्र को मारने की उन्होंने कोशिश की थी, उसी ने महाराजा के राजसूय यज्ञ का मुख्य होता उन्हीं को बनाया

राजसूय यज्ञ की समाप्ति के बाद अथर्वन ऋषि ने कृष्ण द्वैपायन को अपने आश्रम में बुलाया । अपने आश्रम में उनका समुचित सम्मान करके उन्होंने अपनी पुत्री को डांटकर कहा — "तूने ही जान-बूझकर मेरे मारक पाश से इसे छुड़ाया था ।" पुत्री के काटो तो खून नहीं । उसे अपने पितां के क्रोध का पता था । वह यह देखकर डर गई कि कृष्ण द्वैपायन को भी पिता जी ने आखिर पकड़ मंगाया । अब खैर नहीं । वह थर-थर कांपने लगी ।

ऋषि अथर्वन फिर बोले — "मैं तुम दोनों को दंड दिए बिना नहीं रहूंगा । ऐसा दंड दूंगा, जो आजीवन भोगना पड़े ।"

वह दंड था — दोनों को विवाह सूत्र में बांधने का दंड, जिसे दोनों ने सहर्ष स्वीकार किया ।

बाद में जब महर्षि कृष्ण द्वैपायन ने बद्रिकाश्रम में वेदों का सम्पादन किया, तो अथर्वन ऋषि के सूत्रों को संकलित कर उसे अथर्ववेद का नाम दिया, उसे चौथे वेद के रूप में मान्यता दी । तभी से तीन के स्थान पर चार वेद संसार में प्रचलित हुए । यही कृष्ण द्वैपायन बाद में वेदव्यास कहलाए । ●

अपना देश

अपना देश हमको प्यारा है, प्यारा है
हमने सपनों से जिसको संवारा है,
अपना देश हमको प्यारा है, प्यारा है।
सदियों का इतिहास कि जिसकी गौरव-गाथा गाए,
जिसने हमको मानवता के पहले पाठ पढ़ाए,
शांति, अहिंसा और कर्म की जो सुख-धारा है।

जिसने कभी प्रगति के पथ पर नूतन चिह्न लगाए
ज्ञान और विज्ञान सभी में अपने कदम बढ़ाए,
जिसने तन के साथ हृदय सौंदर्य निखारा है।

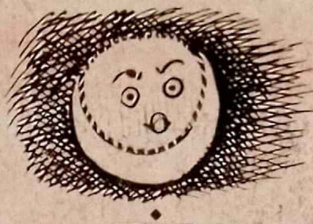
जिसने उन सबको अपनाया जो थे कभी पराए
जिसकी कोमल मिट्टी मन को हंसकर गले लगाए,
प्यार, मुहब्बत, दया, क्षमा यह जिसका नारा है।

पराधीन होकर भी जिसने प्रिय आदर्श न छोड़े,
सत्य, अहिंसा के पथ पर चल, बंधन अपने तोड़े,
जिसने जग को चकित किया, वह देश हमारा है।

जो अब युग के साथ चल रहा, अपने कदम मिलाए,
धरती ही क्या, अंतरिक्ष तक जिसने पद फैलाए,
ऊंचा होता जाता जिसका भाग्य सितारा है।

—मदनलाल मधु





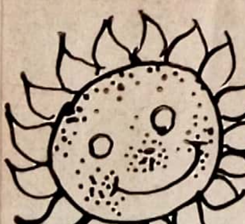
चांद

आसमान पर ही रहता, क्यों
नीचे नहीं उतरता चांद ?
मां ! बतलाओ, क्यों मुझसे
हर रात ठिठोली करता चांद ?

दूर-दूर ही चमका करते
ये झिलमिल-झिलमिल तारे,
पिछलग्गू चंदा के जैसे
लगते सारे के सारे।
इनसे भी, बादल में छिपकर
आंख-मिचौली करता चांद !

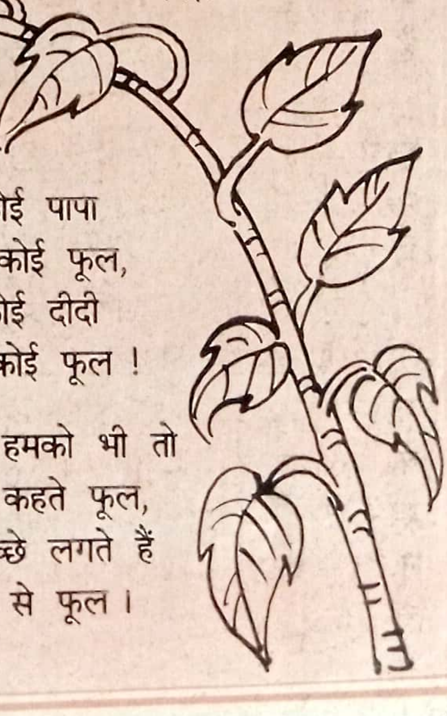
मैंने कहा एक दिन, मेरे
आंगन में भी आ जाओ,
दूध-भात की खीर बनी है
मीठी-मीठी, खा जाओ।
पर लगता है, मेरे जैसे
छुटकू से भी डरता चांद !

—रमेश तैलंग





जोकर जैसा फूल





हम बस इनकी कौली भर लें
ऐसा जी ललचाते फूल,
कोना-कोना घर सजा लें
ले गुच्छों के गुच्छे फूल।

खुशबू भी तो अपने भीतर
गुपचुप-गुपचुप रखते फूल,
हवा गुदगुदी करती है जब
उसे उड़ाते हंस के फूल।

कोई दादा, कोई पापा
मां के जैसा कोई फूल,
कोई भैया, कोई दीदी
जोकर जैसा कोई फूल !

दादा जी पर हमको भी तो
बड़े प्यार से कहते फूल,
जाने क्यों अच्छे लगते हैं
ये हंसते-गाते से फूल।

—दिविक रमेश

लिखा देखा

—सत्येंद्र शरत्

बर्द्धवान प्रदेश में महाराज सिंहवर्द्धन राज करते थे। उनके शासन काल में जनता बहुत सुखी थी। सिंहवर्द्धन स्वयं एक कुशल शासक थे। उन्होंने मंत्रियों का चुनाव भी बहुत सावधानी से किया था। सभी मंत्री बहुत योग्य, अनुभवी और अपने-अपने कार्य में चतुर थे। प्रमुख मंत्री अतुल देव, अब बहुत बूढ़े हो गए थे। वह तो जैसे विशेषताओं के भंडार ही थे। उनकी कीर्ति बर्द्धवान प्रदेश में ही नहीं, समूचे बंगाल में फैली हुई थी।

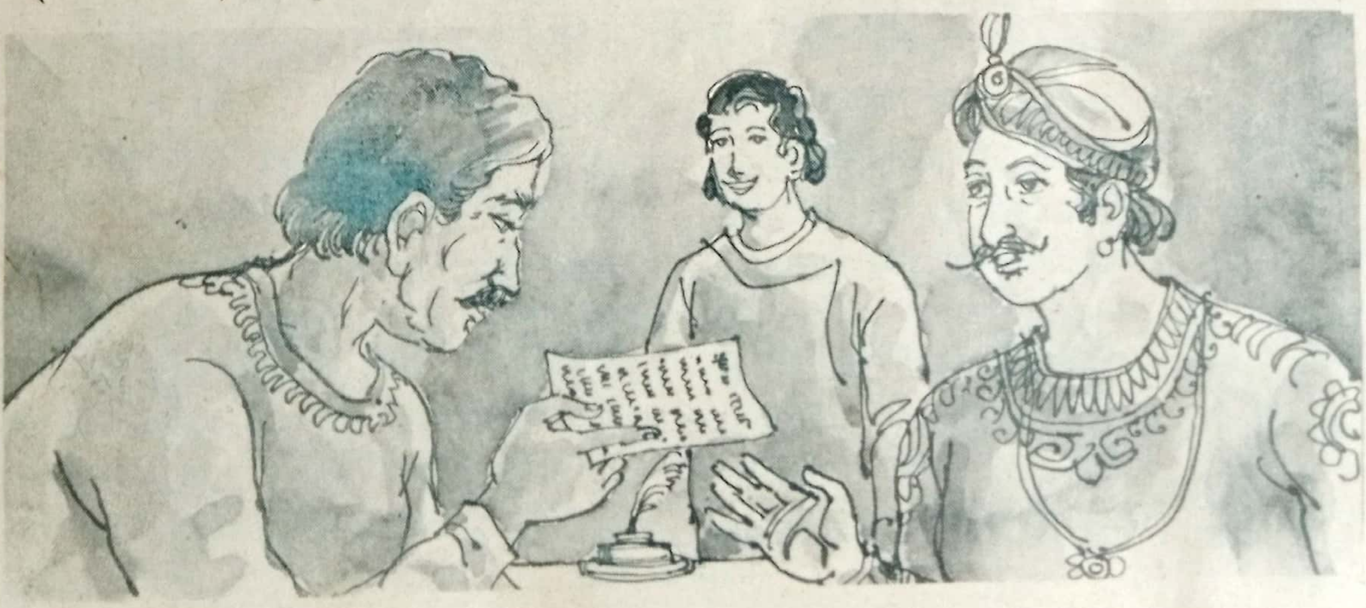
कहा जाता था कि उनका कुटुम्ब बहुत फैला हुआ था। उनके परिवार में लगभग सौ सदस्य थे। ये सब एक ही हवेली में रहते थे। साथ भोजन करते, साथ ही आमोद-प्रमोद करते। साथ ही पर्व-उत्सव और त्यौहार मनाते। उनमें किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा नहीं देखा गया। परस्पर प्रेम और सद्भावना के कारण अतुल देव का परिवार आदर्श माना जाता था। उनके परिवार के सम्बंध में अनेक कहानियां दूर-दूर तक फैल गई थीं।

ये कहानियां महाराज सिंहवर्द्धन के कानों तक भी पहुंचीं। उन्हें विश्वास नहीं हुआ। वह सोचने लगे—'इतने विशाल संयुक्त परिवार में सब स्नेह और सद्भावना के साथ, मिल-जुलकर कैसे रहते हैं?' सच क्या है, यह स्वयं अपनी आंखों से देखने की इच्छा थी उनकी। सिंहवर्द्धन एक दिन बिना कोई सूचना दिए, अतुल देव के घर जा पहुंचे। उन्होंने जैसा सुना था, वैसा ही वातावरण देखा वहां।

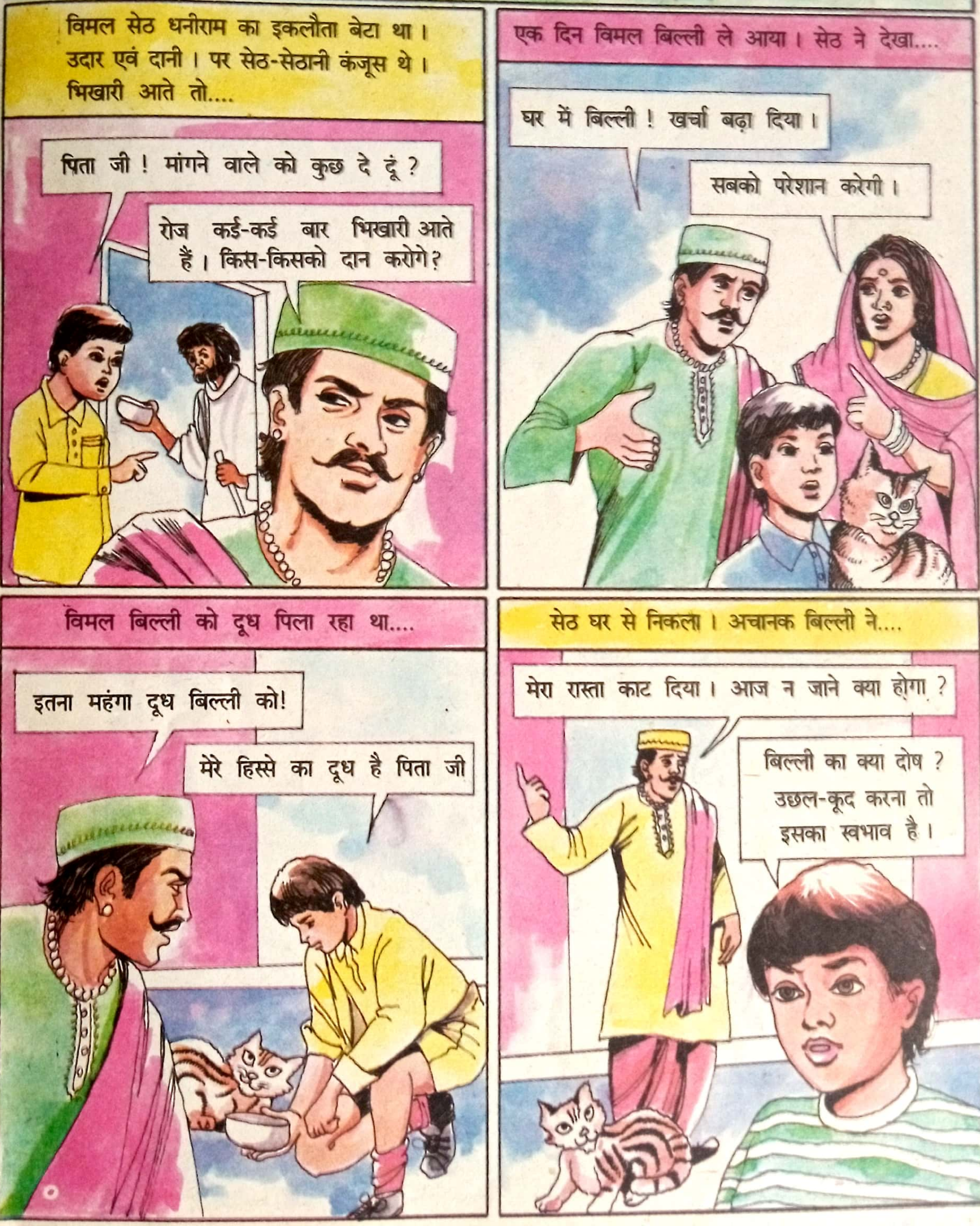
महाराज सिंहवर्द्धन अपने विस्मय को अधिक देर तक नहीं रोक सके। उन्होंने अतुल देव से प्रश्न किया—"मंत्री जी, मैंने आपके परिवार के बारे में जो सुना था, उसे आज अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख लिया है। सचमुच आपका परिवार आदर्श है। लोग ठीक कहते हैं कि आपका घर धरती पर स्वर्ग है। आखिर इस विशाल परिवार के बीच यह स्नेह और माधुर्य किस प्रकार बना हुआ है?"

बहुत वृद्ध होने के कारण अतुल देव अधिक देर बात नहीं कर सकते थे। महाराज सिंहवर्द्धन का प्रश्न सुनकर वह मुसकराए। उन्होंने परिवार के एक सदस्य को अपने पास आने का संकेत किया। वह कागज और लेखनी लेकर उनके निकट आ बैठा। अतुल देव ने कागज अपने सामने रखा और लेखनी उठाकर कांपते हाथ से कागज पर लिखने लगे।

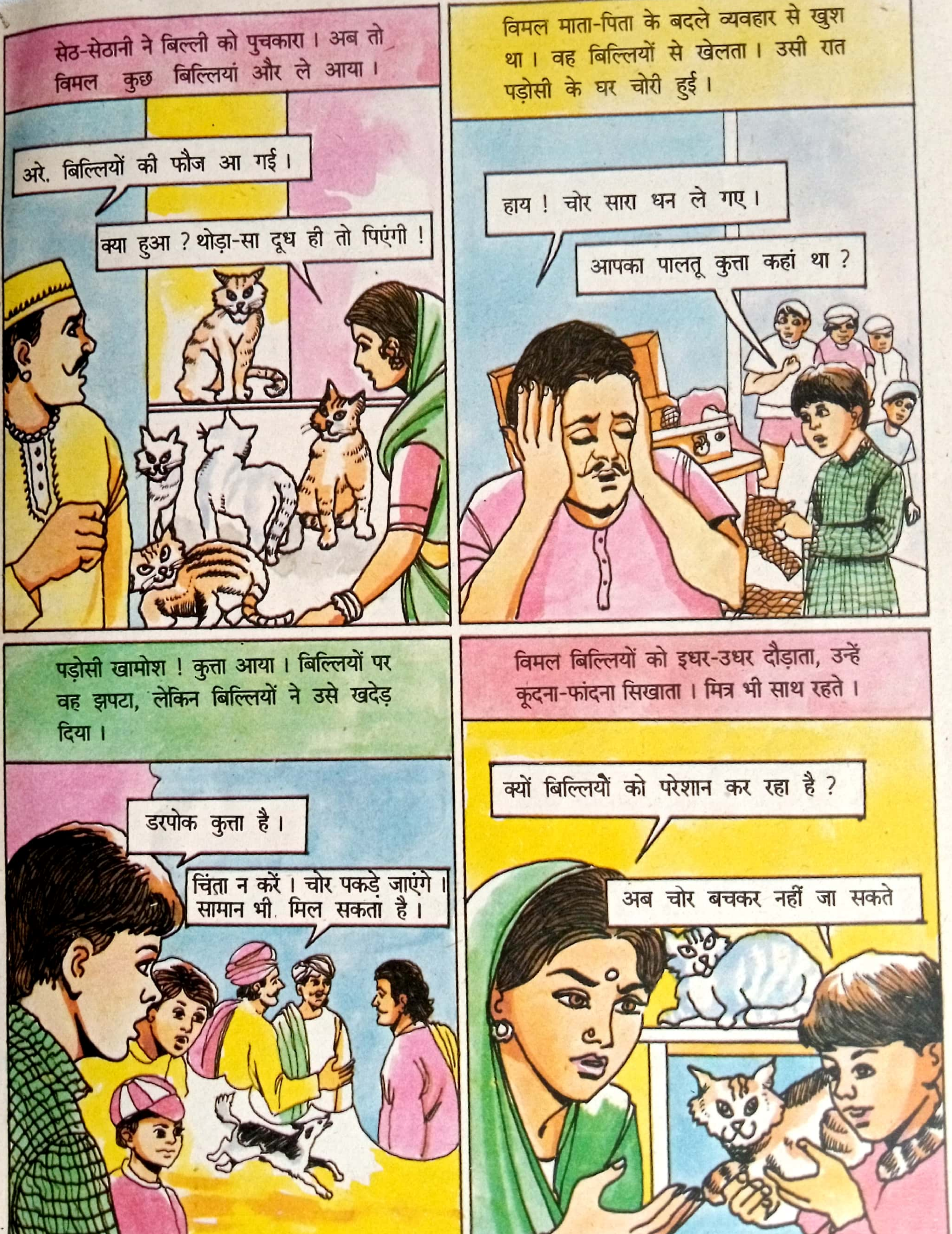
लिखना समाप्त कर अतुल देव ने कागज सिंहवर्द्धन की ओर बढ़ा दिया। महाराज ने अतुल देव से कागज ले लिया। उसे आश्चर्य से देखते रह गए—मंत्री अतुल देव ने एक ही शब्द पूरे कागज पर बार-बार लिख रखा था। वह शब्द था—सहनशीलता।

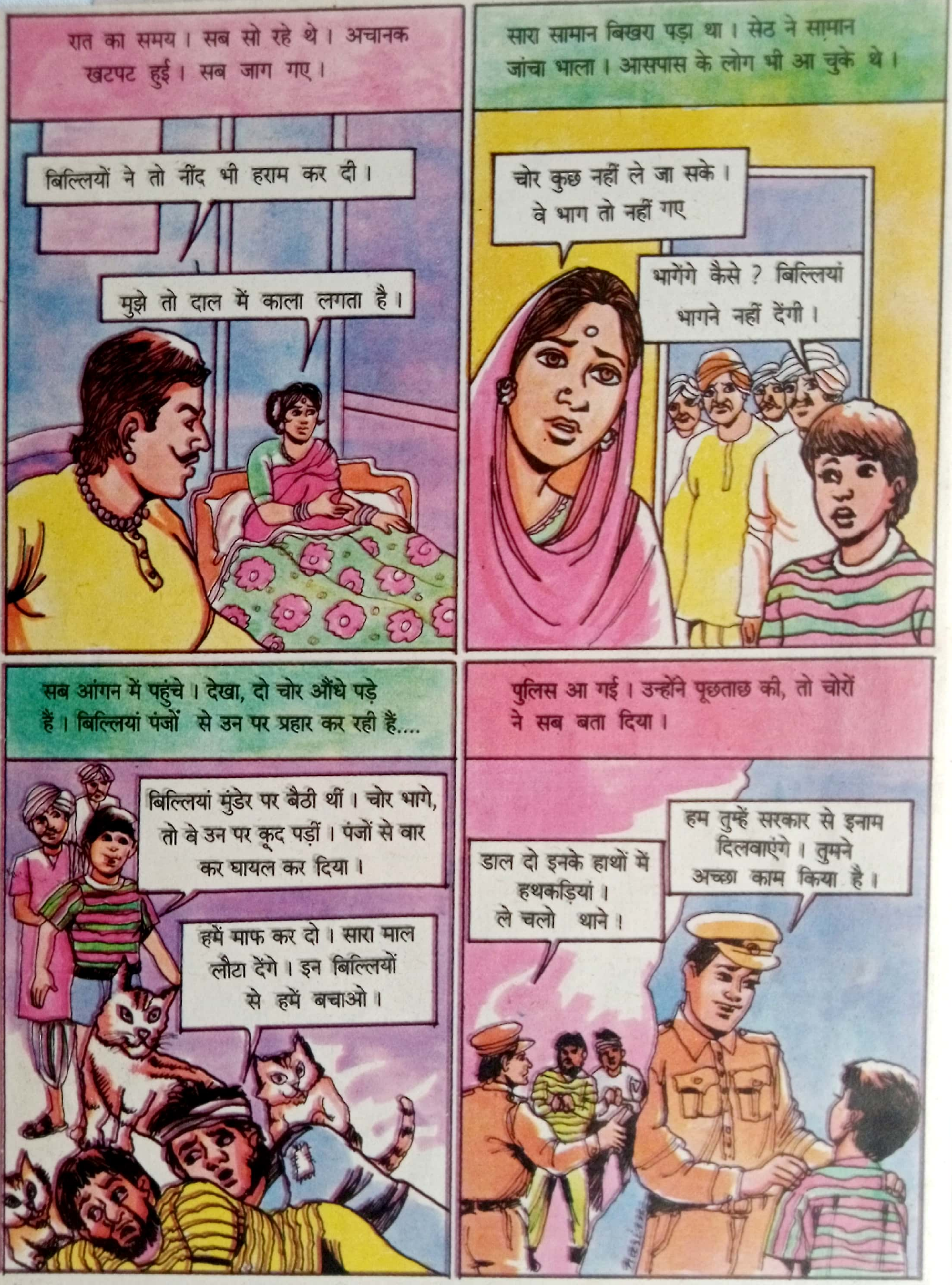


बिल्ली और चोर


विमल सेठ धनीराम का इकलौता बेटा था। उदार एवं दानी। पर सेठ-सेठानी कंजूस थे। भिखारी आते तो....
पिता जी! मांगने वाले को कुछ दे दूं?
रोज कई-कई बार भिखारी आते हैं। किस-किसको दान करोगे?
एक दिन विमल बिल्ली ले आया। सेठ ने देखा....
घर में बिल्ली! खर्चा बढ़ा दिया।
सबको परेशान करेगी।
विमल बिल्ली को दूध पिला रहा था....
इतना महंगा दूध बिल्ली को!
मेरे हिस्से का दूध है पिता जी
सेठ घर से निकला। अचानक बिल्ली ने....
मेरा रास्ता काट दिया। आज न जाने क्या होगा?
बिल्ली का क्या दोष? उछल-कूद करना तो इसका स्वभाव है।


सेठानी को सहेली की शादी में जाना था। वह हार खोज रही थी। और हार....
यहीं सिरहाने रखा था। लगता है, उसे कमबख्त बिल्ली उठा ले गई।
जल्दी करो मां! देर हो रही है।
सेठ घर लौटा। सेठानी को मुंह लटकाए देखा....
मेरा सोने का हार नदारद है।
जेब से पचास का नोट गायब है।
सेठ का पारा चढ़ गया। बरस पड़ा।
परीक्षा नजदीक है! पढ़ाई करो।
सारा दिन बिल्ली से खेलता ही रहता है।
पढ़ता तो हूं
तभी बिल्ली वहां आई। उसने पंजे में कुछ दबा रखा था। विमल ने देखा, तो....
मेरा हार भी मिल गया। सब चूहे की करामात है।
यह रहा पचास का नोट चूहे ने कुतर दिया।


सेठ-सेठानी ने बिल्ली को पुचकारा। अब तो विमल कुछ बिल्लियां और ले आया।
अरे, बिल्लियों की फौज आ गई।
क्या हुआ? थोड़ा-सा दूध ही तो पिएंगी!
विमल माता-पिता के बदले व्यवहार से खुश था। वह बिल्लियों से खेलता। उसी रात पड़ोसी के घर चोरी हुई।
हाय! चोर सारा धन ले गए।
आपका पालतू कुत्ता कहां था?
पड़ोसी खामोश! कुत्ता आया। बिल्लियों पर वह झपटा, लेकिन बिल्लियों ने उसे खदेड़ दिया।
डरपोक कुत्ता है।
चिंता न करें। चोर पकड़े जाएंगे। सामान भी मिल सकता है।
विमल बिल्लियों को इधर-उधर दौड़ाता, उन्हें कूदना-फांदना सिखाता। मित्र भी साथ रहते।
क्यों बिल्लियों को परेशान कर रहा है?
अब चोर बचकर नहीं जा सकते


रात का समय। सब सो रहे थे। अचानक खटपट हुई। सब जाग गए।
बिल्लियों ने तो नींद भी हराम कर दी।
मुझे तो दाल में काला लगता है।
सारा सामान बिखरा पड़ा था। सेठ ने सामान जांचा भाला। आसपास के लोग भी आ चुके थे।
चोर कुछ नहीं ले जा सके। वे भाग तो नहीं गए
भागेंगे कैसे? बिल्लियां भागने नहीं देंगी।
सब आंगन में पहुंचे। देखा, दो चोर औंधे पड़े हैं। बिल्लियां पंजों से उन पर प्रहार कर रही हैं....
बिल्लियां मुंडेर पर बैठी थीं। चोर भागे, तो वे उन पर कूद पड़ीं। पंजों से वार कर घायल कर दिया।
हमें माफ कर दो। सारा माल लौटा देंगे। इन बिल्लियों से हमें बचाओ।
पुलिस आ गई। उन्होंने पूछताछ की, तो चोरों ने सब बता दिया।
डाल दो इनके हाथों में हथकड़ियां। ले चलो थाने।
हम तुम्हें सरकार से इनाम दिलवाएंगे। तुमने अच्छा काम किया है।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष : २७ अंक ९, नई दिल्ली; जून '९१ वैशाख-ज्येष्ठ, शक सं. १९१३

गौरव ने बचाया निखिल को मौत के मुंह से

नई दिल्ली। स्कूल की घंटी बजी टन-टन-टन-टन। सारे बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं से निकल बाहर आ गए। उनकी पीठ पर बस्ते थे। कंधों और हाथों में पानी की बोतलें। सबको घर जाने की जल्दी थी। नौ वर्ष का निखिल भी अपने दोस्तों के साथ बातचीत करता आगे जा रहा था।

लेकिन यह क्या, अचानक उसका पैर मेनहोल पर पड़ा और वह कई फुट अंदर गंदगी के दलदल में गिर पड़ा।

निखिल को गिरते उसके दोस्तों, अध्यापकों और बड़ी कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों ने देखा। सब दौड़े-दौड़े आए। बहुत दिनों से यह मेनहोल खुला पड़ा था। लेकिन किसी को ऐसी दुर्घटना की आशंका नहीं थी। किसी की समझ में नहीं आया कि निखिल को कैसे बाहर निकालें। अंदर निखिल दलदल में गहरे धंसता जा रहा था।

तभी बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाला गौरव दौड़ता आया। वह बिना कुछ सोचे सीवर में लटक गया। उसने दलदल में फंसे निखिल से कहा कि उसके पैर कसकर पकड़ ले। गौरव को भरोसा था, वह अपने बल-बूते पर निखिल को बाहर खींच लाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। दलदल में फंसा निखिल ज्यादा जोर नहीं लगा पा रहा था। गौरव को लगा यदि कुछ मिनट और ऐसे ही लटका रहा, तो वह भी नीचे गिर जाएगा। इसी समय स्कूल का चौकीदार योगेश्वर एक रस्सी ले आया। उसने रस्सी का एक सिरा वहां खड़े छात्रों और अध्यापकों को पकड़ाया। खुद गौरव को थामा और रस्सी का दूसरा सिरा निखिल को पकड़ा दिया। गौरव को निकालने के बाद, रोते-बिलखते निखिल को बाहर निकाला गया। साहसी गौरव और योगेश्वर के कारण निखिल की जान बच सकी। अब स्कूल के आसपास के सारे खुले मेनहोल को ढक दिया गया है जिससे ऐसी दुर्घटना फिर कभी न हो।

बच्चों का इलाज

ओसाका। सोवियत संघ में चेर्नोबिल परमाणु दुर्घटना हुई थी। जापान सरकार ने यहां के रोगी बच्चों को अपने यहां इलाज के लिए बुलाया है। बीस बच्चे जापान पहुंच गए हैं।

सौ वर्ष पुराने कालिज

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने छह कालिजों को बीस-बीस लाख रुपए अनुदान देने की घोषणा की है। पिछली शताब्दी में स्थापित इन सभी कालिजों ने सौ साल पूरे कर लिए हैं। ये हैं—प्रेजीडेंसी कालिज, कलकत्ता; प्रेजीडेंसी कालिज तथा मद्रास क्रिश्चियन कालिज, मद्रास; सी. एम. एस. कालिज, कोट्टायम; खेन-शा कालिज, कटक; आगरा कालिज, आगरा।

अधिक ध्यान दो

यूनिसैफ। भारत ने यूनिसैफ से कहा है कि वह बाल मजदूरों, विकलांग बच्चों और महिलाओं पर ध्यान दे। भारतीय प्रतिनिधि मीरा सेठ ने कहा कि गरीब बच्चों को अधिक सहायता मिलनी चाहिए। भारत में जो भी ऐसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उनको यूनिसैफ अधिक मदद दे।

सुनहरे बाल

वेलिंगटन। एक बच्ची ने अपने काले बालों को सुनहरा रंगवा लिया। स्कूल अधिकारियों ने इस बात का बुरा माना। उन्होंने कहा या तो बच्ची स्कूल छोड़ दे, या फिर अपने बालों को पहले जैसा कर ले। रंग-बिरंगे बालों से स्कूल का अनुशासन भंग होता है।

बारह वर्ष और बड़ा इनाम

सान फ्रांसिस्को। उसकी उम्र सिर्फ बारह वर्ष है। उसे अमरीकी गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार दिया गया है। अन्य सात लोगों को भी यह पुरस्कार मिला है। इन लोगों ने जंगलों को बचाने का अभियान छेड़ा था। इस नन्हे पर्यावरण प्रेमी का नाम है—रोलैंड तेन्सयू। वह स्वीडन का रहने वाला है।

अनोखी प्रदर्शनी

वाशिंगटन। भारत के राजा-महाराजाओं, उनके भव्य महल, दुर्लभ डाक टिकटें, सिक्के, मानचित्र आदि की प्रदर्शनी यहां लगी। प्रदर्शनी का उद्घाटन भारतीय राजदूत आबिद हुसैन ने किया।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार -
नंदन बाल समाचार

बच्चे माता-पिता को जो आनंद देते हैं, वह कोई नहीं दे सकता । — गोर्की

धरती पर खतरे

विज्ञान कई तरह से हमारी मदद करता है, पर धरती पर खतरे कम नहीं हुए । कभी तूफान, बाढ़ या भूकम्प की मुसीबत है । अचानक आग लगने या मकान गिरने या ऐसी ही और आपदा आ जाती है । कई बार आदमी भी आदमी के लिए जानलेवा हालात पैदा करते हैं ।

इन सबसे जूझने के लिए क्या करें ? हमारी पहले से कुछ तैयारी हो, तो शायद मुसीबत में हम जूझ सकें या उसे टाल भी दें । इस बारे में सही सलाह देने वाली कई किताबें बाजार में मिल जाती हैं । स्काउट संस्था में भी ऐसा कुछ सिखाते हैं । पर हौसला रखना और धीरज से काम लेना हमेशा अच्छा है । बड़ी से बड़ी मुसीबत का मुसकराकर सामना करने का अभ्यास होना चाहिए ।

हमारे मेहमान



उड़िया में बच्चों के लेखक श्री रमेश पत्री 'नंदन' कार्यालय में पधारे । उनकी पुस्तक 'झुलू हाथी' पर बाल-साहित्य का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है । यह एक ऐसे हाथी की कथा है जिसे विदेशी सर्कस को बेच दिया जाता है । हाथी बहुत कष्ट सहने के बाद भारत लौट पाता है । पत्री जी ने कहा—"नंदन पूरे भारत में बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है ।" उन्होंने आगे कहा—"मैं हिंदी में भी बच्चों के लिए लिखना चाहता हूं ।"

चमकदार

लंदन । वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड के सबसे अधिक चमकदार पिड की खोज की है । यह पिंड सूरज से एक अरब गुना अधिक चमकदार है ।

पैरों के निशान

बैंकाक । थाईलैंड में डायनासोरों के पैरों के निशान देखे गए । ये निशान करोड़ों वर्ष पुराने थे । यहीं खुदाई की गई तो करोड़ों वर्ष पुराने जीवाश्म भी मिले ।

हथियार बिकेंगे

नई दिल्ली । थल सेना अपने पुराने हथियारों की नीलामी करेगी । यहां बड़ी-बड़ी बंदूकों आदि से लेकर भारी भरकम टैंक तक बेचे जाएंगे ।

नया तरीका

मास्को । सोवियत संघ में आंख के इलाज की नई तकनीक खोजी गई है । इसका नाम है 'एलोट्रांसप्लांटेशन' । इसकी खोज ई. मुल्दाशोव ने की है । इसमें नेत्रदान करने वाले व्यक्ति का नेत्र निकालकर, लम्बे अरसे तक सुरक्षित रखा जा सकता है । जबकि पुरानी तकनीक में नेत्र कुछ घंटे ही सुरक्षित रह सकते हैं । भारत में लाखों नेत्रहीन हैं । नई तकनीक से उन्हें काफी फायदा पहुंचेगा ।

नई दवा

आबूजा । डाक्टरों का कहना है कि मलेरिया फैलाने वाले कीटाणु जल्दी ही प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेते हैं । फिर उन पर किसी दवा का असर नहीं होता । नाइजीरिया में जड़ी-बूटियों से एक दवा तैयार की गई है । यह काफी कारगर सिद्ध हो रही है ।

प्रदूषण बढ़ा

प्राग । चैकोस्लोवाकिया में हवा का प्रदूषण बढ़ रहा है । उससे बच्चों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है । उसका कारण औद्योगिक क्षेत्रों का बढ़ना और जंगलों का कम होते जाना है । अब प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों को बंद करने पर विचार किया जा रहा है ।

चाकलेट

नेस्ले । तीसरी दुनिया के देशों के लिए नई चाकलेट बनाई है । इसका नाम ही 'तीसरी दुनिया के देशों का चाकलेट' है । यह चाकलेट सस्ती दरों पर बेची जाएगी ।

बोतलों की होली

मुम्बई । बोतल से दूध पीने से बीमारियां हो जाती हैं । लाखों बच्चे हर वर्ष मर जाते हैं । डाक्टरों ने इन बोतलों की होली जलाई ।

अनोखा जन्मदिन

क्लेविस्टन । अपना छियासीवां जन्म दिन मनाने का उसने अनोखा तरीका निकाला । हवाई जहाज से मेन्या जोसे नाम की यह महिला पैराशूट से नीचे कूदी । मेन्या को गिनीज बुक की तरफ से पत्र मिला है कि इस तरह कूदने वाली वह सबसे बुजुर्ग महिला है । जोसे के करतबों को देखने के लिए सैकड़ों लोग जमा हुए थे । टिकट लगी थी । इस पैसे को बुजुर्गों के लिए होने वाले ओलम्पिक में खर्च किया जाएगा ।

एशियाई स्वस्थ

न्यूयार्क। अमरीका में रहने वाले एशियाई लोग अधिक स्वस्थ होते हैं। यह बात सरकार द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट में कही गई है। अच्छे स्वास्थ्य का बड़ा कारण उनके खाने और रहने के अच्छे तौर-तरीके हैं।

रमण की प्रतिमा

विशाखापत्तनम। यहां के ए.वी.एन. कालेज में भारत के महान वैज्ञानिक श्री सी.वी. रमण की प्रतिमा लगाई गई है। श्री रमण को नोबुल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वह १९०४ से १९१४ तक इसी कालेज के छात्र रहे।

छोटी नगर पालिका

मैनचेस्टर। इंग्लैंड का छोटा-सा कस्बा है—लेनिनटिरिड बेंस। इस कस्बे को गिनीज बुक में स्थान दिया गया है। कारण इस नगर की आबादी सिर्फ ५२८ है। यहां की नगर पालिका विश्व में सबसे छोटी है।

बाल भारती स्कूल प्रथम

नई दिल्ली। बाल भारती पब्लिक स्कूल को उपराज्यपाल श्री मार्कंडेय सिंह ने ट्राफी प्रदान की। १९९० में नेहरू बाल मेला में राष्ट्र भक्ति गीत, नृत्य, संगीत, कहानी, कविताओं आदि में कुल मिलाकर इस स्कूल को सबसे अधिक अंक मिले थे।

जहाज ने जहाज बचाया

कोचीन। एक यात्री जहाज अंडमान जा रहा था। इसमें ७३६ यात्री सवार थे। अचानक तेज तूफान आ गया। जहाज से खतरे के संकेत भेजे गए। नौसेना के जहाज 'राजपूत' ने पहुंच कर इसे बचाया। राजपूत इस यात्री जहाज को खींच कर विशाखापत्तनम ले आया।

नं. बा. स. ज

घर मिला

लासएंजिलस। सड़क चौड़ी करनी थी। आसपास रहने वाले जानवरों के घर छिन गए। लेकिन पशु-प्रेमियों ने इन जानवरों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। एक लोमड़ी और उसके छह बच्चों को लासएंजिलस चिड़िया घर में पहुंचाया गया।

झुकती मीनार

रोम। इटली में बनी पीसा की मीनार लगातार झुक रही है। इसे लोहे के दस बड़े-बड़े छल्ले पहनाए जाएंगे, जिससे इसका झुकना रुक सके।

बच्चों की देखभाल

बॉन। जर्मनी में माता-पिता को बच्चों की देखभाल के लिए विशेष भत्ता दिया जाता है। यही नहीं बीमार बच्चों की देखभाल के लिए अलग से पैसे मिलते हैं। जन्म के समय से अठारह महीने तक शिशु की देखभाल का भार, सरकार उठाती है।

चीनी कम खाओ

बर्न। यदि खाने में चीनी कम कर दी जाए, तो आदमी का व्यवहार बदल जाता है। ऐसा प्रयोग अपराधियों पर किया गया। पता चला कि इससे उनकी हिंसक वृत्ति कम हो जाती है। जो बच्चे चिड़चिड़े होते हैं, उन्हें भी चीनी और चाकलेट कम खानी चाहिए।

ईमानदार

बर्मिंघम। एक अखबार ने ईमानदार व्यक्तियों की सूची बनाई। इसमें सफाई कर्मचारी कार्टर प्रथम रहा। कार्टर को गली-कूचों में जेवरों से भरे थैले, पौंड तथा अन्य महंगी सामग्री पड़ी मिली। उसने या तो मालिक को ढूंढ़कर सामान दे दिया या थाने में जमा करा दिया।

नन्हे समाचार

☐ गुरुवयूर के श्रीकृष्ण मंदिर के ४२ हाथियों का ४३ लाख रुपए का बीमा किया गया है।

☐ कहते हैं—पहले पहल ७०० वर्ष पहले इटली में आइसक्रीम बनाई गई थी।

☐ बम्बई के रामेश्वरन पैन्यूली अनोखे कलाकार हैं। वह पुराने, घिसे हुए चित्रों को एकदम नया रूप प्रदान कर देते हैं।

☐ विकलांग हैं धूलिया के गंगाराम शिंदे। उनका एक हाथ, एक पैर खराब है। वह साइकिल पर देश की यात्रा कर रहे हैं। शिंदे यह बताना चाहते हैं कि विकलांग किसी से दया की भीख नहीं चाहते।

☐ १९२७ में एक रेल इंजन भारत आया था। नाम है—लेस्ली विलियम। वह अब तक एक करोड़ २० लाख किलोमीटर की यात्रा कर चुका है। अभी भी ठीकठाक हालत में है।

☐ एक व्यक्ति रात के समय चिमनी के रास्ते एक मकान में घुसने लगा। फंस गया तो चीखने लगा। पुलिस ने उसे चिमनी से निकाला—जेल में बंद कर दिया।

☐ अमरीका में एक पुस्तकालय को दान में हजारों पुस्तकें मिलीं। उनमें से एक पुस्तक की जिल्द में सच्चे हीरे मिले।

☐ कनाडा की एक कम्पनी हिमनदों की बर्फ बाजार में बेचने की योजना बना रही है।

☐ लंदन का चिड़ियाघर १६० वर्ष पुराना है। अब उसके बंद होने का खतरा पैदा हो गया है। सरकार उसे चलाने के लिए धन देने से मना कर रही है।

☐ इंग्लैंड में बिब्बी नामक कुत्ते की आंखों में मोतियाबिंद हो गया। उसका आपरेशन करके प्लास्टिक का लैंस लगा दिया गया। बिब्बी अब ठीक से देखने लगा है।

एशियाई स्वस्थ

न्यूयार्क । अमरीका में रहने वाले एशियाई लोग अधिक स्वस्थ होते हैं । यह बात सरकार द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट में कही गई है । अच्छे स्वास्थ्य का बड़ा कारण उनके खाने और रहने के अच्छे तौर-तरीके हैं ।

रमण की प्रतिमा

विशाखापत्तनम । यहां के ए.वी.एन. कालेज में भारत के महान वैज्ञानिक श्री सी.वी. रमण की प्रतिमा लगाई गई है । श्री रमण को नोबुल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । वह १९०४ से १९१४ तक इसी कालेज के छात्र रहे ।

छोटी नगर पालिका

मैनचेस्टर । इंग्लैंड का छोटा-सा कस्बा है—लेनिनटिरिड बेंस । इस कस्बे को गिनीज बुक में स्थान दिया गया है । कारण इस नगर की आबादी सिर्फ ५२८ है । यहां की नगर पालिका विश्व में सबसे छोटी है ।

बाल भारती स्कूल प्रथम

नई दिल्ली । बाल भारती पब्लिक स्कूल को उपराज्यपाल श्री मार्केंडेय सिंह ने ट्राफी प्रदान की । १९९० में नेहरू बाल मेला में राष्ट्र भक्ति गीत, नृत्य, संगीत, कहानी, कविताओं आदि में कुल मिलाकर इस स्कूल को सबसे अधिक अंक मिले थे ।

जहाज ने जहाज बचाया

कोचीन । एक यात्री जहाज अंडमान जा रहा था । इसमें ७३६ यात्री सवार थे । अचानक तेज तूफान आ गया । जहाज से खतरे के संकेत भेजे गए । नौसेना के जहाज 'राजपूत' ने पहुंच कर इसे बचाया । राजपूत इस यात्री जहाज को खींच कर विशाखापत्तनम ले आया ।

नं. बा. स. ज

घर मिला

लासएंजिलस । सड़क चौड़ी करनी थी । आसपास रहने वाले जानवरों के घर छिन गए । लेकिन पशु-प्रेमियों ने इन जानवरों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया । एक लोमड़ी और उसके छह बच्चों को लासएंजिलस चिड़िया घर में पहुंचाया गया ।

झुकती मीनार

रोम । इटली में बनी पीसा की मीनार लगातार झुक रही है । इसे लोहे के दस बड़े-बड़े छल्ले पहनाए जाएंगे, जिससे इसका झुकना रुक सके ।

बच्चों की देखभाल

बॉन । जर्मनी में माता-पिता को बच्चों की देखभाल के लिए विशेष भत्ता दिया जाता है । यही नहीं बीमार बच्चों की देखभाल के लिए अलग से पैसे मिलते हैं । जन्म के समय से अठारह महीने तक शिशु की देखभाल का भार, सरकार उठाती है ।

चीनी कम खाओ

बर्न । यदि खाने में चीनी कम कर दी जाए, तो आदमी का व्यवहार बदल जाता है । ऐसा प्रयोग अपराधियों पर किया गया । पता चला कि इससे उनकी हिंसक वृत्ति कम हो जाती है । जो बच्चे चिड़चिड़े होते हैं, उन्हें भी चीनी और चाकलेट कम खानी चाहिए ।

ईमानदार

बर्मिंघम। एक अखबार ने ईमानदार व्यक्तियों की सूची बनाई । इसमें सफाई कर्मचारी कार्टर प्रथम रहा । कार्टर को गली-कूचों में जेवरों से भरे थैले, पौंड तथा अन्य महंगी सामग्री पड़ी मिली । उसने या तो मालिक को ढूंढ़कर सामान दे दिया या थाने में जमा करा दिया ।

नन्हे समाचार

☐ गुरुवयूर के श्रीकृष्ण मंदिर के ४२ हाथियों का ४३ लाख रुपए का बीमा किया गया है ।

☐ कहते हैं—पहले पहल ७०० वर्ष पहले इटली में आइसक्रीम बनाई गई थी ।

☐ बम्बई के रामेश्वरन पैन्यूली अनोखे कलाकार हैं । वह पुराने, घिसे हुए चित्रों को एकदम नया रूप प्रदान कर देते हैं ।

☐ विकलांग हैं धूलिया के गंगाराम शिंदे । उनका एक हाथ, एक पैर खराब है । वह साइकिल पर देश की यात्रा कर रहे हैं । शिंदे यह बताना चाहते हैं कि विकलांग किसी से दया की भीख नहीं चाहते ।

☐ १९२७ में एक रेल इंजन भारत आया था । नाम है—लेस्ली विलियम । वह अब तक एक करोड़ २० लाख किलोमीटर की यात्रा कर चुका है । अभी भी ठीकठाक हालत में है ।

☐ एक व्यक्ति रात के समय चिमनी के रास्ते एक मकान में घुसने लगा । फंस गया तो चीखने लगा । पुलिस ने उसे चिमनी से निकाला—जेल में बंद कर दिया ।

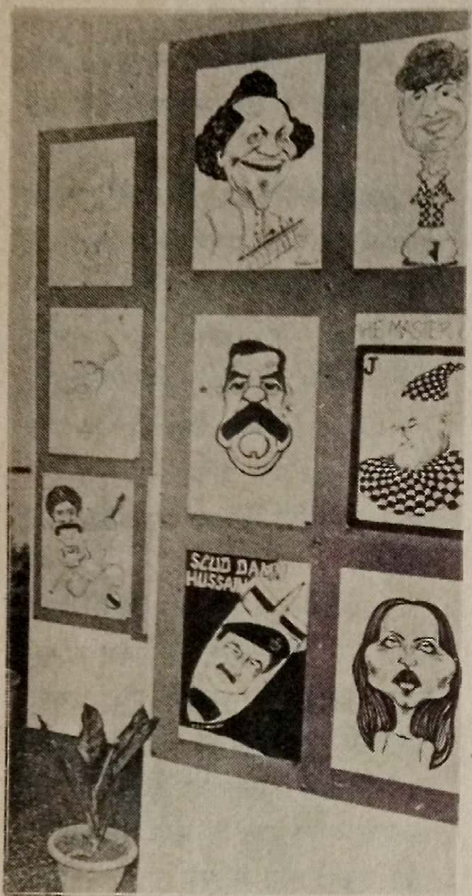
☐ अमरीका में एक पुस्तकालय को दान में हजारों पुस्तकें मिलीं । उनमें से एक पुस्तक की जिल्द में सच्चे हीरे मिले ।

☐ कनाडा की एक कम्पनी हिमनदों की बर्फ बाजार में बेचने की योजना बना रही है ।

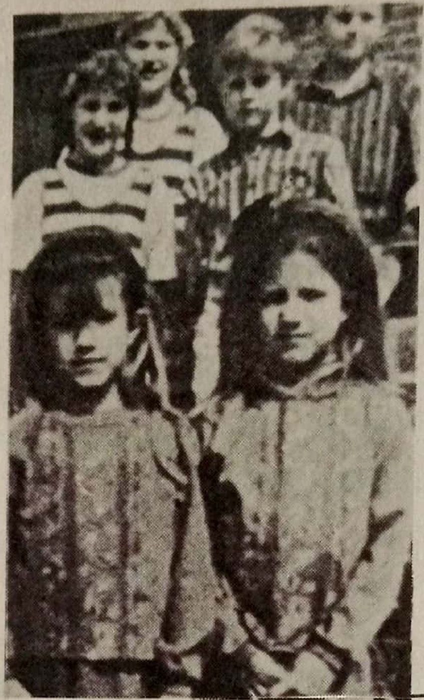
☐ लंदन का चिड़ियाघर १६० वर्ष पुराना है । अब उसके बंद होने का खतरा पैदा हो गया है । सरकार उसे चलाने के लिए धन देने से मना कर रही है ।

☐ इंग्लैंड में बिब्बी नामक कुत्ते की आंखों में मोतियाबिंद हो गया । उसका आपरेशन करके प्लास्टिक का लैंस लगा दिया गया । बिब्बी अब ठीक से देखने लगा है ।

सचित्र समाचार



हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित कार्टून प्रतियोगिता ।



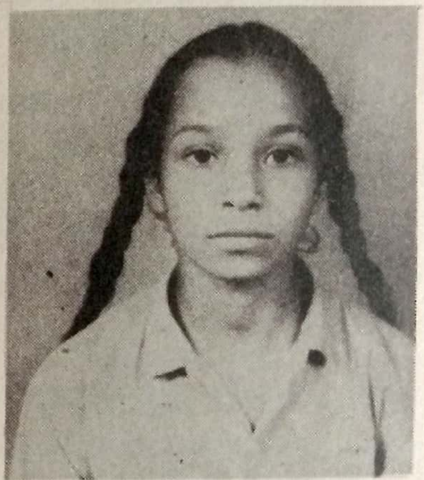
अमरीका का जर्सीविले स्कूल : यहां बहुत-से जुड़वां भाई बहन पढ़ते हैं । चित्र में एक साथ जन्मी तीन बहनें ।

अमेरिका में छोटे बच्चों का टेलीविजन कार्यक्रम—'सीसेम स्ट्रीट' । कार्यक्रम में तरह-तरह की पुतलियां होती हैं । अनेक देशों के बच्चों में यह कार्यक्रम लोकप्रिय है ।

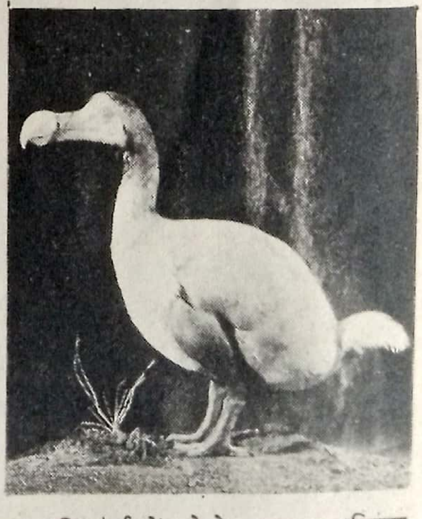




बंगाल के जाने-माने अभिनेता उत्पल दत्त को 'संगीत-नाटक अकादमी' ने सम्मानित किया ।



दस वर्ष की मीता ढोंढियाल : जूडो में कई स्वर्णपदक जीत चुकी है ।

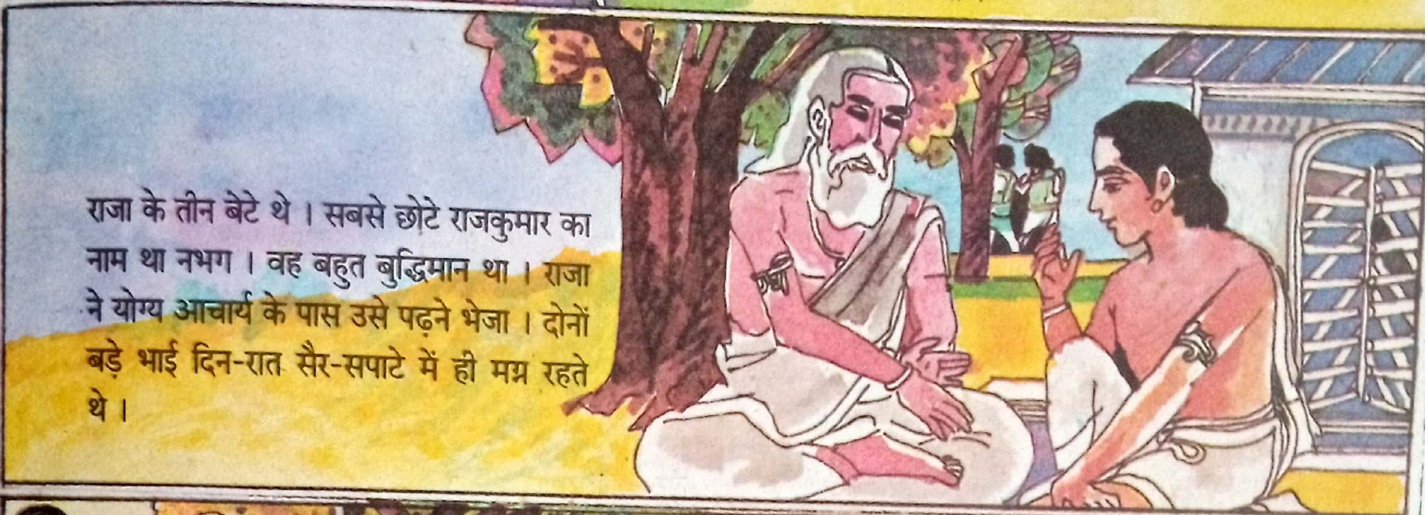


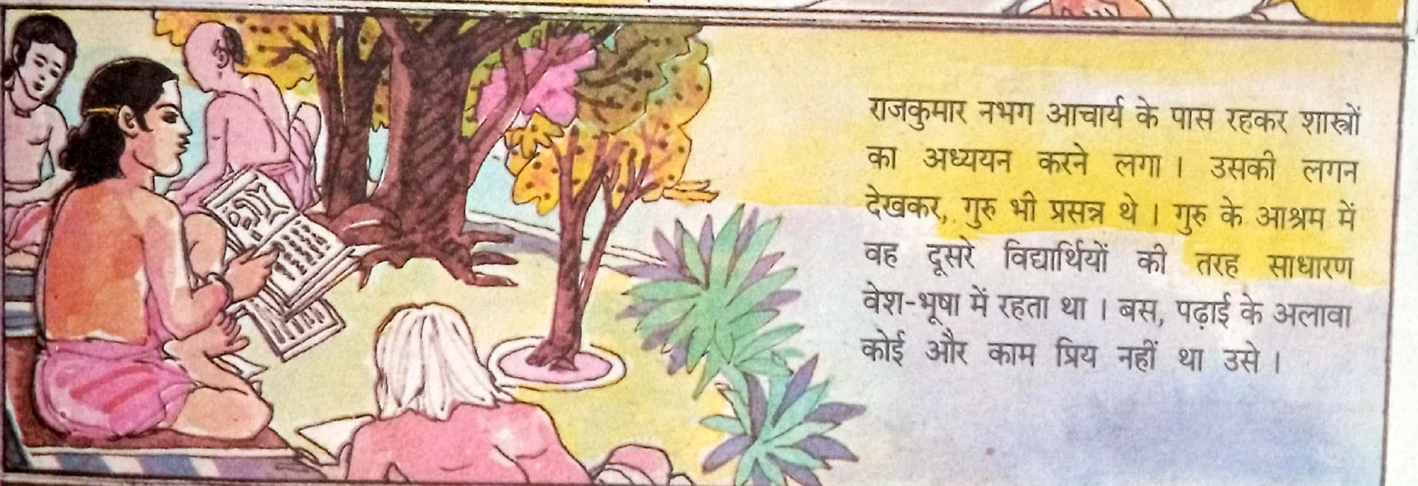
एडिनबर्ग में डोडो का यह प्रतिरूप बनाया गया है । यह पक्षी अंतिम बार १६६० में मारीशस में देखा गया था ।

नं. बा. स. ड़ा

शिव का वरदान

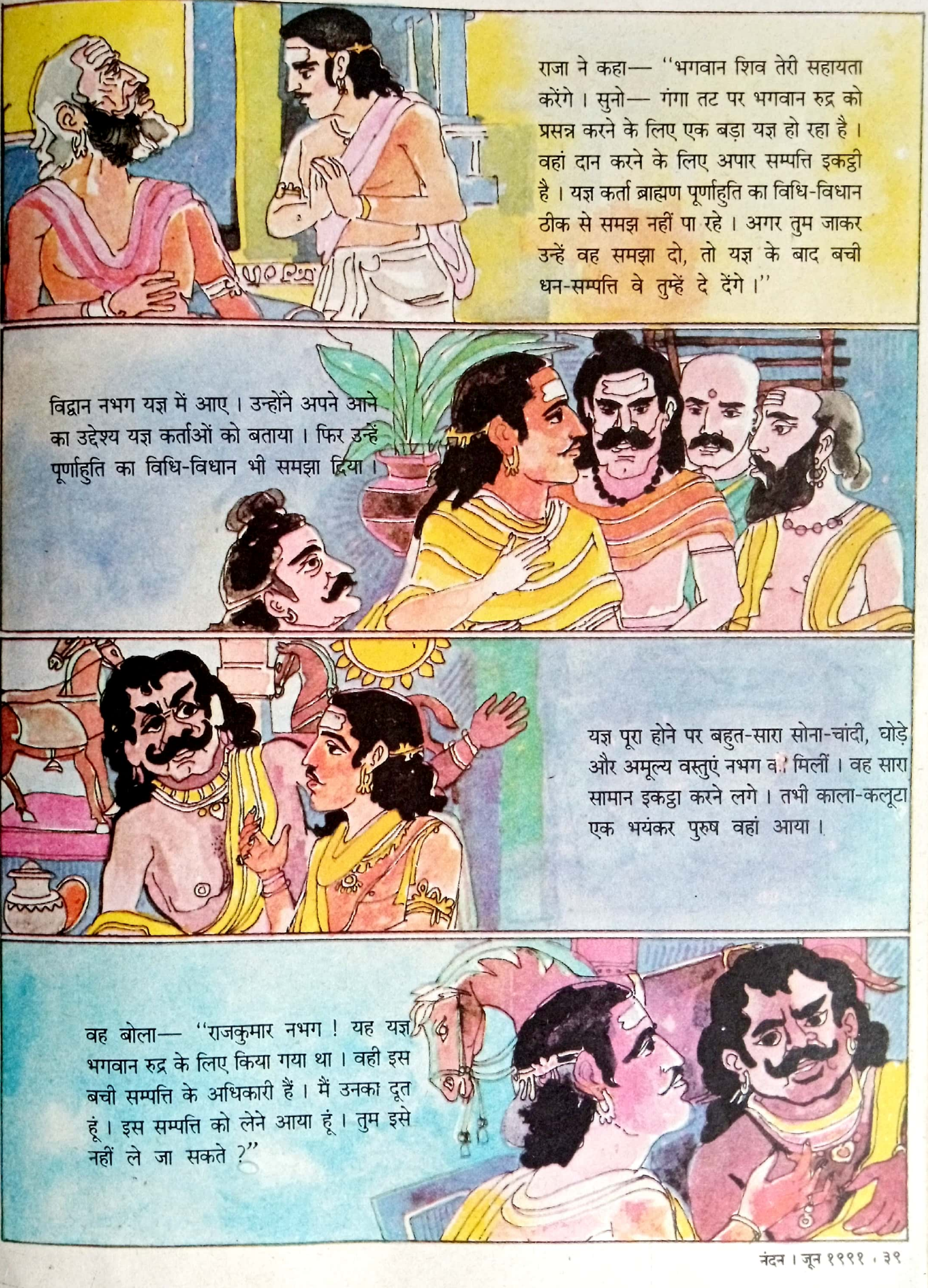

एक राजा थे इक्ष्वाकु वंश में। बड़े ही प्रजा पालक और शिव-भक्त। प्रातःकाल शिव की पूजा करने के पश्चात ही वह राजकाज आरम्भ करते थे। राजा के न्याय की कीर्ति दूर-दूर तक फैली थी।

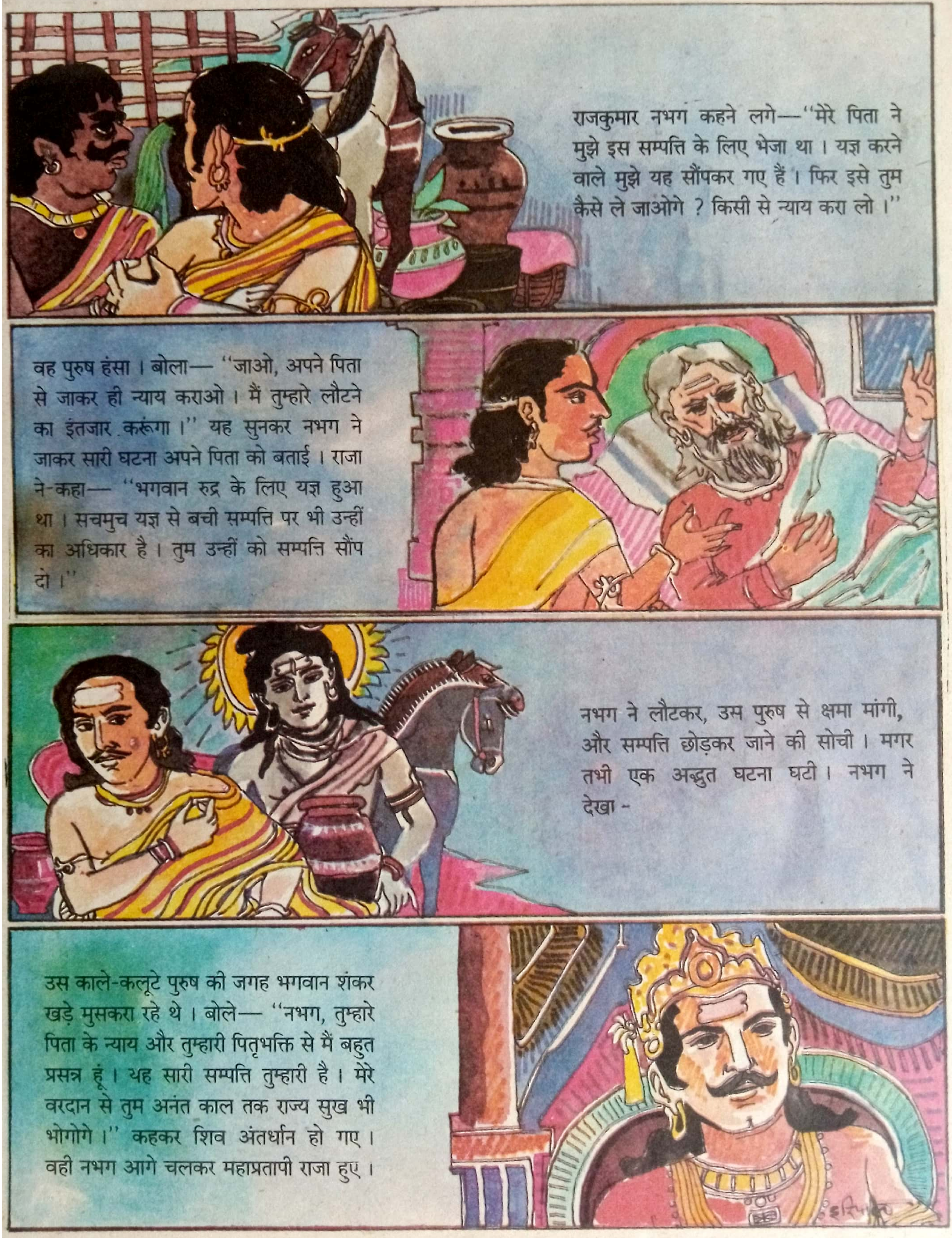

राजा के तीन बेटे थे। सबसे छोटे राजकुमार का नाम था नभग। वह बहुत बुद्धिमान था। राजा ने योग्य आचार्य के पास उसे पढ़ने भेजा। दोनों बड़े भाई दिन-रात सैर-सपाटे में ही मग्न रहते थे।


राजकुमार नभग आचार्य के पास रहकर शास्त्रों का अध्ययन करने लगा। उसकी लगन देखकर, गुरु भी प्रसन्न थे। गुरु के आश्रम में वह दूसरे विद्यार्थियों की तरह साधारण वेश-भूषा में रहता था। बस, पढ़ाई के अलावा कोई और काम प्रिय नहीं था उसे।


धीरे-धीरे दिन बीते। राजा बूढ़े हुए। एक दिन बड़ा राजकुमार सिंहासन पर बैठ गया। मंझला राजकुमार भी अपने हिस्से की धन-सम्पत्ति लेकर आराम से रहने लगा। सम्पत्ति का बंटवारा करते समय वे अपने सबसे छोटे भाई को भूल ही गए।


इससे राजा दुखी थे, मगर उन्हें पूछता कौन था ? बेचारे महल में अकेले पड़े रहते । छोटे बेटे को याद कर, उसके साथ हुए अन्याय से दुखी रहते थे ।
नभग युवा हो गया था । एक दिन शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर, वह राजधानी लौटा । पिता के पास जाकर चरण छुए । पिता ने बंटवारे के बारे में उसे सब-कुछ बता दिया।
राजकुमार नभग अपने भाइयों के पास आया । उसने कहा— "मुझे मेरा हिस्सा दो ।" मगर दोनों भाइयों ने इंकार कर दिया । कहा— "तुम बंटवारे के समय यहां नहीं थे। अब हिस्सा कैसा ?"
नभग ने झगड़ा करना उचित न समझा । पिता के पास आकर बोला— "मैं आपकी सेवा करूंगा । यही मेरे लिए सबसे बड़ी धन-सम्पत्ति है ।" बेटे की बात सुनकर बूढ़े राजा कुछ सोचने लगे ।


राजा ने कहा— ''भगवान शिव तेरी सहायता करेंगे । सुनो— गंगा तट पर भगवान रुद्र को प्रसन्न करने के लिए एक बड़ा यज्ञ हो रहा है । वहां दान करने के लिए अपार सम्पत्ति इकट्ठी है । यज्ञ कर्ता ब्राह्मण पूर्णाहुति का विधि-विधान ठीक से समझ नहीं पा रहे । अगर तुम जाकर उन्हें वह समझा दो, तो यज्ञ के बाद बची धन-सम्पत्ति वे तुम्हें दे देंगे ।''
विद्वान नभग यज्ञ में आए । उन्होंने अपने आने का उद्देश्य यज्ञ कर्ताओं को बताया । फिर उन्हें पूर्णाहुति का विधि-विधान भी समझा दिया ।
यज्ञ पूरा होने पर बहुत-सारा सोना-चांदी, घोड़े और अमूल्य वस्तुएं नभग को मिलीं । वह सारा सामान इकट्ठा करने लगे । तभी काला-कलूटा एक भयंकर पुरुष वहां आया ।
वह बोला— ''राजकुमार नभग ! यह यज्ञ भगवान रुद्र के लिए किया गया था । वही इस बची सम्पत्ति के अधिकारी हैं । मैं उनका दूत हूं । इस सम्पत्ति को लेने आया हूं । तुम इसे नहीं ले जा सकते ?''


राजकुमार नभग कहने लगे—''मेरे पिता ने मुझे इस सम्पत्ति के लिए भेजा था। यज्ञ करने वाले मुझे यह सौंपकर गए हैं। फिर इसे तुम कैसे ले जाओगे ? किसी से न्याय करा लो।''
वह पुरुष हंसा। बोला— ''जाओ, अपने पिता से जाकर ही न्याय कराओ। मैं तुम्हारे लौटने का इंतजार करूंगा।'' यह सुनकर नभग ने जाकर सारी घटना अपने पिता को बताई। राजा ने कहा— ''भगवान रुद्र के लिए यज्ञ हुआ था। सचमुच यज्ञ से बची सम्पत्ति पर भी उन्हीं का अधिकार है। तुम उन्हीं को सम्पत्ति सौंप दो।''
नभग ने लौटकर, उस पुरुष से क्षमा मांगी, और सम्पत्ति छोड़कर जाने की सोची। मगर तभी एक अद्भुत घटना घटी। नभग ने देखा -
उस काले-कलूटे पुरुष की जगह भगवान शंकर खड़े मुसकरा रहे थे। बोले— ''नभग, तुम्हारे पिता के न्याय और तुम्हारी पितृभक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह सारी सम्पत्ति तुम्हारी है। मेरे वरदान से तुम अनंत काल तक राज्य सुख भी भोगोगे।'' कहकर शिव अंतर्धान हो गए। वही नभग आगे चलकर महाप्रतापी राजा हुए।

भागा शिकारी

— रेखा जैन



एक समय की बात है, जंगल में बड़ का एक पेड़ था। उस पेड़ पर रोज अनेक पक्षी आकर बैठते। सूरज की किरणें फैलने से पहले ही उनका मधुर संगीत शुरू हो जाता। पक्षियों की चहचहाहट सुनकर इस बात का पता चल जाता कि अब सूरज निकलने वाला है। कभी इस डाल से उस डाल पर; उस डाल से और दूसरी डाल पर फुदक-फुदककर बैठते। चोंच में चोंच डालकर अपने-अपने संगी-साथियों से प्यार दिखाते। लचीली गर्दन को इधर-उधर घुमाकर कुछ देखते रहते।

इन्हीं पक्षियों में एक सफेद रंग का कबूतर था। जब अन्य पक्षी उड़ जाते या अपने-अपने घोंसलों में छिप जाते,. तब भी यह कबूतर बड़ के पेड़ की एक खास डाल पर बैठा इधर-उधर फुदकता रहता। गुटुर गूं गुटुर गूं करता हुआ गर्दन हिलाता रहता। इसी पेड़ की डाल पर आने-जाने वाली एक चींटी से धीरे-धीरे उस कबूतर की दोस्ती हो गई।

कबूतर को हमेशा उस पेड़ पर बैठा देखकर, एक दिन चींटी ने पूछ ही लिया— "कबूतर भाई, सारे दोस्त उड़ जाते हैं, पर आप अकेले इस तरह पेड़ पर क्यों बैठे रहते हैं ? इधर-उधर गर्दन घुमाकर किसे देखते रहते हैं ?"

चींटी की प्यारभरी बातें सुनकर कबूतर की आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे। अपने मित्र कबूतर को दुखी देखकर चींटी उसके दुःख का कारण पूछने लगी।

कबूतर ने बड़ी हिम्मत से अपने आंसू रोककर उसे बताया— "असल बात यह है चींटी बहन, मैं और मेरी साथिन कबूतरी रोज सवेरे दूर-दूर आसमान की सैर पर निकल जाते थे। जब भी थक जाते, एक साथ नीचे उतरते। जहां भी तालाब या पोखर का पानी दिखाई पड़ता पानी पीते, सुस्ताते। मस्त होकर गाना गाते और फिर उड़ जाते। हम दोनों बहुत ही खुश थे। कबूतरी का रंग एकदम सफेद था। उसकी आवाज बड़ी मीठी थी। हम दोनों कभी एक-दूसरे से दूर नहीं होते थे। कभी कोई दाना मिलता, तो वह मुझे खिलाती, मैं उसे खिलाता। एक दिन जब मैं और कबूतरी एक पोखर के किनारे पानी पीकर उड़ने वाले थे कि अचानक एक बाज आया। मेरी कबूतरी को मुंह में दबाकर उड़ गया। और मैं देखता ही रह गया।" बात पूरी होने से पहले कबूतर की आंखें फिर भर आईं।

चींटी समझ गई, उसकी प्यारी कबूतरी की याद का दुःख। उसने कहा— "कबूतर भाई, इतने दुखी मत हो। अब जो हो गया, सो हो गया। हिम्मत से काम लो। तुम रोज देखते हो, आंधी हो, तूफान हो, कई बार मेरे परिवार की कई चींटियां मर जाती हैं। पर हम अपना काम करती रहती हैं। तुम भी अन्य साथियों के साथ उड़ोगे, आकाश में घूमोगे, तो और कबूतरों से दोस्ती हो जाएगी। तुम्हारा मन लग जाएगा।"

कबूतर को चींटी की सलाह अच्छी लगी। उसी दिन से वह अन्य पक्षियों के साथ उड़कर जाने लगा। उनके साथ 'गुटुर गूं' का गाना गाता। अब उसे सचमुच अच्छा लगता था।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गए। एक दिन फिर वह उसी पोखर पर पानी पीने गया, जहां अपनी कबूतरी के साथ गया था। पानी पीकर कबूतर सुस्ता रहा था। उसने देखा कि एक बाज दूर से उसी की ओर झपट्टा मारता, बड़ी तेजी से आ रहा है। यह देखते ही वह घबरा गया और जल्दी से उड़ा। उड़ते-उड़ते उसी बड़ के पेड़ के पत्तों की आड़ में छिप गया।

कबूतर छिप तो गया, पर अचानक जैसे ही उसकी निगाह पेड़ के नीचे गई, उसने देखा कि एक शिकारी अपने तीर-कमान लिए खड़ा है। वह कबूतर को ही अपना निशाना बनाना चाहता था। अब तो कबूतर बेहद घबरा गया। उसी घबराहट में वह जोर से चिल्ला पड़ा। चींटी पेड़ की जड़ के पास से ऊपर चढ़ने ही वाली थी कि कबूतर की चीख सुनकर रुक गई। जब उसने इधर-उधर देखा, तो पास में ही एक शिकारी को तीर-कमान लिए खड़ा देखा। वह कबूतर की चीख का मतलब समझ गई। अब क्या था! चींटी तुरंत शिकारी के पास पहुंची और उसने इतनी जोर से उसे काटा कि शिकारी का तीर कबूतर को न लगकर और कहीं जा गिरा। बाज भी भाग गया और कबूतर बच गया। इस बीच वहां चल रही अन्य चींटियों ने भी शिकारी को काटना शुरू कर दिया। शिकारी परेशान हो, वहां से भाग गया।

अब तो चींटी और कबूतर की दोस्ती और भी गहरी हो गई। हर जगह चींटी और कबूतर की मित्रता की चर्चा होने लगी! चींटी की इस बहादुरी पर सब पक्षियों ने मिलकर गाना गाया। यह गाना इतना मीठा और लुभावना था कि दूर-दूर के घरों से बूढ़े, बच्चे तक पक्षियों का गाना सुनने निकल पड़े। जब सबको चींटी की बहादुरी का पता चला, तो एक बूढ़ी दादी ने खुशी से खूब सारी शक्कर मंगाकर चींटी के खाने को बिखेर दी। शक्कर पाकर उन सब चींटियों की खूब दावत हो गई। बची-खुची शक्कर वे अपने मित्रों, पड़ोसियों को बांटने ले गईं।

कहते हैं, तभी से चींटियों को सामान ढोकर ले जाने की आदत पड़ी है। ●

पड़ाव

—बी. पी. सारस्वत

किसी सेठ ने अपनी पुत्री को विवाह में बीस दुधारू गायें दीं। पुत्री जब विदा हुई, तो गायों को भी बारात के पीछे हांक दिया गया।

उनमें से एक गाय का बछड़ा सेठ ने अपने पास रख लिया। गाय और बछड़ा दोनों इस बात को जानते थे। बछड़ा बहुत परेशान था। गाय ने उसे चाटकर प्यार किया था। समझाया था—"सेठ के घर एक किसान आता है। वह सारे बछड़ों को अपने साथ ले जाता है। इसलिए तुझे भी उसके साथ जाना होगा। वहां तुझे अपना बड़ा भाई मिलेगा। उसके माथे पर भी तेरी तरह कुछ बाल काले हैं। दोनों भाई मिलकर रहना। सदा उसका कहना मानना।"

फिर गाय ने कहा—"गाय-बैलों के झुंड में चलते समय बीच में चलना। रात को जब झुंड पड़ाव करे, तब टीले पर मत सोना।"

थोड़े दिन बाद, सेठ के घर किसान आया। उसके पास कई बछड़े और थे। वह सेठ के यहां से इस बछड़े को भी ले गया। रास्ते में बछड़ा मां की सीख भूल गया। वह पीछे-पीछे चल रहा था कि किसान ने उसके जोर से लकड़ी जमाई।

जब रात को पड़ाव पर पहुंचे, तो वह टीले पर चढ़कर सोया। वहां उसे ठंड लगी। फिर वह टीले के दक्षिण में आकर सोया। वहां उसे सर्दी नहीं लगी।

अंत में तीन पड़ाव करके किसान का गांव आ गया। वहां बड़े बछड़े पहले से मौजूद थे। आए हुए बछड़ों को देखकर, बड़े बछड़े उन्हें टांगे मारने लगे। इस उत्पात के बीच उस बछड़े ने अपने बड़े भाई को ढूंढ़ लिया। दोनों ने नथुने मिलाकर एक दूसरे को सूंघा। अब पूरे बछड़ों के बीच इस बछड़े को अपना बड़ा भाई मददगार के रूप में मिल गया। वे दोनों चरने जाते, तो झुंड के बीच में रहते।

अब बछड़े को पूरी तरह पता लग गया कि मां की हर नसीहत कितनी सच्ची और अच्छी होती है। ●

नदी बनी बेटी

—ब्रह्मप्रकाश गुप्त



हजारों साल पुरानी बात है —भार्गव वंश में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। उसके मुंह से प्रचंड ज्वाला निकल रही थी। उस ज्वाला को स्वयं ब्रह्माजी ने शांत किया। फिर उसे महासागर तक पहुंचाने के लिए अपनी मानस पुत्री की सृष्टि की। उस मानस पुत्री का नाम था सरस्वती।

ब्रह्माजी की एक और मानस पुत्री थी। नाम था विष्णुमाया। उसका दूसरा नाम लोपामुद्रा भी था। उसका लालन-पालन कवेर मुनि करते थे। इससे वह कावेरी कहलाई।

कवेर मुनि के आश्रम के चारों ओर दैत्यों का आतंक था। लेकिन मुनि के आश्रम पर उनका कुछ बस नहीं चलता था। वे हर समय मुनि को अपने रास्ते से हटाने का उपाय सोचा करते थे। आखिर एक दिन उनकी बन आई। अपने भाई वातापि की सहायता से इल्वल दैत्य ने मुनि का वध कर दिया।

कवेर मुनि के आश्रम से कुछ ही दूर अगस्त्य मुनि का आश्रम था। उन्होंने कावेरी को दैत्यों के चंगुल से बचा लिया। किंतु उनको चिंता थी, दैत्यों से उसकी सुरक्षा की। उनके आश्रम में इसका कोई साधन था नहीं। इसलिए उसे विदर्भ नरेश को सौंप दिया। वहां उसका अच्छा लालन-पालन होने लगा। राजमहल में दैत्यों का भी डर नहीं था। शिक्षा-दीक्षा का भी अच्छा प्रबंध था।

कावेरी के मन में अपने धर्म पिता के वध का दुःख बराबर बना रहता था। बड़ी होने पर उसने उसका बदला लेने की प्रतिज्ञा की। उसकी प्रतिज्ञा बड़ी अजीब थी। उसने कहा था, वह उसी से विवाह करेगी, जो उसके धर्म पिता के हत्यारों का नाश कर सकेगा। विदर्भ नरेश ने उसे बहुत समझाया कि वातापि और इल्वल दैत्यों को मारना किसी के वश की बात नहीं। लेकिन कावेरी अपनी प्रतिज्ञा पर अड़ी रही।

विदर्भ नरेश ने अपनी चिंता अगस्त्य मुनि के सामने रखी। वह भी सोच में पड़ गए। उन दैत्यों का नाश कौन कर पाएगा। इधर कावेरी की कठोर प्रतिज्ञा। उधर अकाल मृत्यु के कारण कवेर मुनि की मुक्ति भी नहीं हुई थी। आखिर अगस्त्य मुनि ने स्वयं भी दैत्यों का नाश कर दिया।

इसके बाद अगस्त्य मुनि ने कवेर मुनि की मुक्ति का उपाय सोचा। उन्होंने कावेरी को तपस्या से नदी का रूप धारण करने को कहा। कावेरी ने ऐसा ही किया। पौराणिक गाथा के अनुसार—राजा युवनाश्व के शाप से गंगाजी को अर्द्धभाग से उनकी पुत्री होना पड़ा था। वह पुत्री यही कावेरी है।

कहा जाता है कि वर्ष में एक बार गंगा पृथ्वी के नीचे-नीचे अपनी पुत्री कावेरी से मिलने जाती हैं। अपने जल में स्नान करने वालों के सब पाप वह वहां छोड़ आती हैं। इस कारण इसका नाम अर्द्धगंगा या दक्षिण गंगा भी है।

गंगा और कावेरी के मिलन को पूर्ण रूप देने की एक योजना सन् १९६९ में बनी थी। जब ये दोनों पृथ्वी के ऊपर मिलेंगी, तो पूरे भारत में जल का बराबर विस्तार होगा। न कहीं बाढ़ आएगी, न कहीं सूखा पड़ेगा। खलिहान फलेंगे। जल से उत्पन्न विद्युत से घर-घर में ऊर्जा का संचार होगा। तभी कवेर मुनि की आत्मा को सही शांति मिलेगी। और उस सुख से जन-जन हरष उठेगा।

रायड़ा की सूझ

—ईश्वरलाल प. वैश्य

रायड़ा रोज अपने हाथ में खुली तलवार लेकर गढ़ी के ठाकुर को जुहार करने जाता। उसको यूं ठाकुर की हवेली में आते देख, गढ़ी के राजपूतों के दिल ऊंचे-नीचे होने लगते थे।

वह ठाकुर का मुंहलगा था। इसलिए कोई उसे सीधे-सीधे तो कुछ कहता नहीं था। दिखाता हर कोई ऐसा था कि रायड़ा कुछ भी सही, है उससे बहुत छोटा। मगर रायड़ा की शान में फर्क न पड़ता था।

ठाकुर रामसिंह ने दुनिया देखी थी। उन्होंने अपने राजपूत साथियों को समझाते हुए कहा— "मैं सब समझता हूं भाई। रायड़ा में थोड़ा अहंकार बढ़ गया है, लेकिन उससे अपना क्या बिगड़ता है ? उसका यह अहंकार भी किसी दिन काम आएगा।"

दैवयोग से कुछ दिनों बाद ही दिल्ली के बादशाह की सेना बागियों का पीछा करते-करते, ठाकुर साहब की गढ़ी तक पहुंच गई। शाही सेना के सेनापति कादिरखां ने ठाकुर रामसिंह के पास फरमान भेजा—'बागियों को हमें सौंप दो। उनको शरण देने के लिए माफी मांगो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'

ठाकुर साहब अपने शरणागत को सौंपने के लिए तैयार नहीं थे। इसे वह अपनी राजपूती शान के खिलाफ समझते थे। अतः दोनों ओर से युद्ध की तैयारियां होने लगीं। ऐसे में एक दिन रायड़ा अपनी तलवार लिए ठाकुर साहब को जुहार करने आया।

"रायड़ा ! तू काम करेगा ?"—ठाकुर ने व्यंग्य से पूछा ?

"हां अन्नदाता। आप हुक्म करें, तो कादिरखां का सिर काट लाऊं।"

"नहीं रे, रायड़ा। कादिरखां का सिर तू काट लाएगा, तो फिर ये राजपूत क्या करेंगे ? लेकिन यदि तू कुछ कर सके, तो कोई ऐसा खेल दिखा कि शाही सेना में भय पैदा हो। मेरे राजपूतों की हिम्मत बढ़े और तेरा नाम भी रोशन हो।"—ठाकुर ने रायड़ा को चढ़ाते हुए कहा।

"ऐसा ही होगा, अन्नदाता।"— कहकर रायड़ा घर आया और कोई तरकीब सोचने लगा।

इतने में उसकी नजर सामने खड़े अपने विशाल कद्दावर कुत्ते पर पड़ी। तुरंत उसके दिमाग में एक विचार कौंध गया।

उसने कहीं से बड़े शिकारी कुत्ते की पूरी खाल का बंदोबस्त किया। फिर शाम को अपनी पत्नी की सहायता से वह खाल उसने अपने शरीर पर चढ़ा ली। अब रायड़ा स्वयं एक कद्दावर कुत्ता लगने लगा। शाम के धुंधलके में उसने कुत्ते की तरह चारों हाथ-पैरों पर चलकर मोहल्ले का चक्कर भी लगा लिया। जब मोहल्ले के लोगों ने भी उसको नहीं पहचाना और कुत्ता ही समझा, तब उसकी हिम्मत और आत्म-विश्वास और भी बढ़ गया।

जब रात का अंधेरा पूरी तरह छा गया, तो चमड़ा सीने वाली अपनी छोटी-सी रांपी को पंजों में दबा, रायड़ा अपने काम पर निकल पड़ा। इधर-उधर कुत्ते की तरह सूंघता और घूमता हुआ, वह दिल्ली की सेना की छावनी की ओर चल पड़ा। आधी रात के करीब वह वहां पहुंच गया।

छावनी में चारों ओर कड़ा पहरा था। संतरी इधर-उधर गश्त लगा रहे थे, लेकिन रायड़ा आवारा कुत्ते की तरह घूमता, सेनापति कादिरखां के विशाल तंबू के पास पहुंचा। उस तंबू के इर्द-गिर्द और भी कड़ा पहरा था। इधर-उधर ताकता हुआ और संतरियों की नजर से बचता हुआ, वह सेनापति के तंबू से सटे खास घोड़ों के अस्तबल वाले तंबू में घुस गया। वहां जाकर वह सेनापति के तंबू से सटे हुए पर्दे के पास ऐसे लेट गया, जैसे सो रहा हो। लेटे ही लेटे उसने अपनी रांपी की सहायता से जमीन को इतना खोद डाला कि पेट के बल रेंगकर वह बड़े तम्बू के अंदर जा सके। तब अपने पंजों से मिट्टी को बाहर खींच कर, रायड़ा धीरे से पेट के बल सरकता हुआ, सेनापति के तंबू के अंदर घुस गया।

तंबू के अंदर छोटा-सा दीपक जल रहा था। उसकी रोशनी में उसने देखा कि एक विशाल पलंग पर कादिरखां सोया पड़ा है। उसकी बगल में ही उसकी तलवार और कटार भी रखी है। रायड़ा वैसे ही लेटे-लेटे खिसकता हुआ, पलंग के नजदीक गया। कादिरखां की रत्नजड़ी कटार उठा ली और उसके स्थान पर अपनी रांपी रख दी। फिर वह चुपचाप जैसे अंदर आया था, वैसे ही बाहर निकल गया।

तंबू के बाहर आ जाने पर उसे ख्याल आया कि कटार लाने का काम तो कोई होशियार चोर भी कर सकता था। इतने से ही रायड़ा का नाम रोशन नहीं होगा। कुछ सोचकर उसने सेनापति की कटार से ही सेनापति के तंबू के एक ओर की दो-तीन रस्सियां काट डालीं। तनाव कम होने से तंबू उधर से झुक गया। तंबू के अंदर जल रहे दीपक की लौ से उसने आग पकड़ ली। यह देख रायड़ा ने जल्दी-जल्दी में दूसरी तरफ की भी कुछ रस्सियां काट डालीं और वहां से भाग निकला। भागते-भागते उसने अस्तबल के अंदर बंधे घोड़ों की रस्सियां भी काट डालीं।

तंबू के गिरने, उसमें आग लगने और खुद उसमें फंस जाने से एक तरफ तो हड़बड़ाकर कादिरखां चिल्लाने लगा, दूसरी तरफ आग की गर्मी को सहन न कर पाने से घोड़े भी इधर-उधर भागने लगे। पूरी छावनी में खलबली मच गई। वे सभी सैनिक पानी-पानी चिल्लाते हुए भागने लगे। इतनी हड़बड़ाहट में एक कुत्ते की ओर भला कौन ध्यान देता? रायड़ा वहां से निकलकर सही-सलामत घर आ गया। खाल उतारकर चुपचाप सो गया।

दूसरे दिन सवेरे वह ठाकुर के दरबार में जुहार करने पहुंचा। तब उसके हाथ में तलवार तो क्या, तलवार की म्यान भी नहीं थी। रायड़ा को यूं खाली हाथ दरबार में आता देख, वहां उपस्थित राजपूतों को आश्चर्य हुआ। वे आपस में कानाफूसी करने लगे।

उधर रायड़ा ने ठाकुर साहब को जुहार की। अपने कपड़ों के अंदर से निकाल कर कादिरखां की रत्नजटित हत्थे वाली कटार ठाकुर के सामने रख दी। ठाकुर पहले तो कटार की चमक देखकर चौंके, लेकिन रायड़ा की ओर कुछ इस तरह से देखा, मानो पूछ रहे हों कि यह क्या माजरा है?

ठाकुर का इशारा समझकर रायड़ा ने रात की सारी घटना ठाकुर को सुना दी। बताया कि कैसे उसने कादिरखां के तंबू में आग लगाई और घोड़ों को छोड़ दिया, जिससे सारी शाही सेना में खलबली और भगदड़ मच गई।

ठाकुर को शाही सेना की छावनी में रात को होने वाली भगदड़ की जानकारी तो अपने गुप्तचरों से मिल चुकी थी। हां, उसका कारण मालूम नहीं पड़ा था। रायड़ा की बात सुनकर और सबूत में कादिरखां की कटार देखकर ठाकुर खिलखिला कर हंस पड़े। हंसी थमने पर बोले—"अरे, वाह रे मेरा शेर! धन्य है तेरे पराक्रम और हिम्मत को। अब मुझे इन राजपूतों का खेल देखना है।"

ठाकुर ने कुछ सोच कर अपने एक संदेशवाहक को बुलवाया। कादिरखां की कटार उसको देते हुए तुरंत अपना संदेश कादिरखां तक पहुंचाने का आदेश दिया। संदेश में ठाकुर ने कहलवाया—"हम तुम्हारी कटार वापस भेज रहे हैं। तुम भी हमारे मेघवाल की रांपी वापस कर दो। हम चोरों की तरह तुम्हें मारना नहीं चाहते। नहीं तो, उसमें देर ही कितनी लगती? यह तो तुमने हमारे एक मेघवाल की ही करामात देखी है। राजपूतों के हाथ तो अब युद्ध के मैदान में देखने को मिलेंगे।"

कादिरखां यह सब देख-सुनकर बहुत डर गया। उसको ऐसा लगा मानो किसी ने उसी की कटार से उसकी नाक काट ली हो। उसने शाही सेना की छावनी गढ़ी से एक कोस पीछे हटा ली और गश्त-पहरा और भी कड़ा कर दिया। फिर भी कभी-कभी रात में चौंककर उठ बैठता। उसके सैनिकों में भी भय फैल गया था। कुत्ता तो क्या, अब चूहे से भी डरने लगे थे।

राजपूतों ने रायड़ा के पराक्रम की कहानी सुनी, तो शर्म के मारे उनके सिर झुक गए। ●

सफेद गांव

—वादीम बारतेनेव

पुराने जमाने की बात है । वोलगा नदी के किनारे एक गांव था । गांव का नाम बेलोये था । बेलोये शब्द का मतलब होता है —सफेद । इस गांव के लोग सफाई पसंद थे । सब अपने घर चमकाकर रखते । क्योंकि मकान दूध की तरह सफेद रहते इसलिए गांव का नाम बेलोये पड़ गया था । गांव बहुत बड़ा नहीं था । वहां सिर्फ बीस-पच्चीस परिवार रहते थे । उनमें से एक परिवार में एक लड़का था इवान । उसके माता-पिता थे, दादा-दादी थे ।

इवान डाकघर में काम करता था । उसके रिश्तेदार खेत में काम करते थे । सब लोग सुबह उठते और नाश्ता करके काम पर चले जाते । घर में केवल दादा-दादी रह जाते । घर में काम भी बहुत था—कमरों की सफाई करना, दोपहर का खाना बनाना तथा ऐसे ही और दूसरे काम । परिवार में सब लोग एक दूसरे से प्रेम करते थे । मिलजुलकर अपना घर साफ रखते ।

एक दिन इवान जंगल में गया । वहां घूमते हुए अचानक उसने इतनी सुंदर लड़की देखी कि वह हैरान रह गया । थोड़ी देर तक कुछ बोल नहीं सका । लड़की ने उससे पूछा—"तुम कौन हो ? कहां से आए हो ?"

इवान ने जवाब दिया—"मैं बेलोये से आया हूं । वहीं रहता हूं ।"

यह सुनकर लड़की बोली—"अच्छी बात है । मेरा नाम येलेना सुंदरी है । मैं यहां से बहुत दूर रहती हूं । क्या तुम मेरा एक काम करोगे ?"

इवान बोला—"क्यों नहीं देवी जी ! बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं ?"

येलेना सुंदरी ने कहा—"इवान, तुम साहसी आदमी लगते हो । कृपया मेरे लिए सुनहरी चिड़िया पकड़ लाओ । मैं जानती हूं कि यह कठिन काम है। लेकिन अगर तुम ऐसा कर पाओगे तो मैं तुमसे शादी कर लूंगी ।"

कुछ सोचकर इवान ने जवाब दिया—"मैं जरूर कोशिश करूंगा, येलेना । मैं जो कुछ कर सकता हूं, जरूर करूंगा ।" इवान के शब्द सुनकर सुंदरी येलेना अदृश्य हो गई ।

इवान शाम को गांव लौट आया । उसने अपने परिवार वालों को कुछ नहीं बताया । अगले दिन इवान ने सुनहरी चिड़िया पकड़ने के लिए एक जाल बनाया । फिर अपने दस्ताने लेकर किसी को बताए बिना जंगल की ओर चल दिया । जंगल में पहुंचकर उस जगह की खोज करने लगा जहां उसे सुनहरी चिड़िया मिल सकती थी । इवान ने अपने साथ दस्ताने ले लिए थे, क्योंकि सुनहरी चिड़िया के पर गरम होते थे । उसे नंगे हाथों से पकड़ना एकदम असंभव था । ऐसा उसने कई लोगों से सुना था । रात के समय इस चिड़िया के परों से तेज रोशनी निकलती थी । देखने वालों की आंखें चौंधिया जाती थी । ऐसी हालत में कोई उसे देख नहीं सकता था ।



येलेना सुंदरी के बारे में सोचते-सोचते इवान को नींद आ गई। वह गहरी नींद में सो गया। अचानक उसे शोर सुनाई दिया। उसकी नींद खुल गई। वह आंखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखने लगा। सामने के मैदान में अनेक सुनहरी चिड़ियां नीचे उतर रही थीं। इवान ने अपने हाथों से आंखें बंद कर लीं। फिर अंगुलियों के बीच में से चिड़ियों का उतरना देखता रहा।

इवान ने देखा कि एक बड़ी सुनहरी चिड़िया उसके बिल्कुल नजदीक आकर बैठ गई। इवान सांस रोककर, शांत लेटा रहा। शीघ्र ही उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने सावधानी से अपने दस्ताने पहने। फिर वह आड़ से निकलकर बिना शोर किए कुछ कदम चला। सुनहरी चिड़िया को कुछ भी पता नहीं लगा। इवान ने आंखें बंद करके चिड़िया की ओर छलांग लगाई। उसने अपने हाथों से चिड़िया की दुम पकड़ ली।

उसके ऐसा करते ही बाकी चिड़ियां इतनी जोर से चिल्लाने लगीं कि इवान के कानों में दर्द हो गया। लेकिन उसने अपनी आंखें नहीं खोलीं और चिड़िया को हाथों से नहीं निकलने दिया। वह एक बहादुर लड़का था। सुनहरी चिड़ियों ने चिल्लाते-चिल्लाते उड़ना शुरू किया। सबसे पहले वह चिड़िया उड़ी जिसे इवान ने पकड़ रखा था। चिड़िया के साथ-साथ इवान भी आसमान में उड़ने लगा। आसमान में उठते हुए उसने नीचे की ओर देखा, तो बहुत से पहाड़, झील, समुद्र और शहर नजर आए। उसने भारत को भी देखा।

इवान और सुनहरी चिड़िया पृथ्वी के आसपास और अंतरिक्ष में अनेक बार उड़े। आख़िरकार सुनहरी चिड़िया थक गई। उसने कहा—"इवान जी, अब बस! मैं तुम्हारी बहादुरी देखकर बहुत खुश हूं। मुझे पकड़कर तुमने बहुत बहादुरी दिखाई है। बताओ, तुम क्या चाहते हो?"

इवान खुश हो गया। उसने कहा—"मैं चाहता हूं कि तुम येलेना सुंदरी के घर में रहो।"

इस पर सुनहरी चिड़िया ने जवाब दिया—"क्या कहने! तुम मुझे कैद करना चाहते हो?" यह कहकर चिड़िया जमीन पर उतर आई। वह बोली—"तुम येलेना सुंदरी को यहीं ले आओ। मैं तुम्हारा इंतजार करूंगी। जब तक तुम नहीं आओगे, मैं कहीं नहीं जाऊंगी।"

इवान ने येलेना सुंदरी की मुलाकात सुनहरी चिड़िया से कराई। चिड़िया के शरीर से बहुत तेज रोशनी निकलने लगी।

येलेना सुंदरी सुनहरी चिड़िया को देखकर बहुत खुश हुई। उसने इवान के साथ विवाह की बात मान ली। कुछ दिन बाद बेलोये गांव में हंसी-खुशी की लहर दौड़ गई। दोनों का विवाह हो गया। तीन दिन तक दावत होती रही। सबने डटकर शहद खाया। मैं भी वहीं था। मैंने भी खूब शहद खाया। शहद इतना स्वादिष्ट था कि पेट भर गया, पर मन नहीं भरा।●



चटपट

● नीहार—अगर शेर पिंजरे से बाहर आ जाएगा तो क्या होगा ?
रंजन—तो हम न पिंजरे में होंगे, न बाहर।

● एक दर्शक—यह चित्र तो ऊंट का है लेकिन नीचे लिखा है—हाथी ! इसका क्या मतलब ?
दूसरा दर्शक—हर बात का मतलब हो, जरूरी तो नहीं।

● बूढ़ा—हट्टे कट्टे हो, फिर भी भीख मांगते हो। शर्म नहीं आती ?
भिखारी—कैसे आएगी ? आज तक भीख में मिली ही नहीं।

● बाजीगर—देखिए साहबान, मैं मीनार से छलांग लगाऊंगा और नीचे नहीं आऊंगा।
एक दर्शक—यह तो नई बात नहीं हुई। मीनार से छलांग लगाने वाला हर आदमी ऊपर ही जाता है।

● मां—अब क्या होगा ? ताला बंद कर दिया, ताली अल्मारी में ही रह गई।
चुन्नू—ठीक तो है, अब ताली ढूंढ़ने के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।

● पुजारी—आगे बढ़ो। मंदिर में भीड़ न लगाओ।
भक्त—क्या भगवान के घर में भी जगह कम पड़ गई ?

● नौकर—जी, आज बिल्ली फिर दूध पी गई है।
मालिक—विचित्र बिल्ली है। दूध पीते ही रोज तुम्हारी शक्ल धर लेती है।

● एक यात्री—क्या इस स्टेशन पर गाड़ी कभी नहीं रुकेगी ?
दूसरा यात्री—यह बात तो गाड़ी का ड्राइवर ही बता सकता है। कभी गाड़ी रुकी, तो उससे पूछकर बताऊंगा।

● ललिता—यह अस्पताल है या चिड़ियाघर। मरीज एक नहीं, बंदर चार-चार घूम रहे हैं।
विमला—मैं कब से कह रही हूं, अपनी आंखों का इलाज करा लो। यह चिड़ियाघर ही है।

● बहराम—मैंने तुम्हें दस दिन पहले कुछ रुपए उधार दिए थे, अब वापस चाहिएं।
नौशेर—कोई नई बात करो, क्या पुराना पचड़ा ले बैठे।

● कला—भला तरबूज के अंदर रस कैसे भर जाता है ? उसमें सूराख तो होता नहीं।
विजया—उसी तरह जैसे तुम्हारी खोपड़ी में से दिमाग बाहर निकल गया। सूराख तो उसमें भी नहीं है।

● रमा—और फिर एकाएक घना अंधेरा छा गया।
बिट्टू—क्या सारे बल्ब एक साथ ही फ्यूज हो गए थे ? जरूर नकली होंगे।



तेनालीराम (२७७)

घोड़ों की खरीद



राजा कृष्णदेव राय के दरबार में घोड़ों का एक सौदागर आया। अच्छी नस्ल के अनेक घोड़े उसके पास थे। राजा को घोड़े पसंद आ गए। उन्होंने खजांची से कहा—"घोड़ों का उचित मूल्य सौदागर को चुका दो। और घोड़े घुड़साल में भिजवा दो।"

कुछ देर बाद खजांची दौड़ा-दौड़ा आया। उसने सौदागर का हिसाब राजा के सामने रखा। उसे देख राजा भी चौंक गए। सौदागर ने घोड़ों की कीमत बाजार भाव से पचास गुनी अधिक लगाई थी।

राजा परेशान हो गए। मूल्य चुकाने का आदेश-पत्र वापस लेने और खरीदे गए घोड़े वापस करने में प्रतिष्ठा का प्रश्न आड़े आया। मंत्री से राय ली। उसने कहा—"सौदागर लुटेरा है। उसे दंड दिया जाए।"



सेनापति से राय ली। उसने कहा—"बाजार भाव से पचास गुनी कीमत वसूलने के अपराध में सौदागर के सारे घोड़े जब्त कर लिए जाएं।"

राजा को दोनों की बातें सही नहीं लगीं। तेनालीराम भी वहीं था। राजा ने कहा —"क्या कोई ऐसा उपाय नहीं हो सकता, जिससे सौदागर को अपनी गलती का अहसास स्वयं हो जाए। हमें कुछ कहना या करना न पड़े?"

तेनालीराम ने राजा के कान में कुछ कहा। राजा प्रसन्न हो उठे। सौदागर पैसे मांगने आया, तो खजांची ने उसे छठे दिन आने के लिए कह दिया। सौदागर नगर की एक सराय में रुक गया।



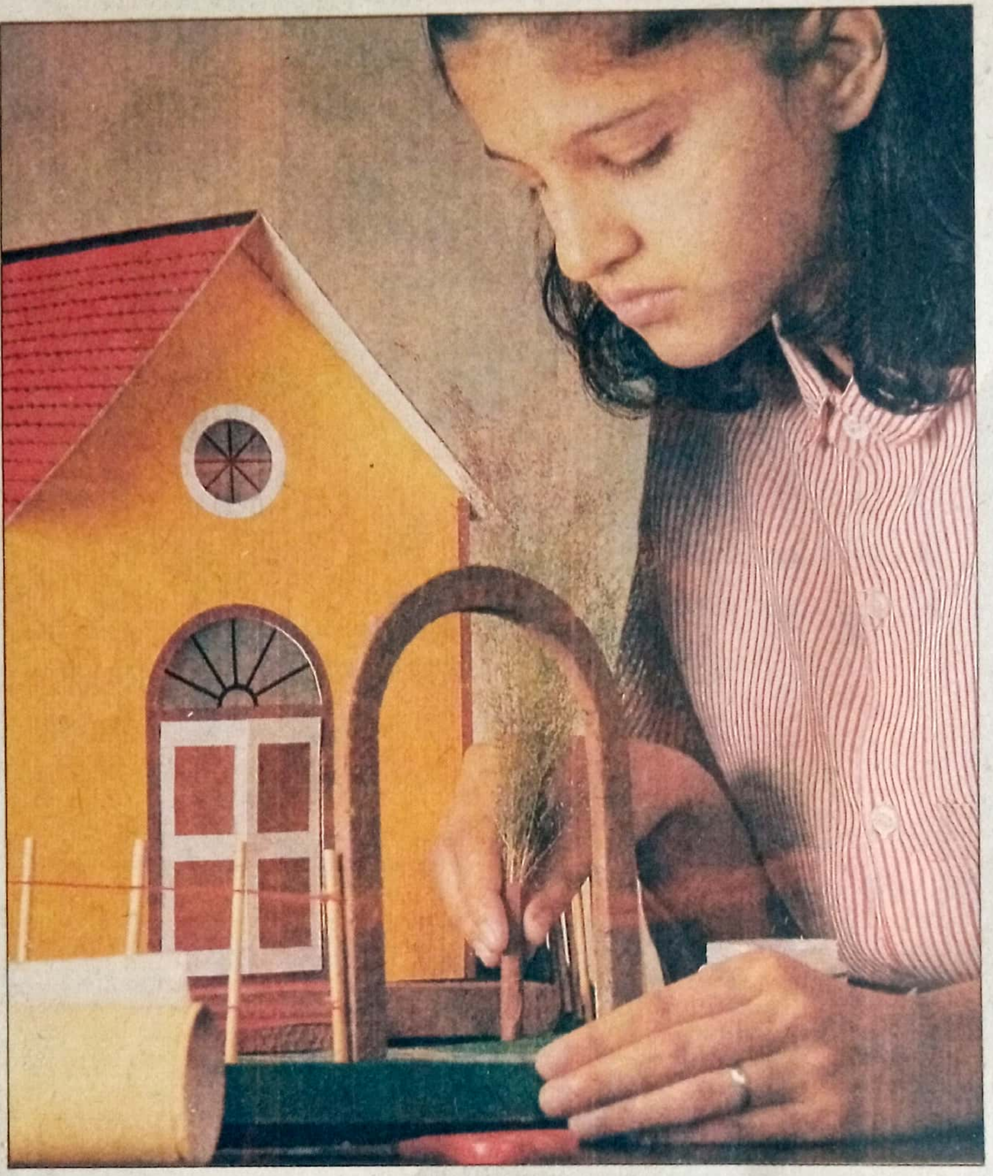
छठे दिन सौदागर ने सराय के मालिक से ठहरने और खाने-पीने का हिसाब मांगा। सराय के मालिक ने उसे हिसाब दिया, तो सौदागर जैसे आसमान से गिरा। हिसाब लगभग उतनी ही रकम का था, जितनी उसे राजा से मिलनी थी।

दोनों में झगड़ा होने लगा। सिपाहियों ने उन्हें बंदी बना दरबार में पेश किया। राजा ने दोनों की बात सुनी। सौदागर बोला—"मैं बाहर का हूं, इसीलिए सराय वाला अधिक पैसे मांग रहा है। आप न्याय करें।"



"तुमने भी तो ऐसा ही किया।" —तभी तेनालीराम बोला—"तुमने भी घोड़ों की कीमत बाजार भाव से पचास गुना अधिक बताई। क्या घोड़े इतनी कीमत के हैं?"

सुनते ही सौदागर का सिर झुक गया। उसने अपनी गलती मान ली। राजा मुसकराकर तेनालीराम की ओर देखने लगे।



जब मन में हो आर्किटेक्ट बनने की चाहत
तब अचूकता की ही रहती है जरूरत.

उसकी तो बस एक ही तमन्ना है कि वो आर्किटेक्ट बने–सबसे अच्छी आर्किटेक्ट.
वो खुद अपने मॉडेल नापना, रेखाचित्र बनाना, नई रचनाएँ करना पसंद करती है.
वो जो भी करती है उसमें उसे चाहिए पूरी सफलता.
इसीलिए वो हमेशा सर्वोत्तम जॉमेट्री सेट ही चुनती है.
कोरस सक्सेसः प्रोट्रेक्टर, डिवाइडर, कंपास, स्केल–
सभी अचूकता के लिए हैं. सदा ही सही
कार्य करने के लिए ही बने हैं. यह कार्यकुशल सेट
आपके लिए लाल और सफ़ेद आकर्षक टिकाऊ
मेटल बॉक्स में पेश है.

सर्वोत्तम... सिर्फ़ सर्वोत्तम से ही बनेगी बात,
यदि आपको है सर्वोत्तम और सफलता की चाहत।



कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट
आपकी सफलता का साधन

कोरस (इंडिया) लि., बंबई 400 018. शाखाएँ भारत के सभी शहरों में

AKA/468/HN-01


100* ग्लास पैक
NEW REFRESHING
Rasna
soft drink concentrate
100 Glass Party Pack
32 ग्लास पैक
6* ग्लास पैक
नया ताज़गी भरा
रसना
सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्संट्रेट
कितनी मज़ेदार
होती हैं छुट्टियां.
न क्लासवर्क और
न ही होमवर्क.
खेल ही खेल और
ढेर सारा प्यारा रसना.
आइ लव यू रसना
ऑरेंज पाइनेपल लाइम शाही गुलाब काला खट्टा कूल खस
केसर इलायची मसाला सोडा (जल जीरा) टूटी फ्रूटी मैंगो राइप
पहला
IS 13019
ISI
प्रमाणित
सॉफ्ट ड्रिंक
कॉन्संट्रेट
इसमें
बी वी ओ नहीं है
* केवल चुने हुए शहरों मे ही उपलब्ध
Mudra A EAMR 5484 Hin



CASIO
सुर के परदों पर हाथ फिराओ
मस्ती में झूम-झूम जाओ
मनचाहे संगीत का केसियो पर आनन्द उठाओ... बस परदों पर हाथ घुमाओ.
लय की धुन पर बजाओ मनपसन्द गीत... और देखो, कैसे थिरकते हैं प्यारे तुम्हारे मीत!
तो आओ, केसियो की संगीत भरी मस्ती का असली आनन्द उठाओ... सचमुच इसका जवाब कहीं न पाओ!
SA-20
• 32 मिनी की वाले • 100 पी सी एम पहले ही सेट किए टोन • 19 पी सी एम ऑटो-रिद्म • 13 "सुपर अकम्पनीमेंट" बैकिंग पैटर्न • पहले से सेट की हुई प्रदर्शन ट्यून • दोहरा स्पीकर सिस्टम.
SA-21
• 32 मिनी की वाले • 100 पी सी एम पहले ही सेट किए टोन • 19 पी सी एम, ऑटो-रिद्म • 13 "सुपर अकम्पनीमेंट" बैकिंग पैटर्न • 5 पहले सेट की हुई प्रदर्शन ट्यून • 5 बिल्ट-इन ड्रम पैड • दोहरा स्पीकर सिस्टम
PT-480
• 32 मिनी की वाले • 100 पी सी एम पहले ही सेट किए टोन • 12 पी सी एम ऑटो-रिद्म
CITY MUSIC CO., PTE LTD.
Singapore Tel: 3377058, 3377545
ONFLO MUSIC CO., LTD.
Hong Kong Tel: 722 4195
RAINBOW PHOTO FINISHERS PTE LTD.
Nepal, Kathmandu Tel: 221724
GENERAL ENTERPRISES COMPANY
U.A.E., Dubai Tel: 224131/2/3
MAHMOOD SALEH ABBAR CO.
Saudi Arabia, Jeddah Tel: (02)6473995
ARABIAN CAR MARKETING CO., LTD.
Oman Tel: 793741
CASIO COMPUTER CO., LTD.
Tokyo, Japan

राम का वरदान

—इंद्रा गुप्त

राजा भगीरथ को कौन नहीं जानता ? वह बड़े प्रतापी राजा थे। एक बार भगीरथ ने कैलाश पर्वत पर भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए कठोर तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो, भगवान विष्णु से वरदान में उन्हें मिली विष्णुपदी। इससे भी भगीरथ को संतोष नहीं हुआ। वह फिर भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या करने लगे। भगवान शंकर ठहरे भोलेनाथ। वह भगीरथ के मन की बात जान गए। विष्णुपद से निकली विष्णुपदी की जल धारा का वेग अति प्रचंड था। बस, शिव ने विष्णुपदी के प्रचंड प्रवाह को शांत करने के लिए उसे अपनी जटाओं में बांध लिया। प्रवाह रुक गया, तो उन्होंने उस जल धारा को धीरे-धीरे मानसझील में छोड़ दिया। वहां से वह जल धारा महाराज भगीरथ के पीछे-पीछे गंगासागर तक पहुंची। इसीलिए उसका नाम पड़ा भगीरथी गंगा।

दक्षिण में भी ऐसी ही नदी है पूर्णा। शिवगिरि पर्वत में कतलीमलई से निकली। केरल और तमिलनाडु में २४४ किलोमीटर लम्बी यात्रा करके यह नदी अरब खाड़ी में जा मिलती है। पूर्णा केरल की सबसे लम्बी नदी है। इसीलिए मलयालम में इसका नाम है पेरियार।

पेरियार नदी के साथ एक पौराणिक कथा जुड़ी है। कथा है रामायण काल की। भगवान श्रीराम को राजतिलक के बदले चौदह वर्ष का वनवास मिला। इन वनवास के बहाने राम को प्रजा से मिलने-जुलने और जानने का पूरा-पूरा अवसर मिला। राम का अपनत्व पाकर प्रजा धन्य-धन्य हो उठी। प्रजा का अपार सहयोग पाकर, राम का बल-विक्रम बढ़ गया।

राम-सीता और लक्ष्मण घूमते-घूमते दक्षिण के एक घने जंगल में पहुंचे। भांति-भांति के जीव-जंतुओं को मौज-मस्ती में उन्होंने घूमते देखा। पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी चहचहा रहे थे। रास्ते में पूर्णा नदी भी मिली। जल झर-झर कर रहा था। इस रमणीक स्थान को देखकर, राम ने वहां कुछ समय विश्राम करने का निश्चय किया। झाड़-फूस, पत्तों की कुटिया बनाई। कंद-मूल-फल का भोजन किया। पूर्णा का स्वच्छ शीतल जल और साथ में नारियल का मीठा, दूध से धवल पानी उन्होंने पिया। श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण उस जंगल का भरपूर आनंद उठाने लगे।

एक दिन की बात है, सीताजी पूर्णा नदी में स्नान कर रही थीं। तभी एक वनवासी दम्पति उधर आ निकले। पुरुष का नाम था कुरावन और स्त्री का नाम कुराथी था। सीताजी के सलोने रूप को देखकर दोनों मंत्रमुग्ध-से हो गए। पास से देखने की इच्छा से धीरे-धीरे उसी ओर बढ़ने लगे।

उन्हें अपनी ओर आते देख, सीताजी घबरा गईं। डर के मारे उनकी चीख निकल गई। चीख सुनकर, श्रीराम कुटिया से बाहर निकले। कुरावन और कुराथी की ओर राम ने घूरकर देखा। उन्हें घूरते देख, दोनों पथराने लगे। श्रीराम ने तुरंत स्थिति को समझा। उन दोनों का मन साफ था। श्रीराम सोचने लगे—'ये तो निर्दोष हैं। क्यों दंड पाए ?' लेकिन वे दोनों तो पाषाण बनते जा रहे थे। इसका निदान जरूरी था। श्रीराम ने उन्हें मुक्ति का वरदान दिया— 'कलियुग में जन-जीवन के कल्याण का साधन तुम बनोगे।'

उसी समय कुरावन और कुराथी दो पहाड़ियां बन गई थीं। पूर्णा नदी उनके बीच से होकर बहने लगी। इन्हीं को बांधकर आज विकास को नई दिशा, नई गति दी गई है। इस बांधने को मलयालम में इड्डुकि कहते हैं। इसीलिए इसका नाम है—इड्डुकि बांध। इससे पूर्णा के जल को बांधकर बिजली पैदा करने की व्यवस्था की गई है।

शिवगिरि से वरदान के रूप में निकली पूर्णा संत-ऋषियों का पुण्य तीर्थ थी। और अब श्रीराम के वरदान से कुरावन-कुराथी पर्वत श्रेणी के बीच से बहती इस नदी पर बांध बंध जाने से पेरियार घाटी विकास-तीर्थ बन गई है।

उस पार

— अभिलाष कौशिक

अम्मालपुर से बहुत दूर समुद्र के बीच था सोनाली द्वीप। नगर से द्वीप तक पानी के जहाज आते-जाते थे। सोनाली में छोटी-सी बच्ची रहती थी। नाम था नीलम। सारे दिन यहां से वहां घूमती रहती।

एक दिन नीलम ने द्वीप में एक अजनबी युवती को देखा। उसने सफेद पोशाक पहन रखी थी। वह घर-घर जाकर लोगों से मिल रही थी। नीलम हैरान थी— 'यह युवती कौन है? यहां क्यों आई है? देखने में तो पढ़ी-लिखी, समझदार लगती है। सोनाली द्वीप में तो कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं है...'

नीलम ने जल्दी ही उस युवती से जान-पहचान बढ़ा ली। नीलम के पूछने पर उसने हंसकर बताया— "मैं नर्स हूं... मेरा नाम है सोमा। लोगों की सेवा करती हूं,इसीलिए यहां आई हूं। यहां के लोग बहुत अच्छे हैं..."

सुनकर नीलम को अच्छा लगा। सोचने लगी— 'इतना बड़ा द्वीप!... पर यहां तो एक भी नर्स नहीं है। बाहर से यह नर्स आई है, तो मैं क्यों नहीं बन सकती नर्स?'

फिर तो जितने दिन सोमा द्वीप पर रही, नीलम घुल-मिलकर उससे बातें करती। उसे अम्मां से सुनीं सोनाली द्वीप की मजेदार कहानियां सुनाती। अच्छी तरह दिन कट रहे थे। लेकिन एक दिन सोमा लौट गई। बोली— "फिर मिलेंगे नीलम। अब तो मुझे जाना होगा।"

सोमा के जाने के बाद नीलम उदास हो गई। अम्मां के पूछने पर उसने सब कुछ बता दिया। अपनी इच्छा भी। अम्मां बोलीं— "यह दूर का सपना है बेटी! यहां के लोग पढ़े-लिखे ही नहीं हैं, फिर..."

—"पर अम्मां, मैं नर्स बनूंगी... बनकर रहूंगी।"

उसी दिन से नीलम का जीने का ढंग ही बदल गया। रोजाना दौड़-दौड़कर, समुद्र तट पर जाती। पता करती, कोई जहाज अम्मालपुर तो नहीं जा रहा। कोई उसकी बातों को सुनता, कोई यों ही हंसकर उड़ा देता।

एक दिन नीलम ने देखा, एक जहाज अम्मालपुर जाने की तैयारी में है। बड़ी मात्रा में नारियल का रेशा उसमें लादा जा रहा था। कप्तान छोटी-छोटी नौकाओं से सामान जहाज में रखवा रहा था। नीलम दौड़कर कप्तान के पास गई। बोली— "क्या आप सचमुच अम्मालपुर जा रहे हैं?"

"हां।"— कप्तान ने मुसकराते हुए कहा— "क्यों पूछ रही हो? क्या वहां तुम्हारी कोई सहेली रहती है?"

"सहेली तो नहीं रहती। लेकिन वहां रहूंगी, तो



सहेलियां बन ही जाएंगी। मैं वहां जाकर पढ़ना चाहती हूं। पढ़-लिखकर नर्स बनूंगी। मुझे आप अपने साथ ले जाएंगे न!"— नीलम ने अनुरोध करते हुए कहा।

"लेकिन तुम अकेली वहां रहोगी कैसे? लगता है, तुम जरूर अपने मां-बाप से लड़कर आई हो। जाओ, घर चली जाओ, अच्छी बच्ची!"— कहकर कप्तान फिर अपने काम में लग गया।

नीलम दुखी होकर घर लौट आई। उसने अम्मां को सारी बात बता दी।

कप्तान रवाना होना ही चाहता था कि अचानक उसने देखा, एक स्त्री तेजी से उसी ओर चली आ रही है। उसके साथ एक छोटी बच्ची थी। कप्तान ने पहचान लिया, वह नीलम ही थी।

जहाज के पास आकर उस स्त्री ने कप्तान से कहा— "आप अम्मालपुर जा रहे हैं, तो मेरी बेटी को जरूर ले जाइए। वहां जाकर पढ़ना चाहती है ।" कहते-कहते उस स्त्री की आंखें डबडबा आईं।

अब कप्तान इंकार न कर सका। नीलम जहाज पर सवार हो गई। पाल खींच लिए गए। जहाज चल पड़ा। नीलम जहाज के अंदर जाकर सो गई।

सुबह जहाज के कर्मचारियों ने नीलम को उठाया। उसे चाय और खाने के लिए बिसकुट दिए। मन लगाने के लिए उससे ढेरों बातें करते रहे। नीलम खुश थी। समुद्र के जल पर सुनहरी किरणें फैली थीं। प्रकृति का यह निराला सौंदर्य उसे भा रहा था। कभी-कभी उसका ध्यान पानी की सतह से ऊपर उछलती मछलियों पर भी चला जाता। उन्हें देख-देखकर वह तालियां बजा देती।

इसी तरह एक-एक कर कई दिन बीत गए। एक दिन जहाज का कर्मचारी छत पर चढ़ा, तो दूर जमीन को देखकर चिल्ला पड़ा— "जमीन ! जमीन !!"

सुनते ही जहाज के यात्रियों में खुशी की लहर दौड़ गई। सभी यात्री अपना-अपना सामान समेटने लगे। बंदरगाह पर उतरने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे। फिर एकाएक जोर का तूफान आया। भयानक गर्जना हो रही थी। जहाज बुरी तरह समुद्र की लहरों पर हिल रहा था।

फौरन पाल खींच लिए गए। यात्रियों के चेहरे भय के कारण सफेद पड़ गए थे, जैसे वे सांस लेना तक भूल गए हों। नीलम ने दोनों हाथ अपने कानों पर रख लिए थे। मन ही मन प्रार्थना कर रही थी कि यह तूफान शांत हो जाए। लेकिन छोटा-सा जहाज तूफान के आगे ठहर न सका। देखते ही देखते जहाज टूट-फूट गया। यात्री एक-एक कर पानी में कूदने लगे। किसी को नीलम का ध्यान न रहा। नीलम को मौत सामने नजर आ रही थी। हिम्मत करके वह भी पानी में कूद पड़ी।

बहुत देर तक नीलम तैरती रही। लेकिन समुद्र की पछाड़ें खाती लहरों में उसके हाथ-पांव सुस्त पड़ गए। लग रहा था, शायद अब तट तक पहुंचना सम्भव न हो। उसने इधर-उधर देखा। दूर उसे लकड़ी का तख्ता नजर आया। जहाज से टूटकर अलग जा पड़ा था। पर वहां तक पहुंचना आसान न था। नीलम ने पूरी ताकत बटोरी और जोर-जोर से हाथ-पैर मारते हुए उसी तख्ते की ओर बढ़ी। आखिर वह तख्ता उसके हाथ में आ गया। नीलम ने उसे कसकर पकड़ लिया। फिर उसे कुछ होश न रहा।

नीलम को होश आया, तो उसने देखा, वह तट पर लेटी है। आसपास जहाज के और यात्री थे। सभी उदास नजरों से उसे देखे जा रहे थे।

नीलम को होश में आया देख, सभी के चेहरे खुशी से चमकने लगे। कप्तान दौड़ा-दौड़ा आया। बोला— "नीलम, अच्छी बच्ची ! हम सभी खतरे से बाहर आ गए। अब तक मैं केवल तुम्हारी ही चिंता कर रहा था। ... ईश्वर ने तुम्हें बचा लिया। अब तुम्हारा सपना भी पूरा होगा।"

अगले दिन कप्तान खुद नीलम को लेकर स्कूल गया। हैडमास्टर को सारी बात बताई। सुनकर वह बोले— "नीलम को पढ़ने का इतना ही शौक है, तो भला उसे कौन रोक सकता है ? आज से यह मेरी देखरेख में रहेगी। आप इसकी बिलकुल चिंता न करें।"

नीलम को लगा, एक नई दुनिया के द्वार उसके आगे खुल गए हैं। जब कप्तान चलने को हुआ, नीलम ने डबडबाई आंखों से कहा— "आप जब कभी सोनाली द्वीप जाएं, अम्मां को कहिएगा, मैं ठीक से हूं। अब कुछ बनकर ही घर लौटूंगी।"

और सचमुच नीलम की मेहनत ने सबको चकित कर दिया। सोमा दीदी को पता चला, तो वह भी उससे मिलने आईं। नीलम खुशी के मारे उनसे लिपट गई।

साल पर साल बीते। नीलम ने मेहनत से परीक्षा पास कर ली। वह सोनाली द्वीप लौटी, तो अम्मां, बाबू ही नहीं, सोनाली द्वीप के लोग भी उसका स्वागत करने के लिए उमड़ आए। ●

सबसे बड़ा यज्ञ

—दिनेश दर्पण

अभयारण्य में ऐसा भयंकर अकाल पहले कभी नहीं पड़ा था। राजकोष में जमा अन्न समाप्त हो चला था। पानी के अभाव में लोग दम तोड़ रहे थे। राहत के सारे प्रबंध असफल सिद्ध हो रहे थे। सम्राट विडाल ने पंडितों और ज्योतिषियों की बैठक बुलाई। निश्चय हुआ कि इंद्र को प्रसन्न करने के लिए विशाल यज्ञ का आयोजन किया जाए।

संत शार्गंधर भी उसी प्रदेश में रहते थे। उनके दो पुत्र और पत्नी भी भूख-प्यास के कारण अपने प्राण त्याग चुके थे। उनके बिछुड़ने का उन्हें जितना दुःख हुआ, उससे अधिक इस बात का था कि यदि कोई उपाय नहीं निकला, तो राज्य की अधिकांश जनता अकाल के कारण दम तोड़ देगी।

पड़ोसी राज्य से सहयोग पाने व अन्न जुटाने के लिए वह चल पड़े। कौमीलिया नामक स्थान पर जाकर एक सेठ के यहां संत शार्गंधर ने नौकरी कर ली। संत की विद्वत्ता तथा आचरण से सेठ बहुत खुश हुआ। उसने पारिश्रमिक में संत को एक सहस्र मुद्राएं दीं। उन्हें लेकर वह स्वदेश लौटे, किंतु अभी सीमा पर ही पहुंच पाए थे कि देखा, सैकड़ों भूखे व्यक्ति भीख मांग रहे थे। संत के हृदय में करुणा उमड़ पड़ी। उन्होंने वे मुद्राएं भूखे लोगों में बांट दीं और फिर काम की खोज में लौट गए।

इस बार उन्हें एक किसान के यहां नौकरी मिली। किसान भी उनकी मेहनत और ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन्हें बहुत-सा अन्न तथा कुछ मुद्राएं दीं। जैसे ही कमाई लेकर संत ने राज्य की सीमा में प्रवेश किया, तो देखा अनेक स्त्रियां भूख से बिलबिलाते अबोध बच्चों को देख, रो रही थीं। उन्होंने अपनी कमाई से वस्त्र खरीदे और अन्न के साथ उन्हें सब में बांट दिया। और फिर काम की खोज में वहां से लौट पड़े।

इस बार उन्हें एक चांडाल के यहां काम मिला। उन्होंने खुशी-खुशी काम करना शुरू कर दिया। पूरे सप्ताह काम करने के बाद चांडाल ने उन्हें पांच रोटियां दीं। संत रोटियां लेकर अपने घर वापस चले। जैसे ही एक गांव में पहुंचे, उन्हें एक करुण दृश्य दिखाई दिया। एक किसान के छह पुत्रों को कहीं से एक रोटी मिली थी। सभी भूखे थे। इसलिए रोटी, एक-दूसरे से छीनने के लिए झगड़ रहे थे। यह दृश्य देखकर संत शार्गंधर का हृदय हाहाकार कर उठा। उन्होंने लड़कों को शांत किया और अपनी पांचों रोटियां उनमें बांट दीं।

पृथ्वी का यह दृश्य आकाश से सब देवता देख रहे थे। जैसे ही संत ने लड़कों के हाथ में रोटियां थमाईं, आकाश में तेज ध्वनि हुई। बिजली कड़कने लगी और देखते ही देखते घनघोर घटाएं आकाश में घिर आईं। मूसलाधार वर्षा होने लगी।

उधर सम्राट विडाल के यहां यज्ञ की सभी तैयारियां पूर्ण हो चुकी थीं। मंगल कलश स्थापित किए ज़ा चुके थे। आचार्य गण देवताओं का आह्वान करने ही वाले थे कि अचानक वर्षा होती देख, सभी चकित रह गए। उन्होंने इंद्र देवता से प्रार्थना की। वह प्रकट हुए, तो आचार्यों ने उनसे पूछा—"देवेश, इस अनहोनी का कारण क्या है ? न ऋचाएं बोली गईं, न आहुतियां पड़ीं, न यज्ञ पूरा हुआ, फिर भी आपकी दया मेघ बनकर कैसे बरसने लगी ?"

इंद्र मुसकराते हुए बोले—"यज्ञ तो पूरा हो गया। अब आप किस यज्ञ की तैयारी कर रहे हैं ?"

विद्वानों तथा ऋषि मुनियों की सभा में खलबली मच गई। सबके मुंह से एक ही प्रश्न निकला—"किसने सम्पन्न किया यह यज्ञ ?"

इंद्र ने संत शार्गंधर के परोपकार की सारी बात सुनाते हुए कहा—"परमार्थ ही सबसे बड़ा यज्ञ है। जहां भी यह यज्ञ होता रहेगा, वहां कभी भी अकाल की छाया नहीं पड़ सकती।" •

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
  सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अम्मां, उसके— का कारण पता चला ? (रोग/रोने)

२. चल, मेरे—मत खा। (कान/काजू)

४.—ही तो स्वर्ग में जाने की सीढ़ी है राधेलाल जी ! (पूजा/पूत)

६. सभी ने बढ़िया—की तारीफ की। (खाने/गाने)

७. छुटकी ने हाथ लगाया ही था कि डोर—गई। (कट/टूट)

८. न जाने मेरे—को क्या हो गया है ? (गले/गधे)

१०. परी ने छड़ी हिलाई और पलक झपकते—गायब ! (बौना/मीना)

१२. इन किरणों से इलाज भी होता है।

ऊपर से नीचे

३. सेठ जी,—तो मैं बाद में लूंगा। (घोड़ा/भाड़ा)

५. मैंने कहा न, यहं—यहां न बेचना। (दवा/दरी)

९. ताज्जुब है, तुमने इस खरगोश का नाम—क्यों रखा ! (शीबू/बाबू)

११. कभी देखा है यह फूल ?

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २७०

नाम ____________________

आयु __________ पता __________

____

____



नं. ज्ञा. प. २७०

सेवक राजा

—रत्नप्रकाश शील

बहुत दिन हुए—कुल्लू का राजा था जगतसिंह। बड़ा ही अन्यायी और जालिम। जो मन में आता, करता। प्रजा की जो चीज मन को भा जाती, उस पर अपना अधिकार जमा लेता।

एक बार उसे पता चला कि किसी ब्राह्मण के पास कई अद्‌भुत हीरे हैं। बस, जगतसिंह बेचैन हो उठा। तुरंत सिपाही भेजकर ब्राह्मण से हीरे मंगवाए। ब्राह्मण ने हीरे देने से इंकार कर दिया। सुनकर वह आग-बबूला हो उठा। सैनिकों को ले, स्वयं ब्राह्मण से हीरे छीनने के लिए चल पड़ा।

ब्राह्मण को जगतसिंह के आने का समाचार मिला। वह घबरा गया। जगतसिंह ने दरवाजा खटखटाया, मगर ब्राह्मण ने दरवाजा नहीं खोला। क्रोध में आकर जगतसिंह ने सिपाहियों से कहा—"तोड़ दो दरवाजा और लगा दो घर में आग।" बस घर धू-धू करके ज़ल उठा। बेचारा ब्राह्मण जलकर मर गया। अब जगतसिंह को न हीरे मिले, न ब्राह्मण। उलटे ब्रह्म हत्या गले पड़ गई।

महल लौटा, तो भूख लगी थी। भोजन परोसा गया, तो गजब हो गया। उसे भोजन की थाली में कीड़े रेंगते नजर आए। फिर दूसरी थाली मंगवाई। वह भी कीड़ों से भरी थी। अब तो राजा परेशान हो गया। हफ़्तों भूखा रहना पड़ा, तो बौखला उठा। पंडित-ज्योतिषी बुलवाए। उनसे पूछा—"ऐसा क्यों हो रहा है? हर बार सामने आते ही भोजन में कीड़े क्यों पड़ जाते हैं?"

ज्योतिषियों ने गणना की। पंडितों ने हिसाब लगाया। बोले—"आपको ब्रह्म हत्या लगी है। इसका पाप तभी धुलेगा, जब अपना राज्य रघुनाथजी को सौंप देंगे। खुद उनके सेवक बनकर राज-काज करेंगे।"

जगतसिंह गहरी चिंता में डूब गया। रघुनाथजी तो अयोध्या में थे। उन्हें कुल्लू कैसे लाया जाए? ऐसे उन्हें कौन लाने देगा? सारी रात राजा को नींद नहीं आई। सवेरे रानी ने सुझाया—'किसी शातिर चोर को अयोध्या भेज दो। वह रघुनाथजी की मूर्ति चुराकर कुल्लू ले आए।'

राजा को रानी का सुझाव जंच गया। तुरंत कुल्लू के नामी चोर को यह काम सौंप दिया गया। चोर पंडित का वेश बनाकर अयोध्या पहुंचा। रघुनाथजी के मंदिर में ठहर गया। फिर एक दिन मौका पा, रघुनाथजी की मूर्ति चुरा कर भाग निकला।

कुछ ही देर बाद मूर्ति की चोरी का पता चल गया। मंदिर के पंडित-पुजारी और राज्य के सैनिक चोर की तलाश में जुट गए। आखिर हरिद्वार में चोर पकड़ा गया। बड़ी ले-दे मची। चोर ने पैंतरा बदला। बोला—"रघुनाथजी अयोध्या छोड़, कुल्लू जाना चाहते थे। मुझे सपने में आदेश दिया था। इसीलिए ले जा रहा हूं।" अयोध्या के बड़े पुजारी ने इस बात को चोर का मनगढ़ंत तर्क बताया। मूर्ति को वापस अयोध्या ले जाने के लिए उठाना चाहा, पर मूर्ति हिली तक नहीं।

पुजारी चकरा गया। मूर्ति को उठाने के लिए कई पुजारी लगे। फिर भी मूर्ति उठा न पाए। चोर ने कुल्लू ले जाने के लिए मूर्ति उठाई, तो उठ गई। पुजारी कहने लगे—"भगवान की मर्जी। वह ही जाना चाहते हैं, हम क्या करें!"

इस प्रकार रघुनाथजी की मूर्ति कुल्लू पहुंच गई। भव्य मंदिर बनवाकर जगतसिंह ने धूमधाम से रघुनाथजी की स्थापना की। जब तक जीवित रहा, उनका सेवक बनकर राज-काज चलाता रहा।

कुल्लू में अनेक गांव हैं। हर गांव का अपना देवता है। रघुनाथजी उन सारे देवताओं के राजा हैं। हर वर्ष दशहरे पर सारे देवताओं की रंग-बिरंगी झांकियां निकलती हैं। उन सबको रघुनाथजी के मंदिर में ले जाया जाता है। वहां रघुनाथजी का दरबार लगता है। उत्सव को देखने के लिए देश-विदेश से हजारों पर्यटक कुल्लू आते हैं। ●



पहले गणेश

—सुधा गर्ग

एक बार भगवान शिव को घुमक्कड़ी की सूझी। बस, हिरन का रूप धर, कैलास पर्वत से चल दिए।

शिव की इस लीला से देवताओं में खलबली मच गई—'कहां गए ? कहां गए ?' ब्रह्मा, विष्णु और इंद्र उन्हें तलाश करने निकले।

खोजते-खोजते उन्हें हिरन बने शिव बिल्व वृक्ष के नीचे विश्राम करते दिखाई दे गए। फिर क्या था ! तीनों ने दौड़कर उनके सींग पकड़ लिए।

शिव क्षण भर को विस्मित हुए, किंतु तुरंत सींग छोड़, अदृश्य हो गए। ब्रह्माजी के हाथ लगा सींग का मध्य भाग। विष्णुजी के हाथ लगा नीचे का हिस्सा और इंद्र के हाथ लगा सींग के ऊपर का भाग।

इंद्र ने वह भाग पवित्र शिवलिंग के रूप में स्वर्ग में स्थापित करा दिया। कुछ समय बाद रावण के पुत्र मेघनाद ने इंद्र को हराने के लिए स्वर्ग पर चढ़ाई की। इंद्र को पराजित कर दिया।

रावण की मां कैकसी शिव भक्त थी। समुद्र तट पर बालू का शिवलिंग बनाकर पूजा किया करती थी। समुद्र की लहरें बार-बार शिवलिंग बहाकर ले जाया करती थीं। इससे कैकसी बड़ी दुखी थी।

स्वर्ग पर विजय प्राप्त की, तो रावण ने वहां स्थापित शिवलिंग को मां के लिए लंका ले जाने का निश्चय किया। उसने शिव की आराधना की। अपने साथ लंका चलने की प्रार्थना की। शिव एक शर्त पर माने कि सारे रास्ते वह सिर पर ही चलेंगे।

रावण मान गया। शिवलिंग को सिर पर रख, वायु वेग से लंका की ओर चला। उधर देवताओं में हलचल मच गई। स्वर्ग का शिवलिंग लंका चला गया, तो उनकी बड़ी बदनामी होगी। मगर करें, तो क्या करें ? रावण को कैसे रोकें ? उससे शिवलिंग कैसे छीनें ?

गणेशजी बोले—"मैं कुछ करता हूं।" बस, ब्रह्मचारी का वेश बना, रावण के पीछे-पीछे चल दिए। रावण शिवलिंग को ढोते-ढोते थक गया, तो वह उसके आगे निकल गए। रावण ने उन्हें पुकारा। बोला—"विप्रवर, मैं थक गया हूं। कुछ देर तुम इस शिवलिंग को सिर पर रखे रहो। मैं विश्राम कर लूं।"

गणेशजी मान गए। रावण शिवलिंग को उन्हें दे, विश्राम करने चला गया। गणेशजी का प्रयोजन पूरा हो गया था, किंतु रावण को उन्होंने वचन दिया था कि शिवलिंग को सिर पर ही रखेंगे। अतः उन्होंने रावण को पुकार कर तीन बार कहा—"रावण, अपनी मूर्ति ले लो। यह भारी है। मैं इसे अब सिर पर नहीं रख सकता।"

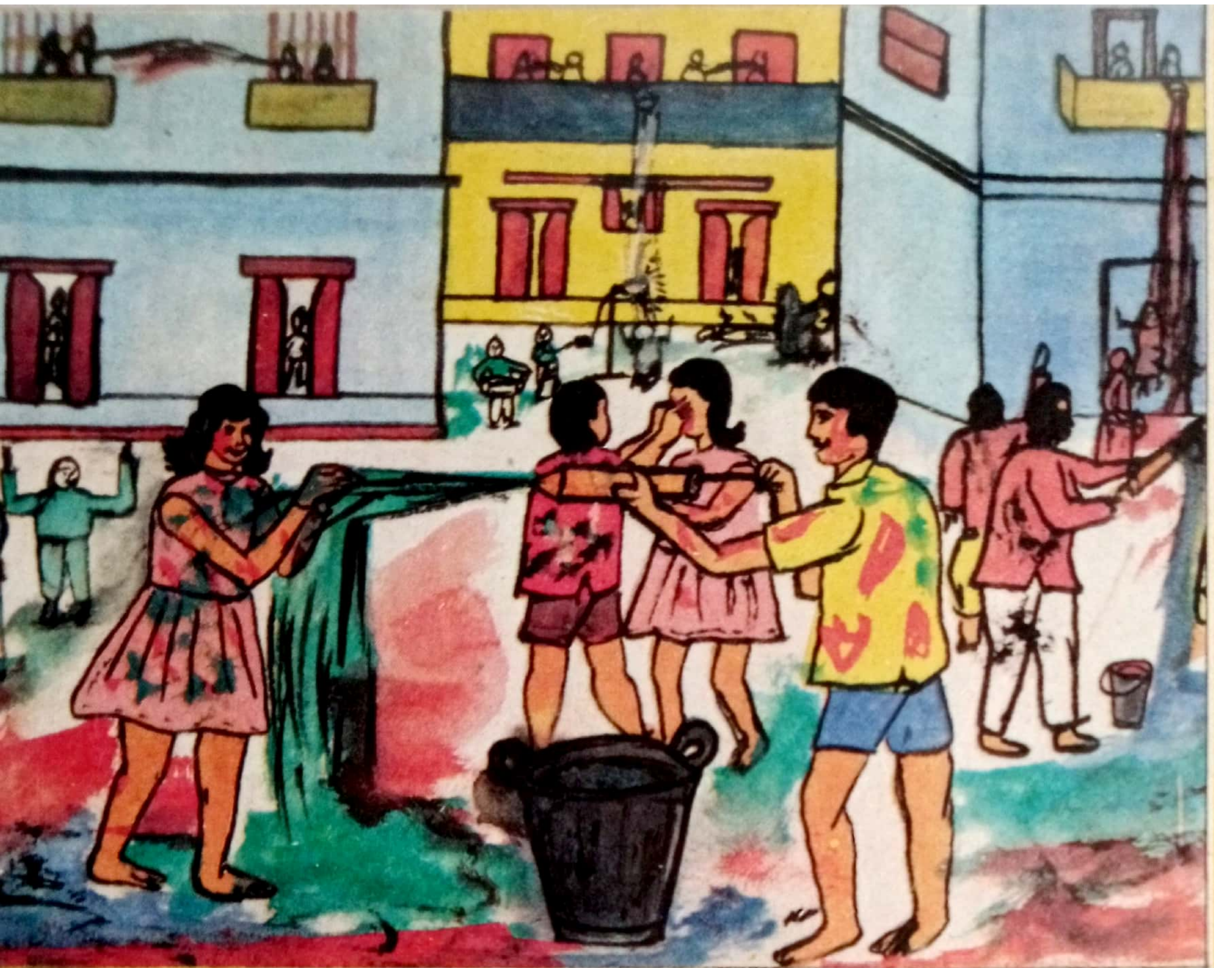
किंतु रावण ने उनकी आवाज सुनी नहीं। सुनता भी कैसे ? गणेशजी धीमे बोल रहे थे। बस, गणेशजी ने शिवलिंग को सिर से उतार, भूमि पर रख दिया।

आया रावण। शिवलिंग को भूमि पर रखा देख, वह आग-बबूला हो उठा। उसे उठाना चाहा, किंतु वह उठा नहीं। खीजकर रावण ने गणेशजी के मस्तक पर प्रहार किया। गणेशजी लड़खड़ा गए। चालीस कदम दूर जा गिरे।

रावण भुनभुनाता हुआ वहां से चला गया। भगवान शिव ने चोट खाए गणेशजी को सांत्वना दी। कहा—"भविष्य में तुम्हारा दर्शन किए बिना जो मेरा दर्शन-पूजन करेगा, उसे पुण्य नहीं मिलेगा।"

वह शिवलिंग और गणेश प्रतिमा गोकर्ण में आज भी स्थापित हैं। गोकर्ण कर्नाटक में समुद्र तट पर स्थित है। हरी-भरी पहाड़ियों और वनों से लदा-फदा है यह प्रदेश। ●


चीटू-नीटू
बत्ती गुल होने से पंखा भी बंद... यहां पसीना-पसीना होने से तो, पेड़ के नीचे बैठ कर छतरी का माडल बनाते हैं...
कौए ने बीट करके मेरे सारे कपड़े सत्यानाश
चलो, तालाब पर जा कर इन्हें साफ करते हैं और छांव में बैठ कर छतरी पर कपड़ा कसते हैं
उई मां, मेंढ़क... इस से तो घर क्या बुरे थे?
बच्चो, यहां-वहां भटकने से तो छत पर छांव में चले जाओ और कपड़ों का भी ख्याल रखो
अरे, बंदर मेरा फ्रॉक उठाने लगा है इसे भगाएं
हमें फ्रॉक के चक्कर में डाल कर यह तो छतरी ले उड़ा...
भैया, छतरी का माडल बनाने की बजाए, तुमने तो बंदर की माडल बना दिया



पुरस्कृत चित्र

अरुण कुमार सिंह (आयु १५ वर्ष) द्वारा श्री ए. के. सिंह, क्वा. नं. ७३५, गली-१४, सै.-४ बी, बोकारो स्टील सिटी

इनके चित्र भी पसंद आए—सीमा, निशा, नई दिल्ली; विवेक नौडियाल, टिहरी; शशि किरण, देहरादून; प्रभजोत कौर, चितरंजन

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्ट कार्ड पर लिखकर, १० जून '९१ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '९१

चित्र : आर. के. गोयल



पत्र मिला

□ अप्रैल अंक निश्चित तौर पर अब तक का सर्वश्रेष्ठ अंक रहा। 'नंदन' का रूपरंग बदला हुआ-सा लगा। नई साज-सज्जा के साथ सभी स्तम्भ प्रशंसनीय थे।

— मनोजकुमार नेगी, दूनी (हि. प्र.)

□ पत्रिका का मैं और छोटे भाई-बहन बड़ी बेसब्री से इंतजार करते हैं। घर में आ जाने पर सबसे पहले पढ़ने के लिए होड़ लग जाती है। 'नारद की सूझ', 'लपेटा पूंछ ने' तथा 'शिव आए' कहानियां मन को छू गईं। 'मंदिर मंदिर नमन हमारा' झांकी भी अच्छी थी।

— मुक्तेश्वर पाठक, मिनगा (उ. प्र.)

□ 'नंदन' के प्रत्येक अंक में 'आओ बात करें' में सम्पादक के विचार नई सीख देते हैं। नन्हें पाठकों की रचनाएं भी छापा करें। 'झोंपड़ी में राजा', 'पहचानो', 'शेर हार गया', 'फैसला' तथा 'अहसान' कहानियां उच्चकोटि की थीं।

— पुरुषोत्तम इंगले, छिंदवाड़ा

□ पछतावा कर पाप का, रखे भावना शुद्ध।नंदन ऐसी पत्रिका, ज्ञान बढ़ावे बुद्धि।

— ज्ञानप्रकाश ओस्तवाल, मंगलवाड़ (राज.)

□ 'कमंडल में जल' तथा 'लंगड़ा चोर' कहानियां मजेदार थीं। किसी महापुरुष की जीवनी अथवा ऐतिहासिक स्थल की जानकारी जरूर दिया करें। खेलों के नियम भी छापें।

— नीलू कामरा, देहरादून

□ 'नंदन बाल समाचार' के पृष्ठ बढ़ाए। साथ ही इसमें रंगीन चित्र छापा करें।

— प्रिया रघुवीर, समस्तीपुर

□ जिस प्रकार महावीरप्रसाद द्विवेदी जी के समय 'सरस्वती' पत्रिका, उस समय की सभी पत्रिकाओं की रानी थी, उसी प्रकार 'नंदन' आज की पत्रिकाओं की महारानी है।

— अविनाशकुमार दास, रांची

□ वैसे तो किसी एक रचना का नाम लेकर दूसरी रचनाओं के साथ अन्याय नहीं किया जा सकता। चित्र-कथा 'लंगड़ा चोर' बहुत अच्छी थी। मोरारजी देसाई का चित्र छापकर आपने सराहनीय कार्य किया। **— गगन कपूर, अम्बाला**

□ अप्रैल अंक की प्राचीन कथाएं सभी ने पसंद कीं। 'शनि न जाए' तथा 'शिव आए' कहानियां अनोखी थीं।

— दिनेशकुमार, कलकत्ता

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : मुकेश गुप्ता, सवाई माधोपुर; नवरतन शर्मा, बीकानेर; सीप गुप्ता, श्रीगंगानगर।



समीर सौरभ नीतू लोहित

नई पुस्तकें

आंखों में आकाश—कवि : अहद 'प्रकाश'; प्रकाशक : शिशु सुमन शिक्षा समिति, भोपाल; मूल्य : ५ रुपए।

पुस्तक में छोटी-छोटी तैंतीस कविताएं हैं। छुपन-छुपैया, सर्दी के सतरंग, बंदर फरार तो भालू बेकरार, नानी जी के दांत, फेरीवाला, नीयत बुरी तो दावत कैसी आदि कविताएं खूब मजेदार हैं। मुख पृष्ठ पर बच्चे का चित्र भी आकर्षक है। प्रूफ की गलतियां हैं।

जंगल की प्यास—लेखक : चक्रधर नलिन; प्रकाशक : ज्ञानोदय, ४१९ शाहगंज, इलाहाबाद; मूल्य : १० रुपए।

नौ कहानियों में ईमानदार रक्षक, देशभक्ति की लालिमा, राजा का न्याय और फुलिया आदि कहानियां बच्चों को पसंद आएंगी। ये सभी कहानियां सरल भाषा में लिखी गई हैं।

सबसे सुंदर फूल—लेखक : चक्रधर नलिन; प्रकाशक : मुदिता प्रकाशन, १४८ हिवेट रोड, इलाहाबाद; मूल्य : १० रुपए।

दो मित्र, सबसे सुंदर फूल और वचन की रक्षा—पुस्तक में ये तीन नाटक हैं। पहला नाटक श्रीकृष्ण और सुदामा को लेकर है। दूसरे में फूलों का आपसी वाद-विवाद है। तीसरे में महादानी कर्ण द्वारा अपने वचन की रक्षा की गई है। तीनों नाटकों की शैली सरल है। प्रयास सराहनीय है।

(१) सबसे बड़ी जीत (२) सोने का महल—लेखक : शिवकुमार गोयल; प्रकाशक : पंकज प्रकाशन, बी. १७४४, शास्त्रीनगर, दिल्ली; प्रत्येक का मूल्य : १० रुपए।

पुस्तक में छोटी-छोटी छह कहानियां हैं। 'सबसे बड़ी जीत', 'सूखी रोटी', 'घंटे बज उठे', 'दानी सेठ', कहानियां सरल ढंग से लिखी गई हैं। बच्चों को प्रेरणा भी देती हैं। चित्र आकर्षक हैं।

दूसरी पुस्तक 'सोने का महल' में भी ऐसी ही छोटी-छोटी पांच कहानियां हैं। ये पुराण कथाएं हैं। गयासुर राक्षस से 'गया' तीर्थ बनने की कहानी बड़ी रोचक है। 'सोने का महल' में रावण बड़ी चतुराई से शिवजी से लंका ही मांग लेता है। इन कहानियों को बच्चे पसंद करेंगे।

दूर संचार नई दिशायें—लेखक : डा. सी.एल. गर्ग एवं राजीव गर्ग; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य : ३० रुपए।

दूरसंचार की उपलब्धियों ने आज के विश्व को छोटा कर दिया है। किसी भी दूर देश में घटित हुई घटना का हमें टेलीफोन, टेलीप्रिंटर, टेलेक्स्ट, रेडियो, टेलीविजन, टेलीटेक्स और संचार उपग्रहों द्वारा पल भर में पता लग जाता है। दूरसंचार के इन सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर इस पुस्तक में प्रामाणिक एवं सचित्र जानकारी, सरल भाषा में दी गई है। भविष्य के संचार साधन कैसे होंगे, इस बारे में रोचक विवरण है। पुस्तक में अपने देश की संचार सुविधाओं का ज्ञान भी अलग से कराया गया है।

सैर करें दुनिया की : देश-विदेश घूमने की इच्छा सभी की होती है। दुनिया के किन देशों में सबसे अधिक पर्यटक जाते हैं। यदि क्रमवार दस देशों की सूची बनाई जाए, तो उनमें स्पेन का नम्बर पहला है। फिर आते हैं— फ्रांस, इटली, अमरीका, आस्ट्रिया, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी और स्विट्जरलैंड।

कोई घुमक्कड़ अस्सी किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से चले और चलता जाए तो— उसे सड़कों द्वारा दुनिया नापने में ३४ वर्ष १७२ दिन लगेंगे। दुनिया के जिन देशों में सड़कों का सबसे लम्बा जाल है, वे हैं— अमरीका, ब्राजील, भारत, सोवियत संघ, फ्रांस, जापान, चीन, कनाडा, आस्ट्रेलिया और जर्मनी।

बातें रंग-बिरंगी

ट्यूब लाइटः ट्यूब लाइट प्रकाश पैदा करती है। इससे निकलनेवाला प्रकाश सूरज के प्रकाश से काफी मिलता जुलता होता है। इसको वैज्ञानिक भाषा में फ्लोरोसेंट ट्यूब ' कहते हैं। ट्यूब लाइट में कांच की एक खोखली नली होती है। इसकी अंदर की दीवारों पर फ्लोरोसेंट पदार्थ की परत चढ़ा दी जाती है। नली के दोंनो सिरों पर दो फिलामेंट होते हैं। इसके अंदर की हवा निकालकर, थोड़ा-सा पारा और आर्गन गैस भर दी जाती है। जब नली के दोंनो सिरों को विद्युत से जोड़ा जाता है, तो फिलामेंट गर्म हो जाते हैं। इनसे निकलने वाले इलेक्ट्रान पारे के परमाणुओं से टकराते हुए फ्लोरोसेंट से जा टकराते हैं। इससे प्रकाश पैदा होता है। चालीस वाट की ट्यूब से निकलने वाला प्रकाश इतने ही वाट के बल्ब से निकलने वाले प्रकाश से चार गुना अधिक होता है।

दुनिया की सबसे पहली ट्यूब लाइट सन् १९३९ में न्यूयार्क विश्व मेले में प्रदर्शित की गई थी। आज कई रंगों के प्रकाश पैदा करने वाली छोटी-बड़ी ट्यूब लाइटें बाजार में मिलती हैं।

ठेला चालक से ऐतिहासिक धावक : फिनलैंड के पावो नुरमी एक ऐसे खिलाड़ी थे, जो ठेला चालक से विश्व के ऐतिहासिक धावक बने। १३ जून, सन १८९७ में एक गरीब किसान परिवार में जन्मे। नुरमी को अपने पिता के साथ खेतों में काम करना पड़ता था। १३ वर्ष की उम्र में वह रोजी-रोटी कमाने के लिए घर से चले गए। बोझ से लदे ठेले खींचने लगे। ठेला खींचते-खींचते उनकी टांगें काफी मजबूत हो गईं। एक दिन ठेला खींचते समय नुरमी को लगा, जैसे वह हवा में उड़ रहे हों। तभी से उन्हें खाली समय में दौड़ लगाने का शौक लग गया। थोड़े ही दिनों के अभ्यास से वह मध्यम दूरी की दौड़ों में राष्ट्रीय विजेता बन गए।

पावो नुरमी ने सन १९२०, १९२४ और १९२८ के ओलम्पिक खेलों में सर्वश्रेष्ठ धावक के रूप में सबसे अधिक १२ पदक प्राप्त किए। इनमें ९ स्वर्ण पदक और ३ रजत पदक थे। उन्होंने ५०००, १०००० और १५००० मीटर की दौड़ें लगाईं। अलग-अलग दूरी की दौड़ों में उन्होंने २० विश्व रिकार्ड बनाए। सन १९३५ में उन्होंने खेलों से संन्यास ले लिया।

पिन कोडः भारत में डेढ लाख से भी अधिक डाकघर हैं। इससे घर-घर चिट्ठी पहुंचती हैं। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। इन भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियां प्रयोग की जाती हैं। विभिन्न भाषाओं में पत्रों पर लिखे पतों को पढ़ने के लिए, डाक विभाग के लोगों को काफी कठिनाई होती थी। इसीलिए पिन कोड़ प्रणाली विकसित की गई है।

पिन शब्द का पूरा रूप है — 'पोस्टल इन्डैक्स नम्बर'। पिन कोड़ व्यवस्था में भारत के विभिन्न राज्यों को, आठ डाक क्षेत्रों में बांटा गया है। प्रत्येक क्षेत्र को और छोटे वर्गों में बांटा गया है। पिन कोड में छः अंक होते हैं। बाईं ओर का प्रथम अंक, डाक क्षेत्र को बताता है। इसके बाद के दूसरे और तीसरे अंक उपक्षेत्र को प्रदर्शित करते हैं। पहले तीन अंक छंटाई करने वाले जिले को बताते हैं। दाहिनी ओर के तीन अंक उस डाकघर का पता बताते हैं, जहां से पत्र पाने वाले के पास पहुंचेगा।

६,५०० रुपए की दिहाड़ी : एक जमाना वह था,जब क्रिकेट खिलाड़ी को टैस्ट मैच खेलने पर १५० रुपए मिलते थे। आजकल एक टैस्ट खेलने पर खिलाड़ी को १०,००० रुपए मिलते हैं। एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों में कुछ समय पहले तक ५,००० रुपए प्रतिदिन मिलते थे वहीं आज खिलाड़ी को ६,५०० रुपए मिलते हैं। क्रिकेट के अम्पायर को भी लगभग इतनी ही रकम मिलती है। पहले टैस्ट खिलाने वाले अम्पायर को ५,००० रुपए मिलते थे, अब १०,००० मिलते हैं। इसीलिए देश के चोटी के पुराने खिलाड़ियों ने खेल से संन्यास लेने के बाद अम्पायर बनना शुरू कर दिया है।

परी तालाब

छोटे-से गांव में श्याम रहता था। श्याम बहुत गरीब था। लेकिन दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता। वह ईश्वर से प्रार्थना करता—'हे भगवान मेरे दुःख दूर करो, जिससे मैं सब लोगों की सहायता कर सकूं।'

एक दिन श्याम अपने गांव के तालाब के किनारे बैठा था। तभी एक चमत्कार हुआ। आसमान से एक परी उतरती दिखाई दी। परी श्याम के पास ही आकर उतरी। वह उजले कपड़े पहने थी। उसके हाथ में चमकती हुई एक छड़ी भी थी। वह श्याम के पास आकर बोली—"श्याम भैया, उदास क्यों हो?" श्याम बोला—"क्या करूं, गरीबी से परेशान हूं। यदि मेरे पास पैसे होते, तो क्या न करता? बच्चों के लिए स्कूल खुलवाता, तालाब-कुएं बनवाता, बीमारों को मुफ़्त दवा देता। लेकिन अभी तो अपने ही खाने-पहनने के लाले पड़े हैं।"

श्याम की बात सुनकर, परी को बहुत दया आई। उसने अपने हाथ की छड़ी को हवा में लहराया और एक पत्थर से छुआ दिया। चमत्कार हुआ और देखते-देखते पत्थर सोने का हो गया। फिर परी बोली—"अपनी बात याद रखना। कोई गरीब कभी तुम्हारे दरवाजे से खाली हाथ न जाए।" कहकर परी अदृश्य हो गई। बहुत देर तक तो श्याम समझ नहीं सका कि एकाएक यह क्या हो गया? उसने नीचे पड़े पत्थर को उठाया। परी को मन ही मन धन्यवाद देते हुए वह गांव की ओर चल दिया। रास्ते में बाजार पड़ा। श्याम ने पत्थर वहीं बेच दिया। उसे बहुत सारे पैसे मिले। गांव पहुंचकर उसने खाने-पीने की व्यवस्था की, फिर समाजसेवा के काम में जुट गया। जो लोग पहले उससे मिलने से कतराते थे, वे भी अब उससे बातचीत करने लगे। गांव में एक पुराना तालाब था। श्याम ने उसकी मरम्मत और सफाई कराई। नाम रखा—'परी रानी का तालाब।'

—पटेल एस. जे., आडवा (गुज.)

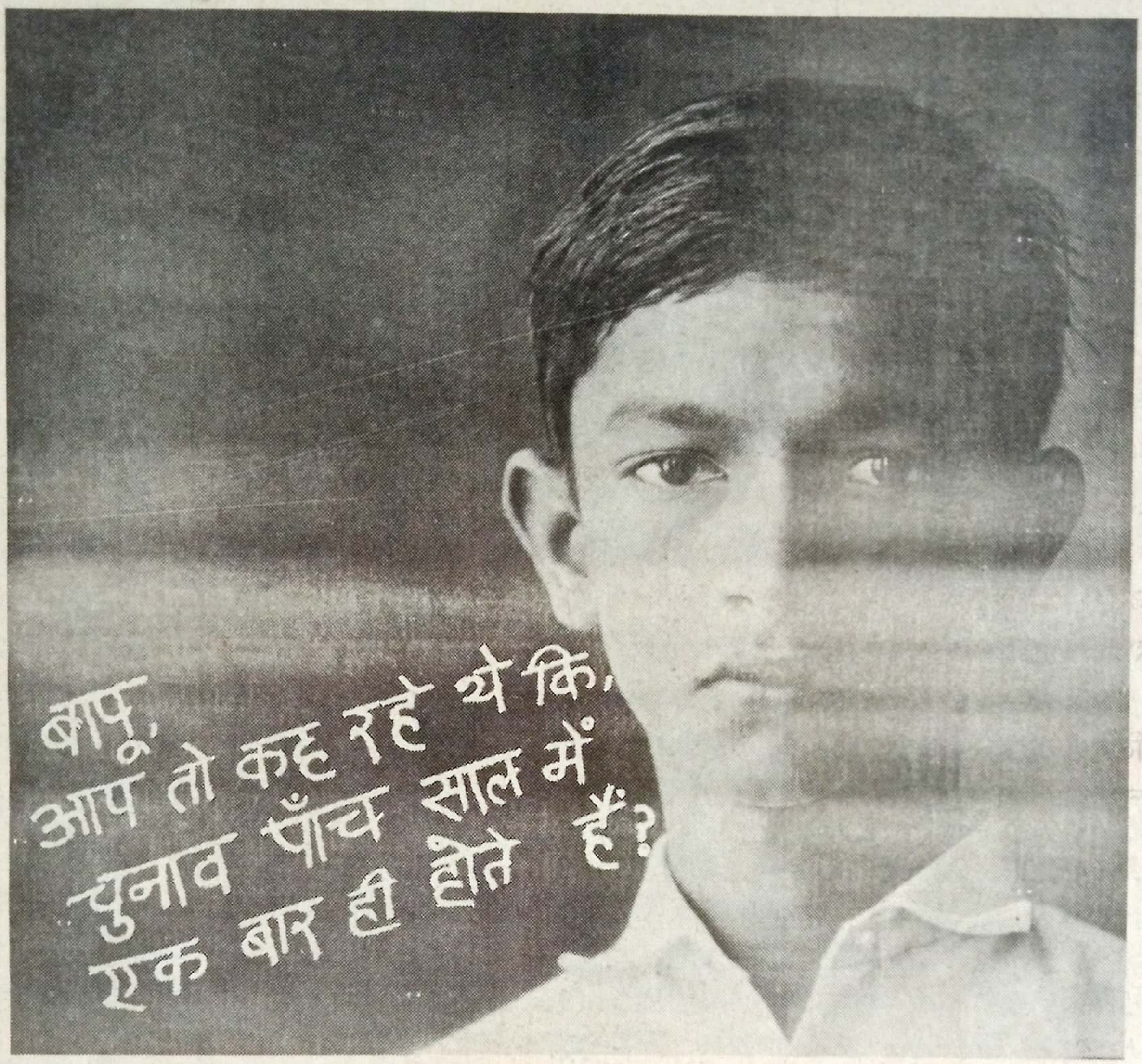
सोमू का सपना

प्राचीन काल की बात है। गांव में मधुसूदन और उसकी पत्नी देवकी रहते थे। उनका एक पुत्र था—सोमू। वह बहुत कामचोर और आलसी था। इसीलिए सोमू को कोई पसंद नहीं करता था। इसी से उसके पिता बीमार रहने लगे। शीघ्र ही वह स्वर्ग सिधार गए। अब सोमू की माता अत्यंत दुखी रहने लगी। एक दिन सोमू दुखी होकर जंगल की ओर चल पड़ा, क्योंकि उसे भी अपनी आदतों पर क्रोध आता था। परंतु वह अपनी आदतें बदल नहीं पाया। जंगल में पहुंच, वह एक वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगा। रोते-रोते उसकी आंख लग गई। आंख लगते ही सोमू ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में सोमू ने एक दिव्य परी देखी। परी ने कहा—"सोमू बेटा, मैं तुम्हारी परेशानी जानती हूं। तुम्हें परिश्रम करना अच्छा नहीं लगता न! मैं तुम्हें एक ऐसे स्थान पर ले चलती हूं, जहां तुम्हें जीवन की हर एक सुविधा प्राप्त होगी। वहां तुम्हें स्वादिष्ट भोजन भी मिलेगा।"

दिव्य परी की बात सुनते ही सोमू परी के साथ चल दिया। परंतु कुछ पल बाद ही उसे अपनी मां का ध्यान आया। वह परी से बोला कि उसकी माता को भी यहां लाएं।" परंतु परी ने कहा- "यहां केवल तुम रह सकते हो। परी की बात सुन सोमू बोला—"यदि ये सुख सुविधाएं मेरी मां को नहीं मिल सकतीं, तो ये मेरे किस काम की। आप मुझे वरदान दें कि मैं मेहनत, लगन तथा ईमानदारी से धन कमाऊं और अपनी माता की सेवा करूं।" सोमू की बात सुनते ही परी बोली—"मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। तुम हर अच्छे कार्य में सफल रहोगे।" यह कह परी अंतर्धान हो गई। तभी सोमू की आंख खुल गई। वह अपने घर की ओर प्रसन्नता से चल दिया।

—आरती, जम्मू

इनकी कहानियां भी पसंद की गई : कैलाश यादव, कलकत्ता; राजेंद्र शर्मा, बनेहड़ा (हि. प्र.); कविता कुमारी, कोडरमा (बिहार)



केवल एक स्थिर सरकार ही
जन-आदेश की पवित्रता का विश्वास
दिला सकती है।

स्थिरता को वोट दें

कांग्रेस (इ) को वोट दीजिए

Issued by The General Secretary (Incharge Publicity), All India Congress Committee (I) 24, Akbar Road, New Delhi.

MEGACORP/D/91 HIN

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. इधर पीठ किए खड़े आदमी के हाथ वाली छड़ी छोटी है।

२. उसके कोट में दाईं तरफ जेब है।

३. पियानो बजाती महिला के सामने रखे कागज पर चार पंक्तियां लिखी हैं।

४. पियानो पर रखे पौधे में एक पत्ती कम हो गई है।

५. वायलिन वाले की बो टाई का आधा हिस्सा गायब है।

६. उसके बाल घुंघराले हैं।

७. आले में रखे जार पर ढक्कन लगा है।

८. दाएं कोने में बैठे व्यक्ति की पैंट पर बनी धारी चौड़ी हो गई है।

९. ताड़ के पेड़ वाले गमले के नीचे काली धारी दिखाई दे रही है।

१०. नीचे बाएं कोने में लगे कार्ड का दायां हिस्सा कटा हुआ नहीं है।

शीर्षक बताइए : परिणाम



चित्र से मिलते-जुलते शीर्षक भेजे पाठकों ने। अप्रैल '९१ में छपे रंगीन चित्र के लिए ये शीर्षक चुने गए—

मंद-मंद मैं मुसकाऊं, कुट-कुट करता खाऊं।
— ओमप्रकाश रोदवाल, स्टेशन रोड, यादव कालोनी, पो. शामगढ़, जि. मंदसौर (म. प्र.)।

मुन्ना राजा बिस्कुट खाए, देख मुंह में पानी आए।
— ब्रजेशकुमार भट्ट, ग्रा. आसनबनी, नवराष्ट्र पुस्तकालय के सामने, पो. यादवपुर, जि. धनबाद (बि.)।

जैसी आंखें प्यारी, वैसी मुसकान तुम्हारी।
— सुखदेव, ग्रा. रामपुरा ढिल्लो, सिरसा (हरियाणा)।

मुझसे बिस्कुट आधा ले लो, मेरे संग मस्ती से खेलो।
— अंशुमान मिश्रा, नया पल्ली, भुवनेश्वर (उड़ीसा)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए— सबिना मिश्रा, काठमांडू; श्वेतासिंह, दिल्ली; कृष्णप्रकाश जोशी, सरहिंद (पंजाब)।

नंदन ज्ञान-पहेली : २६८

परिणाम



इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। बीस सर्वशुद्ध आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : बीस : प्रत्येक को पचास रुपए

१. ऋचा गुप्ता, सहारनपुर; २. मोहितकुमार जाखोदिया, राउरकेला; ३. सोनूकुमारी अग्रवाल, खेरली (अलवर); ४. अविनाशकुमार, नालंदा; ५. विकासचंद्र खरे, कानपुर; ६. ममताकुमारी शर्मा, बैतूल; ७. अनुभव शंकर, गाजियाबाद; ८. मोनू भार्गव, सोनीपत; ९. नन्हेकुमार, मुजफ्फरपुर; १०. पिंकी गुप्ता, गोरखपुर; ११. प्रीतेशकुमार गुप्ता, लालगंज; १२. नीलरतन सिंह, कलकत्ता; १३. आलोक अग्रवाल, फीरोजाबाद; १४. गोविंदसिंह सैनी, गुड़गांव; १५. कुमारी ज्योति मेहता, छपरा; १६. रंजीतकुमार, काशीपुर (समस्तीपुर); १७. विनीता शर्मा, हरिद्वार; १८. सुबोधकुमार द्विवेदी, मुजफ्फरपुर; १९. जयसिंह, मनकापुर (गोंडा); २०. मनविंदर कौर, दिल्ली।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
मैगी क्लब से
मुफ़्त उपहार पाओ,
मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
'मैगी ऑप्रेशन वाइल्डलाइफ गेम'
द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
KING OF THE JUNGLE
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम'
में जंगल की सैर करो
आओ बच्चो. मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह MAGGI मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के सामने
के हिस्से से काटकर हमें भेज दो. और, साथ में अपना नाम,
पता और अपनी पसंद का उपहार भी लिख भेजना. हां, अगर
तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता संख्या भी ज़रूर
लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो अब
मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड
भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार के साथ मैगी क्लब
सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
TO LET
JADOO JUNGLE
'मैगी जादू जंगल'
से अपना जंगल बनाओ.
Archie
आर्ची कॉमिक
'मैगी बर्डहाउस'
बनाओ
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
FREE
मुफ़्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
क्विज़ पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे तो उनके साथ हम तुम्हें
मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
क्विज़ पुस्तिका भेजेंगे. उसमें
तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों के
बारे में दिलचस्प और
आश्चर्यजनक जानकारी.
हर गेम में पूरा विवरण
देख लेना.
HTA 7105 HIN
MAGGI
2-minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
Name
Membership no.
एक और मौका! अगर तुमने 'लॉज ऑफ़ द जंगल गेम' अभी तक नहीं लिया है तो अब ले लो!

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४



